हिन्दी

अर्धमागधी रीडर

अर्थात्

जैन प्राकृत प्रवेशिका

(प्रथम भाग)



लेखक

बनारसीदास जैन एम० ए०

ओरियंटल कालेज, लाहौर.

(सम्पादक तथा अनुवादक, "स्वप्नवासवदत्तम्")

मिशन प्रेस अलाहाबाद में छपी

वीर सं० २४४७ विक्रम सं० १९७७

प्रथमावृत्ति ५०० प्रति] [मू० रु० १)

हिन्दी अर्धमागधी रीडर के प्रथम भाग का

विषयानुक्रम

—:o:—

मिलने का पता:—

खूब चन्द जैन, संगूर (जींद स्टेट)

Khub Chand Jain, Sangrur.



नियगुरूणं आयरियवराणं सिरि

आल्फ्रेड् कूपर् वूल्नर्

ALFRED COOPER WOOLNER

नामधिज्जाणं लोपुरत्थ-पाईणमहाविज्जालयउज्झायाणं
सव्वाइं हियकिच्चाइं सरित्ता तेसिं करकमलेसु
ससिणेहं समप्पियं पोत्थयं एयं

विणीएणं सीसेणं
बनारसीदासेणं

प्रस्तावना



अप्रैल सन् १९१७ में स्था० श्वे० जैन कानफ्रेन्स लाहौर में भरी
। उस में श्रीमन् ए० सी० वूल्नर भी पधारे थे। उन्हों ने अपने
षण में बतलाया था कि योरुप में जैन साहित्य का प्रचार बौद्ध
ाहित्य के प्रचार की अपेक्षा इस लिये कम है कि जैन साहित्य प्रायः
र्धमागधी प्राकृत में है और अर्धमागधी प्राकृत सीखने के लिये कोई
याकरण या रीडर मौजूद नहीं जैसा कि बौद्ध साहित्य पढ़ने के
लये पाली भाषा के कई व्याकरण और रीडरें मौजूद हैं।

उस समय मैं पंजाब यूनिवर्सिटी लाइब्रेरी के लिये बहुत से जैन
न्थ ख़रीद कर चुका था और बाक़ी ख़रीद कर रहा था, इस लिये
ैं ने उसी साल अगस्त मास में श्रीमान् वूल्नर साहिब से प्रार्थना
ी कि अपनी लाइब्रेरी में साधन काफ़ी हो गये हैं इस लिये आप
क "अर्धमागधी रीडर" लिख कर जैन जाति तथा अन्य विद्या
ेमियों की इच्छा को पूर्ण कर दीजिये ! इस पर अकतूबर में साहिब
बहादुर ने मुझे फरमाया कि "तुम अर्धमागधी रीडर लिखना आरम्भ
कर दो। हम इसको शुद्ध करके यूनिवर्सिटी की ओर से छपवा
देंगे ॥ "

साहिब बहादुर की आज्ञानुसार मैं ने रीडर लिख कर अकतूबर
सन् १९१९ में उनके सामने पेश की। उन्हों ने उसे स्वीकार कर लिया
और वह यूनिवर्सिटी की ओर से लाहौर में छपने लगी। परन्तु लाहौर
में मूलपाठ के केवल ३२ पृष्ठ छपे थे कि छापेखाने की गड़बड़ होने
से काम बन्द करना पड़ा। वह ३२ पृष्ठ साहिब बहादुर की आज्ञा
लेकर इस पुस्तक में लगाए गये हैं और यूनिवर्सिटी की रीडर के
लिये फिर से छप रहे हैं॥

पिछले चौमासे में उपाध्याय श्री आत्माराम जी के पास दिहली
से एक पत्र आया कि जैन सूत्र पढ़ने के लिये व्याकरण का कौनसा

पुस्तक पढ़ना चाहिये, महाराज जी ने मेरी सम्मति पूछी। मैंने कहा कि सरल से जो जैन प्राकृत सीखने के लिये संस्कृत के अतिरिक्त दूसरा कोई साधन नहीं। संस्कृत सीख कर आचार्य श्रीहेमचन्द्र का प्राकृत व्याकरण पढ़ कर टीका आदि की सहायता से जैन प्राकृत अर्थात् अर्धमागधी सीखी जासकती है। तब महाराज जी ने फरमाया कि यदि यहां भी अर्धमागधी रीडर के ढंग पर हिन्दी अर्धमागधी रीडर लिखा जाए तो अच्छा है चुनांचि उन की प्रेरणा से यह रीडर तय्यार हो गई है।

मूल पाठ लिखने के लिये मैं ने उपाध्याय श्री आत्मा राम जी से हस्तलिखित ग्रन्थ लिये थे। इस से मैं उनका अतीव अनुग्रह मानता हूँ। यह ग्रन्थ टब्बे (गुजराती भाषान्तर) वाले थे और उनके पाठ पूर्णतया शुद्ध न थे॥

चूंकि यह मेरा पहिला प्रयत्न है और चूंकि इस पुस्तक का बहुत सा हिस्सा मुझसे एक हज़ार मील परे अर्थात् अलाहाबाद में छपा है इस लिये संभव है कि इस में मेरी अपनी अशुद्धियों के अतिरिक्त बहुत सी छापे की अशुद्धियां रह गई होंगी। अतः पाठक वृन्द से मेरी सविनय प्रार्थना है:—

यह निज मति अनुसार, रच्यो सार के पारखी।
बुध जन करें विचार, शोधें सगरी भूल मम॥

ओरियंटल कालेज,
लाहौर
२६. ११. २०

बनारसी दास जैन

अर्धमागधी रीडर

हिन्दी व्याकरण

[यह बात स्वतः सिद्ध है कि एक भाषा के व्याकरण को जानने वाला मनुष्य अन्य भाषाओं को बड़ी आसानी से सीख लेता है। इसलिये अर्धमागधी भाषा का व्याकरण लिखने से पहिले हिन्दी भाषा का संक्षिप्त व्याकरण दिया जाता है ताकि वह पाठक जन जिन्होंने कोई व्याकरण न पढ़ा हो वह इसे स्वयं विचार लेवें। इससे उनको अर्धमागधी का व्याकरण समझने में कोई मुश्किल न पड़ेगी]

१ भाषा—जिस उपाय के द्वारा प्राणी अपने मन का भाव एक दूसरे पर प्रकट करते हैं उसे भाषा कहते हैं; जैसे- बोलना, लिखना, इशारे करना, इत्यादि ॥

२ भाषा दो प्रकार की होती है १ व्यक्त और २ अव्यक्त। व्यक्त भाषा केवल मनुष्यों की होती है और वह भी उस समय जब वह अपने मन का आशय सार्थक शब्द बोल कर या लिख कर प्रकट करते हैं। अव्यक्त भाषा पशु पक्षियों की है तथा मनुष्यों की है जब वह आंख या हाथ के इशारे से काम लेते हैं।

व्यक्त भाषा	अव्यक्त (मनुष्यों की)	अव्यक्त (पशुओं की)
"मुझे प्यास लगी है पानी पिलाओ" ऐसा बोलना या लिखना।	हाथों का पुट बना कर मुख के पास ला कर इशारा करना।	गाय बैल आदि का मांय मांय शब्द करना।

ऊपर के कोष्ठक में एक ही आशय तीन उपायों से प्रकट किया गया है॥ हमारा प्रयोजन यहां पर व्यक्त भाषा से है॥

३ हिन्दी—यूं तो भिन्न २ समय तथा देशों की भाषाएं हिन्दी के नाम से पुकारी जाती हैं जैसे चन्द बरदाई (चन्द कवि) कृत पृथ्वीराज रासो की हिन्दी, तुलसीदासकृत रामायण की हिन्दी, बिहारीलाल कृत बिहारी सतसई की हिन्दी इत्यादि। परन्तु मेरा अभिप्राय हिन्दी कहने से उस भाषा से है जो सरस्वती, भारतमित्र आदि पत्रों तथा चन्द्रकान्ता आदि उपन्यासों में प्रयुक्त होती है॥

४ व्याकरण उस विद्या का नाम है जिस से किसी भाषा के शुद्ध बोलने तथा लिखने का ज्ञान प्राप्त हो। हिन्दी व्याकरण के यह तीन अङ्ग हैं—१ वर्णमाला, २ शब्द प्रकरण, ३ वाक्य प्रकरण।

वर्णमाला

५ वर्णमाला व्याकरण का वह अङ्ग है जिस से वर्णों अर्थात अक्षरों के उत्पत्ति स्थान आदि का ज्ञान हो।

हिन्दी वर्णमाला के अक्षर

स्वर—अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ए ऐ ओ औ।

व्यञ्जन—क ख ग घ ङ। च छ ज झ ञ। ट ठ ड ढ ण।

त थ द ध न । प फ ब भ म । य र ल व । श ष स ह ।
ं (अनुस्वार) : (विसर्ग) ।

६. लिखने के लिये जो अक्षरों के सङ्केत रक्खे जाते हैं उन्हें लिपि कहते हैं। इस पुस्तक की लिपि देवनागरी या नागरी कहलाती है।

७. स्वर दो प्रकार के होते हैं, अननुनासिक और अनुनासिक
अननुनासिक स्वर केवल मुख द्वारा बोले आते हैं; जैसे आज में 'आ','भोग' में ओ (ो); 'देवी' में ए (े) और ई (ी)
अनुनासिक स्वर मुख और नासिका द्वारा बोले जाते हैं और लिखनेमें उनके ऊपर प्रायः चन्द्रबिन्दु का चिह्न (ँ) दे देते हैं जैसे आँच में आँ, नींद में ईं (ीं) इत्यादि ॥

८. काल की अपेक्षा भी स्वरों के दो भेद हैं, १ ह्रस्व २ दीर्घ।
ह्रस्व स्वर बोलने में थोड़ा समय लगता है—जैसे अ इ उ, अँ इँ उँ ॥
दीर्घ स्वर बोलने में अधिक समय लगता है; जैसे—आ ई ऊ ए ऐ ओ औ, आँ ईं ऊँ एँ ऐं ओं औं ॥
ह्रस्व स्वरों को लघु या छोटे भी कहते हैं। दीर्घ स्वरों को गुरु, लम्बे, या बड़े भी कहते हैं ॥

९. व्यञ्जनों के भी अनेक भेद हैं जैसेः—
क ख ग घ ङ ... कवर्गीय या कण्ठ्य कहलाते हैं
च छ ज झ ञ ... चवर्गीय या तालव्य कहलाते हैं
ट ठ ड ढ ण ... टवर्गीय या मूर्धन्य कहलाते हैं
त थ द ध न ... तवर्गीय या दन्त्य कहलाते हैं
प फ ब भ म ... पवर्गीय या ओष्ठ्य कहलाते हैं
य र ल व ... अन्तस्थ कहलाते हैं
श ष स ह (:)... ऊष्मन् कहलाते हैं
ङ ञ ण न म (ं) अनुनासिक या नासिक्य कहलाते हैं, इत्यादि।

१० स्वर के व्यवधान से रहित दो या दो से अधिक व्यञ्जनों का

समूह संयुक्त अक्षर कहलाता है जैसे क्ष, त्र, स्स, स्क, ष्प
इत्यादि।

११ व्यञ्जन की आधी मात्रा, लघु स्वर की एक और गुरु स्वर की दो मात्राएं गिनी जाती हैं। यदि ह्रस्व स्वर के पीछे अनुस्वार, विसर्ग या कोई संयुक्त अक्षर हो तो वह गुरु गिना जाता है॥ छन्द शास्त्र में व्यञ्जन की मात्राएं गिनने में नहीं आतीं, केवल स्वरों की मात्राएं गिनते हैं. जैसे दोहे में २४ मात्राएं होती हैं॥

२ २ २ ११ २ १ २ २ १ १ २ १ १ २ १ =२४
माला तो कर में फिरै, जीभ फिरै मुख माँहि।
१ १ २ २ २ १ १ १ २ २ २ १ १ १ १ २ १ =२४
मनवा तो चौदिश फिरै, ऐसो सुमरन नाहि॥

कबीर

शब्द प्रकरण

१२ शब्द प्रकरण में यह वर्णन होता है कि लिङ्ग वचन और विभक्ति के कारण शब्दों में क्या २ परिवर्तन होते हैं तथा एक प्रकार के शब्द से दूसरे प्रकार का शब्द किस तरह बनाया जाता है॥

हिन्दी के शब्द पांच हिस्सों में विभक्त हैं—१ संज्ञा, २ विशेषण, ३ सर्वनाम, ४ क्रिया ५ अव्यय।

१३ संज्ञा।—जो किसी जीव, वस्तु या स्थान का नाम हो जैसे रामदास, गाय, घोड़ा, चौकी, रजोहरण आदि

१४ गुण तथा संख्या वाची शब्द विशेषण कहलाते हैं; जैसे काला नीला, शीत, उष्ण, पांच, सात, आदि।

१५ जो शब्द किसी संज्ञा के बदले रक्खा जाता है उसे सर्वनाम कहते हैं; जैसे रामदास यहां आया था वह (अर्थात् रामदास) किताब लेगया। यह मेरी चौकी है इस (अर्थात् चौकी) पर बैठो॥

१६ जो शब्द किसी काम के करने या होने को बतलावे उसे **क्रिया** कहते हैं; जैसे जाता है, लिखता था, पियेगा।

१७ इनके अतिरिक्त अन्य सब शब्द अव्यय कहलाते हैं; जैसे अब, जब, आज, यहां, फिर, से तक।

१८ एक व्यक्ति वाची शब्द को एकवचन कहते हैं; जैसे घोड़ा, प्याला, स्त्री, लड़की ॥ एक से अधिक व्यक्तियों की संख्या बतलाने वाले शब्द **बहुवचन** कहलाते हैं; जैसे घोड़े, प्याले, स्त्रियां, लड़कियां ॥

१६ पुरुष या नर वाची शब्द **पुल्लिङ्ग** कहलाते हैं, जैसे घोड़ा, लड़का, प्याला, मनुष्य ॥ स्त्री या नारी वाची शब्द **स्त्रीलिङ्ग** कहलाते हैं; जैसे घोड़ी, लड़की, प्याली, स्त्री ॥

२० एक वाक्य में किसी शब्द का क्रिया के साथ अथवा अन्य शब्द के साथ जो सम्बन्ध होता है उसे उस शब्द का **कारक** कहते हैं। हिन्दी में आठ कारक होते हैं; यथा— कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, सम्बन्ध, अधिकरण, सम्बोधन ॥

२१ क्रिया के करने वाले को **कर्ता** कहते हैं; जैसे राम जाता है, लड़की सोती है। यहां राम, लड़की कर्ता हैं ॥

२२ क्रिया के फल को **कर्म** कहते हैं; जैसे राम पुस्तक पढ़ता है, सीता पानी पीती है। यहां पुस्तक और पानी कर्म हैं ॥

२३ जिस के द्वारा क्रिया की जाती है उसे **करण** कहते हैं; जैसे राम ने चाकू से कलम बनाई। वह पिनसल से लिखता है। यहां क्रिया के साधन चाकू और पिनसल करण हैं ॥

२४ जिसके लिये क्रिया की जाती है उसे **सम्प्रदान** कहते हैं; जैसे राम के लिए भोजन बनाओ। मुझे पुस्तक दे दो। यहां राम और मुझे सम्प्रदान हैं ॥

२५ जिस स्थान या हेतु से क्रिया प्रसरती है उसे **अपादान** कहते हैं, जैसे कूप से जल निकलता है। वृक्ष से पत्ते गिरते हैं। यहां कूप और वृक्ष अपादान हैं।

२६ सम्बन्ध कारक का क्रिया के साथ सम्बन्ध नहीं होता किन्तु दो संज्ञाओं में स्वामित्वादि सम्बन्ध को द्योतन करता है; जैसे राजा का नौकर, राम की पुस्तक। यहां राजा का नौकर के साथ और राम का पुस्तक के साथ स्वामित्व सम्बन्ध है। राजा और राम स्वामी कहे जाते हैं और सम्बन्ध कारक में लिखे गए हैं। नौकर और पुस्तक उन के धन कहलाते हैं॥

२७ जहां पर क्रिया की जाती है उसे **अधिकरण** कहते हैं; जैसे मैं घर में सोता हूं, पुस्तक संदूक में रख दो। यहां घर और संदूक अधिकरण हैं॥

२८ दूर से पुकारने या सावधान करने को **सम्बोधन** कहते हैं; जैसे हे राम! इधर आओ। हे बालको! अपना काम करो। यहां राम और बालको सम्बोधन हैं।

२९ हिन्दी में कारकों का बोध कराने के लिये शब्द के साथ कारकाव्यय लगाए जाते हैं। भिन्न २ कारकों के लिये भिन्न २ अव्यय लगते हैं॥

कारक	कारकाव्यय
कर्ता	०, ने
कर्म	०, को
करण	से, द्वारा, करके
सम्प्रदान	को, के लिये-निमित्त, वास्ते
अपादान	से, में से
सम्बन्ध	का, के, की
अधिकरण	पर, में, बीच
सम्बोधन	हे, अरे, ओ

३० सम्बोधन में शब्द के पहिले, और अन्य कारकों में शब्द के पीछे कारकाव्यय लगते हैं॥

कारकों को विभक्तियां भी कहते हैं। कर्ता को प्रथमा, कर्म को द्वितीया करण को तृतीया, सम्प्रदान को चतुर्थी, अपादान को पञ्चमी, सम्बन्ध को षष्ठी, अधिकरण को सप्तमी विभक्ति कहते हैं। कभी सम्बोधन को अष्टमी विभक्ति भी कह देते हैं॥

३१ कारकों का ज्ञान अर्धमागधी व्याकरण समझने के लिये बड़ा उपयोगी है, इस लिये इसका एक और उदाहरण दिया जाता है:—इन्द्रचन्द्र ने रामस्वरूप के सन्दूक में से बच्चे के लिये टोपी निकाली॥ इस वाक्य में निकाली क्रिया है। इस क्रिया का करने वाला इन्द्रचन्द्र है, इस लिये इन्द्रचन्द्र कर्ता है। 'निकाली' क्रिया का फल टोपी पर पड़ता है इस लिये 'टोपी' कर्म है। बच्चे के लिये यह क्रिया की गई इसलिये 'बच्चा' सम्प्रदान है। सन्दूक में से यह क्रिया प्रसरी इस लिये 'सन्दूक' अपादान है। रामस्वरूप का क्रिया के साथ कुछ सम्बन्ध नहीं किन्तु सन्दूक के साथ स्वामित्व सम्बन्ध है इस लिये रामस्वरूप सम्बन्धकारक में लिखा गया और सन्दूक उसका धन है।

३२ बिना कारकाव्यय लगाए वाक्य का अर्थ निश्चित नहीं होता; जैसे मोहन सोहन किताब खरीदी। अब इस वाक्य का अर्थ भिन्न २ कारकाव्यय लगाने से भिन्न २ हो जावेगा; जैसे॥

मोहन ने सोहन से किताब खरीदी
मोहन ने सोहन के लिये किताब खरीदी
मोहन से सोहन ने किताब खरीदी
मोहन के लिये सोहन ने किताब खरीदी
हे मोहन! सोहन ने किताब खरीदी, इत्यादि इत्यादि।

अभ्यास

निम्न लिखित वाक्यों के शब्दों के कारक बतलाओ:—

रामचन्द्र[1] ने रावण[2] को मारा। आकाश[3] में तारे[4] चमकते

उत्तर १ कर्ता २ कर्म ३ अधिकरण ४ कर्ता।

हैं। योधा[५] तीरों[६] से शत्रुओं[७] को मारते हैं। साधुओं[८] को दान[९] देने[१०] से पुण्य[११] होता है। यह[१२] मनुष्य[१३] घोड़े[१४] पर से गिर पड़ा। बालक[१५] चोर[१६] से डर गया। जयदेव[१७] ने धनदत्त[१८] की पुस्तक[१९] चुराली। यह[२०] लाहौर[२१] से आया है। मकड़ी[२२] के जाले[२३] में भिड़[२४] फंस गई। दवात[२५] में स्याही[२६] डाल दो। ब्राह्मण[२७] को अन्न[२८] दो। झरने[२९] से जल[३०] निकल रहा है। शेर[३१] के साथ मत खेल।

विशेषण।

१३ संज्ञाओं की बाबत तो केवल पूर्वोक्त बातें ही जानना काफी होगा॥ अब विशेषणों को लेते हैं। विशेषण तीन प्रकार के होते हैं—१ गुण वाची, २ संख्या वाची, ३ क्रमवाची॥

गुण वाची जैसे - काला, नीला, तीक्ष्ण, खट्टा, मीठा, शीतल, गरम इत्यादि।

संख्यावाची जैसे—चार, पांच, दस, बीस इत्यादि।

क्रमवाची जैसे—पहिला, दूसरा तीसरी इत्यादि।

१४ विशेषण प्रायः करके संज्ञाओं के साथ प्रयुक्त होते हैं और उस समय उनके पीछे कारकाव्यय नहीं जोड़े जाते जैसे कि नीचे के उदाहरणों से प्रतीत होगा—वह इस छोटे नगर में रहता है। यह पांच आदमियों का घर है। पहिले साधु को दान देना चाहिए। यहां पर छोटा, पांच और पहिला

---

५ कर्ता ६ करण ७ कर्म ८ सम्प्रदान। ९ कर्म १० अपादान ११ कर्ता १२ कर्ता १३ कर्ता १४ पंचमी १५ प्रथमा १६ पंचमी १७ प्रथमा १८ षष्ठी १९ द्वितीया २० प्रथमा २१ पंचमी २२ षष्ठी २३ सप्तमी २४ प्रथमा २५ सप्तमी २६ द्वितीया २७ चतुर्थी २८ द्वितीया २९ पंचमी ३० प्रथमा ३१ तृतीया॥

शब्द क्रम से अधिकरण, सम्बन्ध और सम्प्रदान कारक द्योतन करते हैं परन्तु अपनी अपनी संज्ञाओं के साथ प्रयुक्त होने से इन के पीछे कारकाव्यय नहीं लगे। किन्तु जब यह संज्ञाओं के विना प्रयुक्त हों तब इन के पीछे भी कारकाव्यय लगते हैं जैसे कोठे में रहता है। पांचों का घर है। पांचले को दान देना चाहिये ॥

सर्वनाम

३५ सर्वनाम अर्थात् वह शब्द जो दूसरे शब्दों के बदले में बोले जाते हैं, तीन प्रकार के होते हैं।

३६ वह सर्वनाम जिन को बोलने वाला अपने लिये प्रयुक्त करता है उत्तम पुरुष के कहलाते हैं, जैसे – मैं, मुझको, मेरा इत्यादि॥

३७ जिस के साथ बात कर रहे हों उसके लिये जो सर्वनाम आते हैं वह मध्यम पुरुष के कहलाते हैं: जैसे—तू, तुझे, तेरा इत्यादि॥

३८ जो शब्द ऐसे मनुष्य या वस्तु के लिये आवें जो बात करते समय वक्ता के सामने विद्यमान न हो या जिस से वक्ता सम्बोधन करके बात न करे, प्रथम पुरुष के कहलाते हैं: जैसे— वह, उसे, उसका इत्यादि ॥

३९ उत्तम पुरुष के सर्वनाम की विभक्तियों या कारकों के रूप—

	एकवचन	बहुवचन
१प्रथमा	मैं, मैंने	हम, हमने
२ द्वितीया	मुझे, मुझको	हमें, हमको
३ तृतीया	मुझसे, मेरे द्वारा	हमसे, हमारे द्वारा
४ चतुर्थी	मुझे, मुझको, मेरे लिये	हमें, हमको, हमारे लिये
५पञ्चमी	मुझसे	हमसे

६ षष्ठी	मेरा, मेरे, मेरी	हमारा, हमारे, हमारी
७ सप्तमी	मुझपर,-में; मुझमें	हमपर,-में, हममें,-पर

इन की सम्बोधन विभक्ति नहीं बनती ॥

४० मध्यम पुरुष के सर्वनाम की विभक्तियां:—

	एकवचन	बहुवचन
१ प्रथमा	तू, तूने	तुम, तुमने
२ द्वितीया	तुझे, तुझको	तुम्हें, तुमको
३ तृतीया	तुझसे, तेरे द्वारा	तुमसे, तुम्हारे द्वारा
४ चतुर्थी	तुझे, तुझको, तेरे लिये	तुम्हें, तुमको, तुम्हारे लि
५ पञ्चमी	तुझसे	तुमसे
६ षष्ठी	तेरा, तेरे, तेरी	तुम्हारा, तुम्हारे, तुम्हारी
७ सप्तमी	तुझमें,-पर,-तेरे ऊपर	तुममें,-पर,-तुम्हारे ऊपर

४१ प्रथम पुरुष

	एकवचन	बहुवचन
१ प्रथमा	यह, इसने; वह, उसने	यह, इन्होंने; वह, उन्होंने
२ द्वितीया	यह, इसे, इसको, वह, उसे, उसको	यह, इन्हें, इन को; वह उन्हें, उनक
३ तृतीया	इससे, उससे,—के द्वारा	इनसे, उनसे,—के द्वारा
४ चतुर्थी	इसे, उसे,—को, ...	इन्हें, उन्हें, इन उन—को
५ पञ्चमी	इससे, उससे	इनसे, उनसे
६ षष्ठी	इसका,-के,-की, उसका	इनका,-के,-की, उन--
७ सप्तमी	इस पर ...; उस पर...	इनपर ...; उनपर,...

४२ इनके अतिरिक्त और भी सर्वनाम होते हैं, जैसे—कौन जो, कोई

	एक व०	बहु व०
१ प्र०	कौन, किसने	कौन, किन्हों ने
२ द्वि०	कौन, किसे, किस को	कौन, किन्हें, किन क

३ तृ०	किस से, किस के द्वारा	किन से, किन के द्वारा
४ च०	किसे, किस को, किस के लिये	किन्हें, किन को, किन के लिये
५ पं०	किस से	किन से
६ ष०	किस का,-के,-की	किनका,-के,-की
७ स०	किस पर,-में ...	किन पर,-में ...

	एक व०	बहु व०
१ प्र०	जो, जिस ने	जो, जिन्होंने
२ द्वि०	जो, जिसे, जिसको	जो, जिन्हें, जिनको

शेष "कौन" के रूपों की तरह।

	एक व०	बहु व०
१ प्र०	कोई, किसी ने	कोई
२ द्वि०	कोई, किसी को	कोई
३ तृ०	किसीसे .	...
४ च०	किसी के लिये .	...

इत्यादि

कोई शब्द प्रायः एकवचन में ही प्रयुक्त होता है॥

क्रिया।

४३ जो शब्द किसी काम के करने या होने का बोध कराए उसे क्रिया कहते हैं; जैसे— वह जाता है, राम ने पानी पिया।

४४ क्रियाएं धातुओं से बनती हैं। जाता है— जा धातु से बना, पिया-पी धातु से, इसी प्रकार खा, दे, ले, चल, फिर, पढ़ सब धातु हैं। अर्थ की अपेक्षा धातु दो प्रकार के होते हैं—अकर्मक और सकर्मक।

४५ अकर्मक वह धातु हैं जिन की क्रिया का फल कर्ता को छोड़

चर अन्य शब्द में नहीं जाता. जैसे – राम सोता है, सीता दौड़ती है। यहां सोने और दौड़ने की क्रियाओं का फल उनके कर्ता 'राम और सीता' को छोड़ अन्य कहीं नहीं जाता इस लिये सो और दौड़ धातु अकर्मक हैं।

४६ सकर्मक वह धातु हैं जिन की क्रिया का फल कर्ता को छोड़ अन्य वस्तु में चला जावे; जैसे - राम ने पानी पिया, सीता ने किताब पढ़ी। यहां पर पीने और पढ़ने की क्रियाओं के फल 'पानी' और 'किताब' में चले गए, इस लिये पी और पढ़ धातु सकर्मक हैं॥

४७ काल तीन होते हैं—१ भूत (बीता हुआ), २ वर्तमान (बीतता हुआ), ३ भविष्यत् (आने वाला)।

४८ जिस क्रिया से किसी काम का भूत काल में होना सिद्ध हो उसे भूत काल की क्रिया कहते हैं; यथा—महावीर स्वामी ने श्रेणिक राजा को उपदेश दिया। राम ने रावण को मारा। मैं ने ग्रन्थ पढ़ा।

४६ जिस क्रिया से किसी काम का वर्तमान काल में होना सिद्ध हो उसे वर्तमान की क्रिया कहते हैं; यथा—साधु तपस्या करता है। स्त्री भोजन बनाती है। लोग नगर को जाते हैं। युद्ध हो रहा है।

५० जिस क्रिया से किसी काम का भविष्यत् काल में होना सिद्ध हो उसे भविष्यत् काल की क्रिया कहते हैं; यथा—रावण तीर्थंकर होगा। वह नगर को जावेंगे। लड़ाई बन्द हो जावेगी।

५१ इन ही तीन कालों के और भेद होने से क्रियाओं के भी और भेद हो सके हैं, परन्तु उनके लिखने की कुछ आवश्यकता नहीं।

२ जो क्रिया किसी काम के करने की आज्ञा को प्रकट करे उसे **आज्ञा कारी** क्रिया कहते हैं; यथा—हे राम! तुम घर **आओ**। अरे लछमन! मेरी किताब **लादो**। मैं रोटी **खालूं**। वह यहां **बैठे**।

१३ क्रियाओं का प्रयोग दो प्रकार का होता है—१ कर्तृवाच्य और २ कर्मवाच्य।

१४ जब क्रिया का कर्ता प्रथमा विभक्ति में और कर्म द्वितीया विभक्ति में लिखा जाता है तो वह प्रयोग **कर्तृ वाच्य** कहलाता है; जैसे—साधु शास्त्र पढ़ता है। राम भोजन करता है। राजा ने पानी पिया। यहां पर **साधु, राम,** और **राजा** कर्ता हैं और प्रथमा विभक्ति में लिखे गये। **शास्त्र, भोजन, पानी** कर्म हैं और द्वितीया विभक्ति में लिखे गये॥

१५ जब क्रिया का कर्ता तृतीया विभक्ति में और कर्म प्रथमा विभक्ति में लिखा जावे तो वह प्रयोग **कर्म वाच्य** कहलाता है; जैसे—साधु के द्वारा शास्त्र पढ़ा जाता है। राम के द्वारा भोजन किया जाता है। राजा से पानी पिया गया। यहां पर **साधु, राम, राजा** क्रियाओं के करने वाले हैं परन्तु तृतीया विभक्ति में आए हैं। इसी तरह **शास्त्र, भोजन, पानी** कर्म हैं परन्तु प्रथमा विभक्ति में आए हैं।

२. निम्नलिखित क्रियाएं किस प्रकार की हैं?

१ वायु चलती है। २ आग जलती है। ३ उसका घर जलगया। ४ मेंह बरसेगा। ५ बच्चे को मत जगाओ। ६ राम अपनी किताब पढ़ता है।

---

२ उत्तर॥ अक० = अकर्मक, सक० = सकर्मक, वर्त० = वर्तमान, भू० = भूत, भवि० = भविष्यत्, आ = आज्ञाकारी॥ १ अक० वर्त० २ अक० वर्त० ३ अक० भू० ४ अक० भवि० ५ सक० आ० ६ सक० वर्त

७ तू रोटी कब खाएगा? ८ रेलगाड़ी बहुत तेज़ दौड़ती है। ९ उसने खीर खाई। १० वह कपड़ा ले जावे। ११ रावण तीर्थङ्कर बनेगा। १२ रामचन्द्र ने चिट्ठी लिखी। १३ साधु अपने पास धन न रक्खें। १४ वह बालक रोता है। १५ नवकार मन्त्र का जाप करो।

अर्धक्रिया

५६ जिन क्रियाओं का वर्णन ऊपर हुआ है उन्हें पूर्ण क्रिया कहते हैं क्योंकि उनसे वाक्यार्थ का पूरा बोध हो जाता है, जैसे **राम जाता है या जाता है राम** कहने से। लेकिन वह क्रियाएं जिनसे वाक्य अधूरा ही रहता है **अर्धक्रियायें** कहलाती हैं जैसे **जाता हुआ राम, या राम जाता हुआ।** यह वाक्य पूरा नहीं है इसके सुनने से सुनने वाले की आकांक्षा बनी रहती है।

५७ अर्धक्रियाएं भी कई प्रकार की हैं।

(क) **वर्तमान अर्धक्रिया**—इसके भी दो भेद हैं, यथा—

कर्तृवाच्य वर्तमान अर्धक्रिया जैसे—जाता हुआ, करता हुआ, खाता हुआ, पढ़ता हुआ, इत्यादि।

कर्मवाच्य वर्तमान अर्धक्रिया जैसे—पढ़ा जाता हुआ, किया जाता हुआ, खाया जाता हुआ, इत्यादि।

(ख) **भूत अर्धक्रिया** हिन्दी में केवल कर्मवाच्य में ही प्रयुक्त होती है, जैसे—किया गया, किया हुआ, मारा हुआ, मारा गया, दिया हुआ, दिया गया, इत्यादि।

(ग) **भविष्यत् अर्धक्रिया** का प्रयोग हिन्दी में नहीं होता—

(घ) **योजक अर्धक्रिया**—धातु के साथ कर, के, या करके

---

७ सक० भवि० ८ अक० वर्त० ९ सक० भू० १० सक० आ० ११ अक० भवि० १२ सक० भू० १३ सक० आ० १४ अक० वर्त० १५ सक० आ०।

लगाने से बनती है; जैसे—वह रोटी खाकर गया (उसने रोटी खाई और फिर वह चलागया), राम ने रुपया देकर किताब ली (राम ने रुपया दिया और किताब ली)।

(ङ) मूर्त अर्थ क्रिया वह है जिससे धातु का भाव प्रकट हो और जो स्वयं किसी दूसरी क्रिया का कर्ता या कर्म बन सके; जैसे—वह लिखना नहीं जानता, दान देना बहुत अच्छा है।
मूर्त अर्थ क्रिया प्रयोजन के अर्थ में भी प्रयुक्त होती है; यथा—वह रोटी खाने आया। मैं महाराज के दर्शन करने आताहूं।

अव्यय

५८ अव्यय वह शब्द हैं जिनमें विभक्ति, लिङ्ग वचन आदि के कारण कोई परिवर्तन नहीं होता; यथा—आज, कल, यहां, कहां, लेकिन, इत्यादि।

५९ अव्यय तीन प्रकार के होते हैं; यथा-विशेषण, योजक और भावसूचक।

६० विशेषण अव्यय भी तीन प्रकार के होते हैं; यथा—

६१ गुणवाची जैसे—वह तेज़ दौड़ता है, तू शीघ्र चला जा, वह मीठा बोलता है, धीरे धीरे पढ़।

६२ कालवाची जैसे—तू कब जाएगा, कल खूब मेंह बरसा।

६३ स्थानवाची जैसे—जिधर देखता हूं उधर तू ही तू है, मैं कहां जाऊं?

६४ योजक अव्यय शब्दों या वाक्यों के जोड़ने में काम आते

हैं; यथा—राम और कृष्ण चले गये। राजा हो या रंक, मौत सब के सिर पर बोलती है, बालक आया परन्तु बिना भोजन किये ही चला गया।

६५ भावसूचक अव्यय वह हैं जो वक्ता के किसी भाव (क्रोध, हर्ष, शोक आदि) को प्रगट करें; जैसे —ओहो! यह क्या हुआ, आहा! रेल आगई. हैं! तू स्कूल से भाग आया।

वाक्य प्रकरण

६६ वाक्य प्रकरण से वाक्य बनाने का बोध होता है। शब्दों का ऐसा समूह, जिस से कि अर्थ का पूर्ण बोध हो जाय और सुनने वाले को कुछ आकांक्षा न रहे, वाक्य कहलाता है। वाक्य के मुख्य दो अङ्ग हैं कर्ता और क्रिया। जब क्रिया सकर्मक हो तो उस के साथ कर्म भी ज़रूर आता है।

६७ वाक्य रचना में वाक्य के अङ्ग इस क्रम से रक्खे जाते हैं:— जब क्रिया अकर्मक हो तो पहिले कर्ता फिर क्रिया जैसे—राम सोता है, देवी आई, पानी बरसा। जब क्रिया सकर्मक हो तो पहिले कर्ता, फिर कर्म और सब से पीछे क्रिया रक्खी जाती है यथा—राम पानी पीता है, सीता ने चिट्ठी लिखी।

वाक्य में अन्य कारकों का स्थान

६८ जब क्रिया अकर्मक हो तो अन्य कारक प्रायः कर्ता और क्रिया के बीच रक्खे जाते हैं; जैसे राम देहली से आया है, शरीर सरदी से कांपता है, पक्षी वृक्षों पर सोते हैं।

६९ जब क्रिया सकर्मक हो तो अन्य कारक प्रायः कर्ता और कर्म के दरमियान रक्खे जाते हैं जैसे—वह कूएं से पानी भरता है, तू दाल के साथ रोटी खा ले। मैं ने चाकू से कलम बनाई।

अर्धमागधी व्याकरण।



अर्धमागधी

७० अर्धमागधी उस भाषा का नाम है जिस में श्वेताम्बर सम्प्रदाय के आगम ग्रन्थ अर्थात् अङ्ग, उपाङ्ग आदि सूत्र लिखे हुए हैं। साधारण जन इसको प्राकृत या मागधी भी कहते हैं। किन्तु इन में प्राकृत तो जाति वाचक शब्द है और मागधी व्यक्ति वाचक। प्राकृत कहने से सब प्रकार की भाषाएं जो नाटक तथा अन्य ग्रन्थ सत्तसई, गउडवहो, सेतुबन्ध आदि में प्रयुक्त हुई हैं वह भी आ जाती हैं। कभी कभी प्राकृत कहने से महाराष्ट्री नाम एक प्राकृत भाषा का बोध होता है। मागधी कहने से मगध देश की प्राकृत भाषा का बोध होता है जो अर्धमागधी से कुछ कुछ मिलती है।

७१ औपपातिक (ओववाइय) सूत्र में लिखा है कि भगवान् महावीर अर्धमागधी भाषा में बोलते थे। उसी भाषा में धर्मोपदेश देते थे। वह अर्धमागधी सब आर्य और अनार्य पुरुषों की अपनी अपनी भाषा के रूप में बदल जाती थी। तथा आचार्य हेमचन्द्र अपने व्याकरण की टीका में लिखते हैं कि पुराने सूत्र (अर्थात् अङ्ग, उपाङ्ग आदि) अर्धमागधी भाषा में रचे हुए हैं। इससे सिद्ध हुआ कि सूत्रों की भाषा का असली नाम अर्धमागधी ही है॥

शब्द प्रकरण

७२ हिन्दी की तरह अर्धमागधी के शब्द भी पांच हिस्सों में विभक्त हैं—

१ संज्ञा जैसे—पासणाह पार्श्वनाथ, सावग श्रावक, मिय मृग, गिह घर, इत्यादि।

२ विशेषण जैसे—किण्ह कृष्ण, काला, सेय श्वेत, तिव्व तीव्र, तेज़, इत्यादि।

३ सर्वनाम जैसे—तुमं तू, मम मेरा, तस्स उसका, तुब्भे तुम, आप, इत्यादि।

४ क्रिया जैसे—गच्छइ वह जाता है, करेइ वह करता है, वयासी वह बोला, इत्यादि।

५ अव्यय जैसे— सिग्घं शीघ्र, अज्ज आज, जइ यदि, इत्यादि।

७३ अर्धमागधी में वचन दो होते हैं—१ एकवचन, २ बहुवचन; लिङ्ग तीन होते हैं—१ पुंलिङ्ग, २ नपुंसक लिङ्ग, ३ स्त्रीलिङ्ग। शब्दों का लिङ्ग नियत होता॥

७४ हिन्दी की भांति यहां भी आठ कारक होते हैं।

७५ कारकों का बोध कराने के लिये हिन्दी में तो शब्द के पीछे ने, से, को, आदि कारकाव्यय लगाए जाते हैं जो शब्द से भिन्न ही रहते हैं परन्तु अर्धमागधी में कारकों का बोध शब्द के पीछे प्रत्यय जोड़ने से होता है जो शब्द के साथ सर्वथा मिल जाते हैं॥

७६ प्रत्यय—शब्द के अर्थ में परिवर्तन करने के लिये जो एक दो अक्षर शब्द के साथ जोड़े जाते हैं उन्हें प्रत्यय कहते हैं; जैसे

पुरिस शब्द का अर्थ है आदमी; इसके साथ ए जोड़ने से पुरिसे एक आदमी ने, आ जोड़ने से पुरिसा बहुत आदमियों ने, अनुस्वार जोड़ने से पुरिसं एक आदमी को, स्स जोड़ने से पुरिसस्स एक आदमी का इत्यादि अर्थ हो जाते हैं। इसी प्रकार गच्छ का अर्थ है जाना; इसके साथ इ जोड़ने से गच्छइ वह जाता है, आमि जोड़ने से गच्छामि मैं जाता हूं, इत्यादि अर्थ हो जाते हैं। यहां पर ए, आ, अनुस्वार, स्स, इ, आमि प्रत्यय कहलाते हैं॥

७७ कारक या विभक्ति बनाने के लिये अर्धमागधी में शब्दों के लिङ्ग तथा अन्तिम वर्ण के अनुसार भिन्न २ प्रत्यय जोड़े जाते हैं। और सब शब्दों के अन्तिम वर्ण स्वर ही होते हैं। सुभीते के लिये कारक बनाने में शब्दों के यह विभाग हैं—

पुल्लिङ्ग शब्द जिनका अन्तिम वर्ण अ है
नपुंसक „ „ „
पुल्लिङ्ग „ „ इ या उ है
नपुंसक „ „ „
स्त्रीलिङ्ग „ „ आ, इ, ई, उ, ऊ है
इतर शब्द जो उपर्युक्त नियमों से बाहिर हैं॥

७८ अकारान्त पुल्लिङ्ग देव शब्द के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	देवे, देवो[1]	देवा
	(एक) देव ने	(बहुत) देवों ने
द्वितीया	देवं	देवे
	(एक) देव को	(बहुत) देवों को

---

[1] गद्य में प्रायः देवे, पद्य में बहुत बार देवो भी प्रयुक्त होता है॥

	एकवचन	बहुवचन
तृतीया	देवेणं (एक) देव के द्वारा	देवेहिं (बहुत) देवों के द्वारा
चतुर्थी	देवाए, देवस्स (एक) देव के लिये	देवाणं (बहुत) देवों के लिये
पञ्चमी	देवाओ, देवा (एक) देव से	देवेहिंतो (बहुत) देवों से
षष्ठी	देवस्स (एक) देव का	देवाणं (बहुत) देवों का
सप्तमी	देवंसि, देवे (एक) देव में	देवेसु (बहुत) देवों में
सम्बोधन	देवा! देवो! हे देव!	देवा! हे देवो!

७६ इसी प्रकार अन्य पुल्लिङ्ग शब्दों के जिन का पिछला अक्षर अ है रूप बनाए जाते हैं।

अभ्यास के लिये कुछ शब्द :—

अइयार अतिचार	इंगाल अङ्गारा, कोयला
अणगार अनगार, साधु	ईसर ईश्वर, मालिक, सरदार
असुर असुर, देवता विशेष	उज्जाण उद्यान, बाग
आवण आपण, दुकान	परक्कम पराक्रम, शक्ति
आस घोड़ा	रूव रूप, आकार

८१ अकारान्त नपुंसक लिङ्ग वण=वन शब्दके रूप

	एकवचन	बहुवचन
१ प्र०	वणं एक वन ने	वणाइं बहुत वनों ने

२ द्वि० घणं	घणाई
एक घन को	बहुत घनों को

बाकी के रूप अकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों की भांति होते हैं।

८२ इसी प्रकार कज्ज "कार्य" फल "फल" मुह "मुख" आदि के रूप जान लेना॥

८३ इकारान्त पुल्लिङ्ग मुणि=मुनि शब्द के रूप

एकवचन	बहुवचन
१ प्र० मुणी	मुणीओ, मुणी
एक मुनि ने	बहुत मुनियों ने
२ द्वि० मुणिं	मुणीओ, मुणी
एक मुनि को	बहुत मुनियों को
३ तृ० मुणिणा	मुणीहिं
एक मुनि द्वारा	बहुत मुनियों द्वारा
४ च० मुणिणो, मुणिस्स	मुणीणं
एक मुनि के लिये	बहुत मुनियों के लिये
५ पं० मुणीओ, मुणिणो	मुणीहिंतो
एक मुनि से	बहुत मुनियों से
६ ष० मुणिणो, मुणिस्स	मुणीणं
एक मुनि का	बहुत मुनियों का
७ स० मुणिंसि	मुणीसु
एक मुनि में	बहुत मुनियों में
सं० मुणी !	मुणिणो !
हे मुनि !	हे मुनियो !

८४ उकारान्त पुल्लिङ्ग साहु=साधु के रूप

एकवचन	बहुवचन
१ प्र० साहू	साहूओ, साहू, साहुणो
एक साधु ने	बहुत साधुओं ने
२ द्वि० साहुं	साहूओ, साहू, साहुणो
एक साधु को	बहुत साधुओं को

३ तृ० साहुणा	साहूहिं
एक साधु के द्वारा	बहुत साधुओं के द्वारा
४ च० साहुणो, साहुस्स	साहूणं
एक साधु के लिये	बहुत साधुओं के लिये
५ प० साहुओ	साहूहिंतो
एक साधु से	बहुत साधुओं से
६ ष० साहुणो, साहुस्स	साहूणं
एक साधु का	बहुत साधुओं का
७ स० साहुंमि	साहूसु
एक साधु में	बहुत साधुओं में
सं० साहू !	साहुणो !
हे साधु !	हे साधुओ !

८५ इकारान्त नपुंसक दहि=दधि के रूप

एकवचन	बहुवचन
१ प्र० दहिं	दहीइं, दहीणि
दही	दही
२ द्वि० दहिं	दहीइं, दहीणि
दही को	दहियों को

शेष पुल्लिङ्ग वत्

८६ उकारान्त नपुंसक महु=मधु के रूप

एकवचन	बहुवचन
१ प्र० महुं	महूइं, महूणि
शहद	शहद
२ द्वि० महुं	महूइं, महूणि
शहद को	शहदों को

शेष पुल्लिङ्ग वत्

८७ आकारान्त स्त्रीलिङ्ग माला=माला

एकवचन	बहुवचन
१ प्र० माला	मालाओ, माला
माला	मालाएं

२ द्वि०	मालं	मालाओ, माला
	माला को	मालाओं को
३ तृ०	मालाए	मालाहिं
	माला के द्वारा	मालाओं के द्वारा
४ च०	मालाए	मालाणं
	माला के लिये	मालाओं के लिये
५ पं०	मालाओ	मालाहिंतो
	माला से	मालाओं से
६ ष०	मालाए	मालाणं
	माला का	मालाओं का
७ स०	मालाए	मालासु
	माला में	मालाओं में
सं०	माले !	मालाओ !
	हे माला !	हे मालाओ

८८ इकारान्त स्त्रीलिङ्ग कुच्छि=कुक्षि

	एक वचन	बहुवचन
१ प्र०	कुच्छी	कुच्छीओ, कुच्छी
	कुक्षि	कुक्षियां
२ द्वि०	कुच्छिं	कुच्छीओ, कुच्छी
	कुक्षि को	कुक्षियों को
३ तृ०	कुच्छीए	कुच्छीहिं
	कुक्षि के द्वारा	कुक्षियों के द्वारा
४ च०	कुच्छीए	कुच्छीणं
	कुक्षि के लिये	कुक्षियों के लिये
५ पं०	कुच्छीओ	कुच्छीहिंतो
	कुक्षि से	कुक्षियों से
६ ष०	कुच्छीए	कुच्छीणं
	कुक्षि का	कुक्षियों का
७ स०	कुच्छिंसि	कुच्छीसु
	कुक्षि में	कुक्षियों में
सं०	कुच्छी !	कुच्छीओ !
	हे कुक्षि !	हे कुक्षियो !

८९ उकारान्त स्त्रीलिङ्ग धेणु = धेनु, गाय

	एक व०	बहु व०
१ प्र०	धेणू गाय	धेणुओ, धेणू गाय
२ द्वि०	धेणुं गाय को	धेणूओ, धेणू गायों को
३ तृ०	धेणूए गाय के द्वारा	धेणूहि गायों के द्वारा
४ च०	धेणूए गाय के लिये	धेणूणं गायों के लिये
५ पं०	धेणूओ गाय से	धेणूहिंतो गायों से
६ ष०	धेणूए गाय का	धेणूणं गायों का
७ स०	धेणुंसि गाय में	धेणूसु गायों में
सं०	धेणू! हे गाय!	धेणूओ हे गायों

९० ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग नई = नदी

	एक व०	बहु व०
१ प्र०	नई नदी	नईओ, नई नदियां
२ द्वि०	नई नदी को	नईओ, नई नदियों को
३ तृ०	नईए नदी के द्वारा	नईहिं नदियों के द्वारा
४ च०	नईए नदी के लिये	नईणं नदियों के लिये
५ प०	नईओ नदी से	नईहिंतो नदियों से

६ ष० नईए	नईणं
नदी का	नदियों का
७ स० नईए	नईसु
नदी में	नदियों में
८ सं० नई !	नईओ !
हे नदी !	हे नदियो !

८१ ऊकारान्त स्त्रीलिङ्ग वहू=वधू, बहू

	एक व०	बहु व०
१ प्र०	वहू	वहूओ, वहू
	बहू	बहुएं
२ द्वि०	वहुं	वहूओ, वहू
	बहू को	बहुओं को
३ तृ०	वहूए	वहूहिं
	बहू के द्वारा	बहुओं के द्वारा
४ च०	वहूए	वहूणं
	बहू के लिये	बहुओं के लिये
५ प०	वहूओ	वहूहिंतो
	बहू से	बहुओं से
६ ष०	वहूए	वहूणं
	बहू का	बहुओं का
७ स०	वहूए	वहूसु
	बहू में	बहुओं में
सं०	वहू !	वहूओ !
	हे बहू !	हे बहुओ !

८२ बहुत से शब्द ऐसे हैं कि जिन के कुछ रूप उपर्युक्त नियमों से नहीं बनते। यह रूप प्रायः संस्कृत के ही विकृत रूप हैं। ऐसे रूपों को हम यहां निपात-सिद्ध[1] कह सकते हैं। जिन निपात-सिद्ध रूपों का प्रयोग अधिक होता है उन को नीचे के कोष्ठक में लिखते हैं।

---

१ निपातसिद्ध उन शब्दों को कहते हैं जिन के बनाने के कोई साधारण नियम न हों॥

निपातसिद्ध रूप	विभक्ति	शब्द	अर्थ	संस्कृतरूप
अप्पणा	३, एक०	आय, अप्प	आत्मा	आत्मना
अप्पा	१, एक०	आय, अप्प	आत्मा	आत्मा
अप्पाणो	१, बहु	आय, अप्प	आत्मा	आत्मानः
अरहं	१,२ एक	अरहंत	अरहंत	अर्हन्, अर्हन्तम्
आया	१, एक	आय	आत्मा	आत्मा
आयओ	५, एक	आय	आत्मा	आत्मनः
कायसा	३, एक	काय	काय, देह	कायेन
जच्चा	३, एक	जाइ	जाति	जात्या
तवसा	३, एक	तव	तप. तपस्या	तपसा
तेयसा	३, एक	तेय	तेज, प्रताप	तेजसा
पियरं	२, एक०	पिउ, पिइ	पिता	पितरम्
पिया	१, एक	पिउ, पिइ	पिता	पिता
पियरो	१,२ बहु	पिउ, पिइ	पिता	पितरः
भगवं	१,२, एक	भगवंत	भगवान्	भगवान्, भगवन्तम्
भगवओ	६, एक	भगवंत	भगवान्	भगवतः
भगवया	३, एक	भगवंत	भगवान्	भगवता
भायरं	२, एक	भाउ, भाइ	भाई	भ्रातरम्
भाया	१, एक	भाउ, भाइ	भाई	भ्राता
माया	१, एक	माउ, माइ	माता	माता
मइमं	१,२ एक	मइमंत	मतिमान	मतिमान्, मतिमन्तम्
मइमओ	६, एक	मइमंत	मतिमान	मतिमतः
मइमया	३, एक	मइमंत	मतिमान	मतिमता
मायरं	२, एक	माउ, माइ	माता	मातरम्
मणसा	३, एक	मण	मन	मनसा
रण्णा	३, एक	राइ	राजा	राज्ञा
रण्णो	६, एक	राइ	राजा	राज्ञः
राया	१, एक	राइ	राजा	राजा
रायाणं	२, एक	राइ	राजा	राजानम्
रायाणो	१,२ एक	राइ	राजा	राजानः, राज्ञः
वयसा	३, एक	वय	वचन	वचसा

अभ्यास—नीचे के वाक्यों को ध्यान से पढ़ो।

१. साहू झाणं करेइ   २. नरा नयरं गच्छंति
साधु ध्यान करता है   आदमी नगर को जाते हैं

३. पावं दुक्खस्स कारणं अत्थि ४. रुक्खेहिंतो फलाइं पडंति
पाप दुःख का कारण है   वृक्षों पर से फल गिरते हैं

५. देवाणुप्पिया ! अहं तुम्हे सिक्खभिक्खं दलयामि
हे देवताओं के प्यारे ! मैं आप को शिक्षा रूप भिक्षा देता हूं

६. अग्गी तणाइं डहइ   ७. मुणिणो गिरिं दुरुहंति
अग्नि तिनकों को जलाती है   मुनि लोग पहाड़ पर चढ़ते हैं

८. मणुस्साणं ओसहेहिं वाहीओ नस्संति
मनुष्यों की औषधियों द्वारा व्याधियां नाश होती हैं

९. आयरिया सीसाणं धम्मं आइक्खंति
आचार्य शिष्यों को धर्म (का उपदेश) कहते हैं

१०. इसीणं वयणं पमाणं भवइ
ऋषियों का वचन प्रमाण होता है

११ पुत्तस्स लाभेणं जणा तुट्ठा भवंति
पुत्र के लाभ से लोग खुश होते हैं

१२ गिम्हाकाले नईणं जलाणि आयवेणं नस्संति
गरमी के काल में नदियों के जल धूप से नष्ट हो जाते हैं (सूख जाते हैं)

१३ जिणेणं दुविहे धम्मे पण्णत्ते, साहु धम्मे सावगधम्मे य ॥
जिन भगवान् ने दो प्रकार का धर्म कहा है, साधु धर्म और श्रावक धर्म॥

विशेषण

९३. हिन्दी की भांति अर्धमागधी में भी विशेषण, विशेष्य (अर्थात् संज्ञा) के पहिले रक्खे जाते हैं परन्तु विशेषण के साथ भी विभक्ति के वही प्रत्यय लगते हैं जो उसके विशेष्य के साथ लगे हों जैसा कि नीचे के उदाहरणों से स्पष्ट होगा।

सुभस्स कम्मस्स फलं सुहं भवइ। सुभाए कम्म पयडीए।
शुभ (का) कर्म का फल सुख होता है। शुभ (से) कर्म प्रकृति से।

सुभाणं कम्माणं फलं सुहं भवइ। असुभाए कम्म पयडीए।
शुभ (का) कर्मों का फल सुख होता है। अशुभ (से) कर्म प्रकृति से।

सुभाइं कम्माइं करेमाणे नरे सग्गं गच्छइ
शुभ (को) कामों को करता हुआ मनुष्य स्वर्ग को जाता है
असुभेहिं कम्मेहिं जीवा नरये पडंति
अशुभ (से) कामों से जीव नरक में पड़ते हैं
नवण्हं मासाणं। पंचसु ठाणेसु; इत्यादि
नौ (का) महीनों का पांच (में) स्थानों में

९४. लेकिन जब विशेषण के साथ विभक्ति के प्रत्यय न लगाते हों तो उसे विशेष्य के साथ मिला देते हैं जैसे:—
सुभकम्मस्स। सुभकम्माणं। सुभकम्माइं। असुभकम्मेहिं।
शुभ कर्म का शुभ कर्मों का शुभ कर्मों को अशुभ कर्मों से
नवमासाणं। पंचठाणेसु।
नौ महीनों का पांच स्थानों में

संख्या शब्द

९५. १=एग केवल एकवचन में प्रयुक्त होता है।

	१ प्र०	२ द्वि०	३ तृ०	४ च०	५ पं०	६ ष०	७ स०
पुं०	एगे	एगं	एगेणं	एगस्स	एगाओ	एगस्स	एगंसि
नपुं०	एगं	,,	,,	,,	,,	,,	,,
स्त्री०	एगा	एगं	एगाए	एगाए	एगाओ	एगाए	एगाए

जब एग शब्द सर्वनाम हो और उसका अर्थ "कोई" हो तब वह बहुवचन में भी प्रयुक्त होता जैसे

१ प्र०	२ द्वि०	३ तृ०	४ च०	५ पं०	६ ष०	७ स०
एगे	एगे	एगेहिं	एगेसिं	एगेहिंतो	एगेसिं	एगेसु

९६. * २=दो से अट्ठारह शब्द पर्यन्त बहुवचन में प्रयुक्त होते हैं

	१ प्र०	२ द्वि०	३ तृ०	४ च०	५ पं०	६ ष०	७ स०
पुं०	दो	दो	दोहिं	दोण्हं	दोहिंतो	दोण्ह	दोसु
नपुं०	दुंण्णि	दोण्णि	,,	,,	,,	,,	,,
स्त्री०	दुवे	दुवे	,,	,,	,,	,,	,,

---

*दो, ति, चउ शब्दों के प्रयोग में लिङ्ग का कुछ ख्याल नहीं रक्खा जात
तिण्णि जणा, तओ वणाइं भी देखने में आते हैं।

जब "दो" शब्द किसी समास के आदि में हो तो उसका दु या वे भी हो जाता है जैसे—दुगुण दुगना दुपय दो पैर वाला, बेइंदिय दो इन्द्रियों वाला।

९७ * ३ = ति पुं० तओ तओ तिहिं तिण्हं तिहिंतो तिण्हं तीसु
नपुं० तिण्णि तिण्णि ,, ,, ,, ,, ,,
समास के आदि मे ति को ते भी हो जाता है—
तिविह = तीन प्रकार का तेइंदिय = तीन इन्द्रियों वाला

९८ *४ = चउ चत्तारो चत्तारो चउहिं चउण्हं चउहिंतो चउण्हं चउसु
चत्तारि चत्तारि ,, ,, ,, ,, ,,
चउरो चउरो ,, ,, ,, ,, ,,
समास के आदि में स्वर से पहिले चउ का चउर् हो जाता है जैसे—चउरिंदिय = चार इन्द्रियोंवाला चउप्पय = चार पैरों वाला।

९९ ५ = पंच पंच पंच पंचहिं पंचण्हं पंचहिंतो पंचण्हं पंचसु

१०० ६=छ। ७=सत्त। ८=अट्ठ। ९=नव। १०=दस। ११=एक्कारस। १२=दुवालस,बारस।१३=तेरस। १४=चोद्दस,चउद्दस। १५=पण्णरस। १६=सोलस। १७=सत्तरस। १८=अट्ठारस। १९=एगूणवीसं,एगूणवीसा,अउणवीसइ। २०=वीसं,वीसा, वीसइ। २१=एक्कवीसं,एगवीसं। २२=बावीसं। २३=तेवीसं। २४=चउवीसं। २५=पणवीसं। २६=छव्वीसं। २७=सत्तवीसं। २८=अट्ठावीसं। २९=अउणत्तीसं। ३०=तीसं। ३१= एक्कतीसं। ३२=बत्तीसं। ३३=तेत्तीसं। ४०= चत्तालीसं। ४२=बायालीसं। ४४=चउयालीसं,

*दो ति, चउ शब्दों के प्रयोग में लिङ्ग का कुछ ध्यान नहीं रक्खा जाता तिण्णि जणा, तओ पणाइं भी देखने में आते हैं॥

चोयालीसं । ४७=सीयालीसं । ४८=अट्ठचत्ता-लीसं, अडयालीसं । ४९=अउणापन्नं । ५०=पन्नासं । ५१=एक्कावन्नं । ५६=छप्पन्नं । ५९=अउणट्ठिं । ६०=सट्ठिं । ७०=सत्तरिं । ८०=असीइ । ९०=नउइ । १००=सय । १०१=एगसय । १०००=सहस्स । १००,०००=सयसहस्स । १०,०००,००० = कोडि ।

१०१ १९ से ९९ तक शब्दों का प्रयोग स्त्रीलिङ्ग एक वचन में होता है परन्तु प्रथमा और द्वितीया विभक्ति में नपुंसक एक वचन में भी हो जाता है ॥

क्रमवाची शब्द

१०२ १ पढम, पढमिल्ल । २ बिइय, बीय, दुच्च, दोच्च । ३ तइय, तच्च । ४ चउत्थ, ५ पंचम, ६ छट्ठ । ७ सत्तम । १९ एगूणवीसइम, एगूणवीसम । २० वीसइम, वीस । ३० तीसइम, तीस । ४९ अउणा-पन्न । ७२ बावत्तर । ९७ सत्ताणउय ।

१०३ संख्या के पीछे प्रायः "म" जोड़ने से क्रमवाची शब्द बन जाते हैं ।

१०४ स्त्रीलिङ्ग में उनके पीछे—'ई' या 'आ' जोड़े जाते हैं। पढम का स्त्रीलिङ्ग पढमा ही होता है ॥

अर्ध संयुक्त संख्याएं

१०५ $\frac{1}{2}$=अद्ध, अड्ढ । १$\frac{1}{2}$=दिवड्ढ । २$\frac{1}{2}$=अड्ढाइज्ज । ३$\frac{1}{2}$=अद्धुट्ठ । ४$\frac{1}{2}$=अद्धपंचम । ५$\frac{1}{2}$=अद्धछट्ठ । ६$\frac{1}{2}$=अद्धसत्तम । ७$\frac{1}{2}$=अद्धट्ठम । ८$\frac{1}{2}$=अद्धनवम ।

वार-अर्थ द्योतक शब्द

१०६ १ सइं=एक वार। २ दुक्खुत्तो, दोखुत्तो, दोच्चं=दोवार। ३ तिक्खुत्तो, तच्चं=तीन वार। ७ सत्तखुत्तो=सात वार २१ तिसत्तखुत्तो=२१ वार ∞ अणंतखुत्तो =अनन्त वार।

सर्वनाम

१०७ उत्तम पुरुष

	एकवचन	बहुवचन
१ प्र०	अहं, हं मैं, मैं ने	अम्हे, वयं हम, हमने
२ द्वि०	ममं, मं मुझे	अम्हे, णो हमें
३ तृ०	मए मुझसे	अम्हेहिं हमसे
४ च०	मम, ममं मुझे	अम्हं, मो हमें
५ पं०	ममाहिंतो मुझसे	अम्हेहिंतो हमसे
६ ष०	मम, ममं मेरा	अम्हं, मो हमारा
७ स०	ममंसि मुझमें	अम्हेसु हममें

१०८ मध्यम पुरुष

	एकवचन	बहुवचन
१ प्र०	तुमं, तं तू, तूने	तुब्भे, तुम्हे तुम, तुमने

२ द्वि० तुमं	तुब्भे, घो
तुझे	तुम्हें
३ तृ० तुमे	तुब्भेहिं, तुम्हेहिं
तुझसे	तुमसे
४ च० तव, ते, तुमं	तुब्भं, तुम्हं
तुझे	तुम्हें
५ पं० तुमाहिंतो	तुब्भेहिंतो
तुझसे	तुमसे
६ ष० तव, ते, तुमं	तुब्भं, तुम्हं
तेरा	तुम्हारा
७ स० तुमंसि	तुब्भेसु, तुम्हेसु
तुझमें	तुममें

उत्तम और मध्यम पुरुष के सर्वनामों के रूप तीनों लिङ्गों में ऐसे ही रहते हैं।

१०६ प्रथम पुरुष "त" शब्द = वह

एकवचन

पुं०	नपुं०	स्त्री०
१ प्र० से	तं	सा
२ द्वि० तं	तं	तं
३ तृ० तेणं	तेणं	ताए
४ च० तस्स	तस्स	तीसे
५ पं० ताओ, तम्हा	ताओ, तम्हा	ताओ
६ ष० तस्स	तस्स	तीसे, ताए
७ स० तंसि, तंमि	तंसि, तंमि	तीसे, ताए

बहुवचन

पुं०	नपुं०	स्त्री०
१ प्र० ते	ताइं, ताणि	ताओ
२ द्वि० ते	ताइं, ताणि	ताओ
३ तृ० तेहिं	तेहिं	ताहिं
४ च० तेसिं	तेसिं	तासिं
५ पं० तेहिंतो	तेहिंतो	ताहिंतो
६ ष० तेसिं	तेसिं	तासिं
७ स० तेसु	तेसु	तासु

११० प्रथमपुरुष "एय" शब्द = यह

एक वचन

	पु०	नपुं०	स्त्री०
१ प्र०	एसे	एयं	एसा
२ द्वि०	एयं	एयं	एयं
३ तृ०	एएणं	एएणं	एयाए
४ च०	एयस्स	एयस्स	एयाए
५ पं०	एयाओ	एयाओ	एयाओ
६ ष०	एयस्स	एयस्स	एयाए
७ स०	एयंसि, एयंमि	एयंसि, एयंमि	एयाए

बहुवचन

	पु०	नपुं०	स्त्री०
१ प्र०	एए	एयाइं	एयाओ
२ द्वि०	एए	एयाइं	एयाओ
३ तृ०	एएहिं	एएहिं	एयाहिं
४ च०	एएसिं	एएसिं	एयासिं
५ पं०	एएहिंतो	एएहिंतो	एयाहिंतो
६ ष०	एएसिं	एएसिं	एयासिं
७ स०	एएसु	एएसु	एयासु

१११ प्रथम पुरुष "अमु" शब्द = वह

इस के रूप पुल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग और नपुंसक लिङ्ग में क्रमशः गुरु, धेणु और महु शब्द की तरह होते हैं॥

११२ प्रथमपुरुष "इम" शब्द = यह

इस के रूप "त" शब्द के रूपों की तरह होते हैं केवल प्रथमा विभक्ति के रूपों में भेद है॥

प्रथमा विभक्ति के रूप

	पु०	नपुं०	स्त्री०
एक व०	इमे, अयं	इमं, इदं	इमा, इयं
बहु व०	इमे	इमाइं	इमाओ

२ द्वि० तुमं	तुब्भे, वो
तुझे	तुम्हें
३ तृ० तुमे	तुब्भेहिं, तुम्हेहिं
तुझसे	तुमसे
४ च० तव, ते तुमं	तुब्भं, तुम्हं
तुझे	तुम्हें
५ पं० तुमाहिंतो	तुब्भेहिंतो
तुझसे	तुमसे
६ ष० तव, ते, तुमं	तुब्भं, तुम्हं
तेरा	तुम्हारा
७ स० तुमंसि	तुब्भेसु, तुम्हेसु
तुझमें	तुममें

उत्तम और मध्यम पुरुष के सर्वनामों के रूप तीनों लिङ्गों में ऐसे ही रहते हैं।

१०६ प्रथम पुरुष "त" शब्द = वह

एकवचन

पुं०	नपुं०	स्त्री०
१ प्र० से	तं	सा
२ द्वि० तं	तं	तं
३ तृ० तेणं	तेणं	ताए
४ च० तस्स	तस्स	तीसे
५ पं० ताओ, तम्हा	ताओ, तम्हा	ताओ
६ ष० तस्स	तस्स	तीसे, ताए
७ स० तंसि, तंमि	तंसि, तंमि	तीसे, ताए

बहुवचन

पुं०	नपुं०	स्त्री०
१ प्र० ते	ताइं, ताणि	ताओ
२ द्वि० ते	ताइं, ताणि	ताओ
३ तृ० तेहिं	तेहिं	ताहिं
४ च० तेसिं	तेसिं	तासिं
५ पं० तेहिंतो	तेहिंतो	ताहिंतो
६ ष० तेसिं	तेसिं	तासिं
७ स० तेसु	तेसु	तासु

वर्तमानकाल (कर्तृवाच्य)

११६ "पास" = देख

	एक व०	बहु व०
प्र० पु०	पासइ वह देखता है	पासंति वह देखते हैं
म० पु०	पाससि तू देखता है	पासह तुम देखते हो
उ० पु०	पासामि मैं देखता हूं	पासामो हम देखते हैं

"कर" = कर

प्र० पु०	करेइ वह करता है	करेंति वह करते हैं
म० पु०	करेसि तू करता है	करेह तुम करते हो
उ० पु०	करेमि मैं करता हूं	करेमो हम करते हैं

११७ कुछ धातु ऐसे हैं कि जिन के रूप निपात सिद्ध होते हैं उन में से अस धातु का प्रयोग अधिक होता है इसलिये उसके रूप नीचे लिखे जाते हैं।

	एक व०	बहु व०
प्र० पु०	अत्थि वह है	संति वह हैं
म० पु०	असि,सि तू है	त्थ तुम हो
उ० पु०	अंसि,मि मैं हूं	मो हम हैं

११३ प्रथमपुरुष "क" शब्द = कौन

	पु०	एकवचन नपुं०	स्त्री०
१ प्र०	के	कं	का
२ द्वि०	कं	कं	कं
३ तृ०	केणं	केणं	काए
४ च०	कस्स	कस्स	कीसे
५ पं०	कम्हा,काओ	कम्हा,काओ	काओ
६ ष०	कस्स	कस्स	कीसे
७ स०	कंसि	कंसि	कीसे

	पु०	बहुवचन नपुं०	स्त्री०
१ प्र०	के	काइं	काओ
२ द्वि०	के	काइं	काओ
३ तृ०	केहिं	केहिं	काओ
४ च०	केसिं	केसिं	काहिं
५ पं०	केहिंतो	केहिंतो	कासिं
६ ष०	केसिं	केसिं	काहिंतो
७ स०	केसु	केसु	कासिं
			कासु

११४ प्रथम पुरुष "य" शब्द=जो, "सव्व"=सब, अण्ण=और, दूसरा, अवर=दूसरा, कयर=कौनसा, पर=दूसरा इत्यादि के रूप "क" शब्द के रूपों की तरह बनते हैं॥

क्रिया

११५ अर्धमागधी के धातु दो गणों में विभक्त हैं—पास गण और कर गण। 'पास' गण के धातुओं के परे प्रत्यय जैसे के तैसे लग जाते हैं परन्तु 'कर' गण के धातुओं और उनके प्रत्ययों के बीच 'ए' और लगाया जाता है॥

१२१ एक और प्रकार से भी भविष्यत् काल के रूप बनते हैं; जैसे—

	एक व०	बहु व०
प्र० पु०	पासिहिइ	पासिहिंति
	वह देखेगा	वह देखेंगे
म० पु०	पासिहिसि	पासिहिह
	तू देखेगा	तुम देखोगे
उ० पु०	पासिहिमि	पासिहिमो
	मैं देखूंगा	हम देखेंगे

१२२ इस अवस्था में "कर" को "का" हो जाता है जैसे "काहिइ" वह करेगा, "काहिसि" तू करेगा ॥

१२३ प्रथम पुरुष एक वचन के रूपों में हि और इ दोनों मिल कर ही भी हो जाते हैं जैसे "काहिइ" या "काही"

१२४ निपातसिद्धः करिस्सं (धातु "कर"=कर) मैं करूंगा
वोच्छं (धातु "वय"=बोल) मैं बोलूंगा।

आज्ञा कारी क्रिया (कर्तृवाच्य)

१२५ "पास" = देख

	एक व०	बहु व०
प्र० पु०	पासउ	पासंतु
	वह देखे	वह देखें
म० पु०	पास, पासाहि	पासह
	तू देख	तुम देखो
उ० पु०	पासामि	पासामो
	मैं देखूं	हम देखें

१२६ "कर" = कर

	एक व०	बहु व०
प्र० पु०	करेउ	करेंतु
	वह करे	वह करें
म० पु०	करेहि	करेह
	तू कर	तुम करो
उ० पु०	करेमि	करेमो
	मैं करूं	हम करें

भूतकाल (कर्तृवाच्य)

११८ "पास" = देख

	एक व०	बहु व०
प्र० पु० म० पु० उ० पु०	पासित्था उसने, तूने या मैंने देखा	पासिंसु उन्होंने, तुमने या हमने देखा

"कर" = कर

	एक व०	बहु व०
प्र० पु० म० पु० उ० पु०	करित्था, करित्था उसने, तूने या मैंने किया	करिंसु, करिंसु उन्होंने, तुमने या हमने किया

११९ निपातसिद्धरूपः

वयासी "वय" = बोल धातु से बनता है। सब पुरुषों और वचनों में यही रूप रहता है।

अकासी "कर" = कर धातु से बनता है। सब पुरुषों और वचनों में यही रूप रहता है।

भविष्यत् काल (कर्तृवाच्य)

१२० भविष्यत् काल के रूपों में 'पास' गण और 'कर' गण के धातुओं में कोई भेद नहीं रहता॥

पास = देख

	एक व०	बहु व०
प्र० पु०	पासिस्सइ वह देखेगा	पासिस्संति वह देखेंगे
म० पु०	पासिस्ससि तू देखेगा	पासिस्सह तुम देखोगे
उ० पु०	पासिस्सामि मैं देखूंगा	पासिस्सामो हम देखेंगे

इसी प्रकार "कर" धातु के रूप बनते हैं।

१३४ जब धातु के मध्य में अ हो तो उस अ को आ कर देते हैं जैसे—मरइ = वह मरता है, मारइ = वह मारता है, पडइ = वह गिरता है, पाडेइ = वह गिराता है॥

कर्मवाच्य

१३५ साधारण नियम कर्मवाच्य बनाने का यह है कि धातु और प्रत्यय के बीच इज्ज लगा दो, जैसे—सुणइ वह सुनता है, सुणिज्जइ वह सुना जाता है, करेइ वह करता है करिज्जामि मैं किया जाता हूं, मारामि मैं मारता हूं मारिज्जामि मैं मारा जाता हूं॥

१३६ बहुत से धातुओं के कर्मवाच्यरूप निपात सिद्ध होते हैं परन्तु वास्तव में वह संस्कृत के ही विकृत रूप होते हैं जैसे लब्भइ (सं० लभ्यते) वह प्राप्त किया जाता है, मुच्चइ (सं० मुच्यते) वह छोड़ा जाता है, णज्जइ (सं० ज्ञायते) वह जाना जाता है, दिज्जइ (सं० दीयते) वह दिया जाता है॥

१३७ कभी कर का कीर और पास का दीस भी बन जाता है जैसे—कीरइ वह किया जाता है, दीसइ वह देखा जाता है॥

अर्धक्रिया

१३८ कर्तृ वाच्य वर्तमान अर्धक्रिया दो प्रकार से बनती है॥

१ धातु के साथ "अंत" जोड़ने से जैसे—

पासंत देखताहुआ करंत करताहुआ।
चिट्ठंत ठैरताहुआ चरंत चलताहुआ॥

२ धातु के साथ "माण" लगाने से जैसे—

पासमाण देखताहुआ करेमाण करता हुआ
इसी तरह चिट्ठमाण, चरमाण आदि॥

१३९ कर्मवाच्य वर्तमान अर्धक्रिया बनाने के लिये धातु के कर्मवाच्य रूप के साथ अंत या माण और जोड़ देते हैं जैसे—करिज्जंत या करिज्जमाण किया जाता हुआ, मरिज्जंत या मरिज्जमाण मारा जाता हुआ दिज्जंत या दिज्जमाण दिया जाता हुआ, दीसंत या दीसमाण देखा जाता हुआ॥

१२७ मध्यम पुरुष एक वचन में हि की जगह सु भी हो जाता है जैसे—कहसु तू कह, सरसु तू याद कर।

१२८ निपातसिद्ध अत्थु (धातु "अस" हो) वह होवे

१२९ एक और प्रकार से आज्ञाकारी क्रिया के रूप बनते हैं इस अवस्था में "पास" और "कर" गण के धातुओं में कुछ भेद नहीं रहता।

१३० "पास" = देख

	एक व।		बहु व।	
प्र० पु०	पासेज्जा, पासिज्जा	वह देखे	पासेज्जा, पासिज्जा	वह देखें
म० पु०	पासे (सि) ज्जा पासे (सि) ज्जाहि	तू देखे	पासे (सि) ज्जाह पासे (सि) ज्जासि	तुम देखो
उ० पु०	पासे (सि) ज्जा, पासे (सि) ज्जामि	मैं देखूं	पासे (सि) ज्जाम	हम देखें।

१३१ धातु के साथ 'ए' जोड़ने से भी आज्ञाकारी क्रिया के रूप बनते हैं। यह रूप सब पुरुषों और वचनों में ऐसे ही रहते हैं। पासे (वह, तू, मैं वह, तुम, हम) देखे, करे (वह तू..) करें॥

प्रेरक धातु

१३२ जब किसी क्रिया का कर्ता उसे अन्य पुरुष के द्वारा कराए तब वह क्रिया प्रेरक धातु से बनाई जाती है जैसे—करेइ = वह करता है, करावेइ = वह कराता है. कप्पइ वह काटता है, कप्पावेइ वह कटवाता है॥

अकर्मकधातु से सकर्मक धातु बनाने के नियम

१३३ जब धातु के अन्त में "आ" हो तो वह धातु "व" जोड़ने से सकर्मक हो जाता है जैसे—एहाइ = वह न्हाता है, एहावेइ = वह नहवाता है, ठाइ = वह ठहरता है, ठावेइ = वह ठहराता है॥

२ धातु के साथ ऊणं या इऊणं लगाने से जैसे—नाऊणं जानकर, दऊणं देकर, बंधिऊणं बांधकर ॥

३ धातु के साथ इत्तु लगाने से जैसे—जाणित्तु जानकर बंधित्तु बांधकर ॥

१४६ बहुत से निपात सिद्ध हैं जैसे कट्टु (धातु 'कर') करके, साहट्टु (धा० साहर) लाकर, किच्चा (धा० कर) करके, नच्चा (धा० ना) जानकर इत्यादि ॥

मूर्त अर्थ क्रिया

१४७ मूर्त अर्थ क्रिया दो प्रकार से बनती है ।

१ धातु के साथ इत्तए लगाने से जैसे—गच्छित्तए जाना, पासित्तए देखना, पुच्छित्तए पूछना, करित्तए करना ॥

२ धातु के साथ उं या इउं लगाने से जैसे—दाउं देना, काउं करना, पासिउं देखना, गिण्हिउं लेना ॥

१४८ मूर्त अर्थक्रिया प्रायः "कप्प" धातु के साथ इस तरह प्रयुक्त होती है—नो कप्पइ साहूणं मुसावयणं भासित्तए नहीं कल्पता साधुओं को झूठ वचन बोलना अर्थात् साधुओं को झूठ नहीं बोलना चाहिये, एएसिं परिव्वायगाणं नो कप्पइ सोवण्णाइं भूसणाइं धारित्तए इन परिव्राजकों को नहीं कल्पता सोने के भूषण पहिनना अर्थात् इन परिव्राजकों को सोने के भूषण नहीं पहिनने चाहिये ।

१४९ मूर्त अर्थक्रिया प्रयोजन अर्थ में भी आती है जैसे—अहं तव पुत्तं पासिउं एत्थ आगए ॥ यहां तेरा पुत्र देखने आया हूं, नो खलु जाया ! अम्हे इच्छामो खणमवि विप्पओगं सहित्तए हे पुत्र हम क्षण भर भी (तेरी) जुदाई सहना नहीं चाहते ।

समासप्रकरण

१५० जब दो शब्द इस प्रकार से मिलाए जाते हैं कि उन के बीच में कारक सम्बन्ध को बतलाने वाले अव्यय न लगाएं तो वह दोनों शब्द मिलकर एक शब्द की तरह प्रयुक्त होते हैं और

१४० कर्तृ वाच्य भूत अर्ध क्रिया बनाने के लिये कर्मवाच्य भूत अर्ध क्रिया के साथ "वंत" लगा देते हैं। हिन्दी में इस के मुकाबले का कोई रूप नहीं इस लिये इस का अर्थ भूत काल की (कर्तृ वाच्य पूर्ण) क्रिया से किया जाता है; जैसे—रक्खियवंते वह रक्षा करता गया = उसने रक्षा की, हसियवंते वह हँसता गया = वह हँसा॥

१४१ कर्मवाच्य भूत अर्ध क्रिया प्रायः धातु के साथ "इय" लगाने से बनती है, जैसे—रक्खिय = रक्खा हुआ, भक्खिय खाया हुआ, मारिय मारा हुआ॥

१४२ बहुत से धातुओं के इस अर्ध क्रिया के रूप निपात सिद्ध ही हैं जैसे गय (धातु गच्छ) गया हुआ, कड (धातु कर) किया हुआ, दिट्ठ (धातु पास) देखा हुआ इत्यादि॥

१४३ भविष्यत् अर्ध क्रिया का कर्तृ वाच्य में प्रयोग नहीं होता कर्मवाच्य में होता है। इस के रूप प्रायः दो प्रकार से बनते हैं—

१ धातु के साथ "णिज्ज" लगाने से जैसे—करणिज्ज किया जाना चाहिये, पूयणिज्ज पूजा जाना चाहिये॥

२ धातु के साथ "इयव्व" लगाने से जैसे—पासियव्व देखा जाना चाहिये पुच्छियव्व पूछा जाना चाहिये, जाणियव्व जानना चाहिये इत्यादि।

१४४ कई निपात सिद्ध होते हैं जैसे कायव्व किया जाना चाहिये, करना चाहिये, करने योग्य, पेज्ज पिया जाना चाहिये, पीना चाहिये, पीने योग्य इत्यादि।

योजक अर्ध क्रिया

१४५ इस के बनाने के कई प्रकार हैं परन्तु यह तीन बहुत आम हैं।

१ धातु के साथ "इत्ता" लगाने से जैसे—गच्छित्ता जाकर, पासित्ता देखकर, करित्ता करके, इत्ता के स्थान में इत्ताणं भी लगाया जाता है जैसे—पासित्ताणं देखकर, चइत्ताणं वमन करके॥

१५३ इन के अतिरिक्त एक अव्यय समास भी होता है परन्तु उसका प्रयोग बहुत कम देखने में आता है; जैसे—अणुगंगं गंगा के साथ साथ, आणुपुव्विं = अनुपूर्वी के क्रम से इत्यादि ॥

१५४ समासों का आपस में अथवा शब्दों के साथ मिल कर फिर समास हो सक्ता है; जैसे—पंचिंदियजीवा पांच इन्द्रियों वाले जीव। यहां पहिले पंचिंदिय विशेषण समास है फिर पंचिंदिय और जीव मिल कर संज्ञा समास हो गया॥ सत्थकोस-हत्थे शस्त्रों का कोश[1] है हाथ में जिसके। यहां पहिले सत्थकोस संज्ञा समास है—सत्थाणं कोसे = शस्त्रों का कोश, फिर सत्थ-कोस और हत्थ मिल कर विशेषण समास हो गया ॥

सन्धिप्रकरण

१५५ जब दो स्वर एक दूसरे के साथ ही आवें तो उन में कुछ विकार हो जाता है; उस विकार को सन्धि कहते हैं। उसके यह नियम हैं :—

१५६ जब अ[2] और अ इकट्ठे आवें तो उन दोनों के स्थान में आ हो जाता है जैसे—जीव+अजीव=जीवाजीव, व+अधि= वाधि ॥

१५७ जब अ के परे अ हो और उस के पीछे अनुस्वार या संयुक्त वर्ण[3] (दुत्त अक्खर) हो तो अ और अ मिल कर अं हो जाता है जैसे—

भरण+अंत=मरणंत; मरण है अन्त जिसका

उत्तर+अड्ढ=उत्तरड्ढ; उत्तरार्ध, उत्तर का आधा हिस्सा

१५८ जब अ के परे इ हो तो दोनों को मिल कर ए हो जाता है जैसे :—

---

१ जर्राही के औज़ारों का बक्स (Surgical bose)। २ यहां पर अ, इ, उ कहने से दोनों प्रकार के अर्थात् छोटे बड़े अभा इई उऊ का ग्रहण किया जाता है ॥

३ क्ख, क्क, ग्ग, ग्घ, क्क, त्त आदि संयुक्त वर्ण या दुत्त अक्खर कह-लाते हैं ॥

उस एक शब्द को समास कहते हैं; जैसे—जणसद्दे (जणस्स सद्दे = आदमी का शब्द), भत्तपाणवेला (भत्तपाणस्स वेला = खाने पीने का समय), जियलोहे (जिए लोहे जेणं = जीता है लोभ जिसने ऐसा), सेयंबरे (सेयं अंबरं जस्स = श्वेत कपड़ा है जिसका ऐसा अर्थात् श्वेताम्बर) ॥

१५१ समास दो प्रकार के होते हैं संज्ञा और विशेषण।

संज्ञा समास कई प्रकार से बनते हैं।

१ जब दोनों संज्ञाएं प्रथमा विभक्ति वाली हों। ऐसे समास प्रायः बहुवचन में आते हैं,जैसे—जीवाजीव (जीवे य अजीवे य = जीव और अजीव), नरपसूणं (नरे य पसू य नरपसूओ तेसिं नरपसूणं = आदमी और पशु उनका = नर पशुओं का) ॥

२ जब पहिली संज्ञा द्वितीया से लेकर सप्तमी पर्यन्त किसी विभक्ति की हो और दूसरी संज्ञा प्रथमा विभक्ति की हो जैसे –गिहगए (गिहं गए = घर को गया हुआ), संजमसंजुत्ते (संजमेण संजुत्ते = संयम से संयुक्त), सुहधम्मे (सुहाए धम्मे = सुख के लिये धर्म), चोरभयं (चोराओ भयं = चोर से डर) पुण्णफलं (पुण्णस्स फलं = पुण्य का फल), गीयकुसले (गीयंसि कुसले = गीत गाने में कुशल)

३ जब पहिला शब्द विशेषण हो और दूसरा संज्ञा, और उन में विशेषण विशेष्य संबन्ध हो; जैसे—नीलुप्पलं (नीलं उप्पलं = नीला कमल)।

१५२ विशेषण समास भी कई प्रकार से बनते हैं

१ दो विशेषणों को मिलाने से, जैसे—सेयरत्ते (सेए रत्ते = श्वेत-रक्त) ॥

२ जब दोनों शब्द इसतरह मिलें कि उन में "ज" शब्द की द्वितीया से सप्तमी पर्यन्त किसी विभक्ति का सम्बन्ध हो जैसे उप्पण्णसंसए (उप्पण्णे संसए जस्स = पैदा हुआ है संशय जिसके = संशय वाला), जियकोहे (जिए कोहे जेणं = जीता है क्रोध जिसने = जीते हुए क्रोध वाला), पंचिंदिए (पंच इंदियाणि जस्स = पांच हैं इन्द्रियां जिसके = पांच इन्द्रियों वाला) ॥

(पुं०) पंचम, (स्त्री०) पंचमी पांचवीं; (पुं०) अय, (स्त्री०) अया बकरी; (पुं०) दारय, (स्त्री०) दारिया बालिका।

१६५ भावप्रत्यय जब किसी शब्द के साथ त्त या-त्तण लगाया जावे तो उस का भाव अर्थ हो जाता है जैसे—देव से देवत्त देवपना, पुत्त से पुत्तत्त पुत्रपना, आयरिय से आयरियत्त या आयरियत्तण आचार्यपना तक्कर से तक्करत्तण चोरपना॥

१६६ स्वामित्व प्रत्यय जब किसी संज्ञा के साथ-वंत या मंत जोड़ा जाए तो उस का अर्थ उस वस्तु का स्वामी या उस वस्तुवाला हो जाता है जैसे—धण से धणवंत धनवाला, गुण से गुणवंत गुण वाला, मइ से मइमंत मतिवाला, बुद्धिमान्, इत्यादि॥

१६७ प्रत्यय और भी बहुत हैं परन्तु उन के लिखने की यहां कुछ आवश्यकता नहीं॥

वाक्यप्रकरण

१६८ गद्य लिखने में शब्द प्रायः उसी क्रम से रक्खे जाते हैं जैसे हिन्दी गद्य लिखने में जैसे—

देवदिण्णो गच्छइ[१]।　　　　　　तक्करे धणं चोरइ।
देवदत्त जाता है　　　　　　　　चोर धन को चुराता है

अहं कूवाओ जलं कड्ढामि। मैं कूएं से जल निकालता हूं

१६९ पद्य अर्थात् श्लोकों में शब्दों का स्थान नियत नहीं है।

सुणेह　मे　एगग्गमणा　मग्गं　बुद्धेहिं　देसियं।
सुनो　मुझसे　एकाग्र मन　मार्ग को जिनों से　बतलाया हुआ

अर्थात् जिन भगवान के कहे हुए मार्ग को मुझसे एकाग्रमन होकर सुनो॥

---

[१] दिण्ण = दत्त = दिया हुआ। उमादीन, मातादीन आदि हिन्दू नामों में "दीन" शब्द प्राकृत "दिण्ण" शब्द से निकला है न कि अरबी "दीन" शब्द से जैसा कि मुसलमान नामों में॥

राय+इसि=रा (य) एसि=राएसि; राजर्षि
महा+इसि=महेसि; महर्षि

१५९ जब अ के परे इ हो और उस के परे अनुस्वार या दुत्त अक्षर हो तो अ और इ मिल कर इ हो जाता है जैसे:—
देव+इंद=देविंद देवेन्द्र, देवों का राजा
महा+इड्ढी=महिड्ढी बड़ी ऋद्धि

१६० जब अ के परे उ हो तो दोनों मिल कर ओ हो जाता है जैसे—
सीय+उदग=सीओदग शीत जल
महा+ऊसव=महोसव बड़ा उत्सव, महोत्सव

१६१ जब अ के परे उ हो और उस के परे अनुस्वार या दुत्त अक्षर हो तो अ और उ मिल कर उ हो जाते हैं जैसे—
पुरिस+उत्तम=पुरिसुत्तम उत्तम पुरुष
जिण्ण+उज्जाण=जिण्णुज्जाण पुराना बाग

१६२ जब अनुस्वार के परे कोई स्वर हो तो अनुस्वार का म् हो कर उस स्वर में मिल जाता है जैसे—
धम्मं आइक्खइ=धम्ममाइक्खइ वह धर्म का उपदेश करता है
फलं इच्छइ=फलमिच्छइ वह फल चाहता है

१६३ कभी कभी दो शब्दों का समास करने में, जिनमें से दूसरे शब्द के आदि में कोई स्वर हो, एक अनुस्वार ऊपर से लगा दिया जाता है जो उपर्युक्त नियम से म् हो कर दूसरे शब्द के आदि के स्वर से मिल जाता है जैसे—
अग्गि इव=अग्गिमिव अग्नि की तरह
दीह अद्धा=दीहमद्धा लम्बे रास्ते वाली

प्रत्यय

१६४ स्त्री प्रत्यय जब पुल्लिङ्ग शब्द के अन्त में अ हो तो अ को ई (और कभी आ) से बदलने से वह शब्द स्त्रीलिङ्ग हो जाता है जैसे—(पुं०) भुंजमाण, (स्त्री०) भुंजमाणी भोगती हुई;

अन्नपाणं विणस्सउ, तुब्भं किंचि न दलइस्सामो।"
अन्न पान नाश हो जाये तुमको कुछ भी न देंगे
तएणं हरिएसबले वयासी, "जइ
तब हरिकेशबल बोला अगर
तुब्भे मम एयं अन्नपाणं न दलइस्सह, तया
तुम मुझे यह अन्न पान न दोगे तब
तुब्भ अणेण जण्णेणं कोवि लाभो न भविस्सइ।"
तुम्हें इस यज्ञ से कोई लाभ न होगा
तएणं ते बंभणा रायकुमारे सद्दावेंसु,
तब उन ब्राह्मणों ने राजकुमारों को बुलाया
ते रायकुमारा तं इसिं तालेंसु॥
उन राजकुमारों ने उस ऋषि को मारा पीटा

नमुक्कारमंतं

नमस्कार मन्त्र

नमो अरिहंताणं। नमो सिद्धाणं।
नमस्कार हो अर्हन्तों के ताईं नमस्कार (हो) सिद्धों के ताईं
नमो आयरियाणं। नमो उवज्झायाणं।
नमस्कार (हो) आचार्यों के ताईं नमस्कार (हो) उपाध्यायों के ताईं
नमो लोए सव्वसाहूणं।
नमस्कार (हो) लोक में सब साधुओं के ताईं
एस पंच नमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो।
यह पञ्च नमस्कार (रूप मन्त्र) सर्व पापों का नाश करने वाला है
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं॥
मंगलों में से और सब में से प्रथम होता है मंगल

लोगस्स उज्जोयगरे

लोक के उद्योत करने वाले

लोगस्स उज्जोयगरे, धम्म तित्थयरे जिणे।
लोक के उद्योत करने वालों को, धर्म के तीर्थंकरों को जिनों को
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली॥१॥
अर्हन्तों को (मैं) सराहूंगा चौबीस ही केवलियों को
उसभमजियं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं
ऋषभ को अजित को और(मैं)वन्दता हूं सम्भवको अभिनन्दको और सुमतिको

जइत्ता विउले जण्णे भोइत्ता समणमाहणे।
यज्ञ करके बहुत यज्ञों को जिमा कर श्रमण ब्राह्मणों को
दच्चा भुच्चा य जिट्ठा य तओ गच्छसि खत्तिया!॥
देकर खाकर और यज्ञ करके और तब जाता है हे क्षत्रिय

अर्थात् हे क्षत्रिय! बहुत से यज्ञ करके श्रमण ब्राह्मणों को जिमाकर, (दान) देकर भोग भोगकर और यज्ञ करके (इसके) पीछे तू ने जाना॥

अभ्यास ध्यान से पढ़ो :—

सोवागकुलसंभूए हरिएसबले नामं एगे भिक्खू
चण्डाल कुल में उत्पन्न हरिकेशबल नामा एक साधु
आसी। से हरिएसबले अन्नया कयाइ भिक्ख-
था वह हरिकेशबल एक दफा भिक्षा के
ट्ठाए एगं बंभणजण्णवाडयं उवागए। ते
अर्थ एक ब्राह्मणों की यज्ञ शाला में आया. वह
अणारिया तं तवोबलेणं परिसोसियं एज्जमाणं
अनार्य लोग उस तपोबल से सूखे हुए को आता हुआ
पासित्ता उवहसिंसु। एवं उवहसियसमाणे
देख कर हंसे इस प्रकार हंसी किया हुआ
से हरिएसबले एवं वयासी, "एए णं हिंसगा,
वह हरिकेशबल यूं बोला यह हिंसक
अजिय इंदिया, अबंभचारिणो नरा संति।"
अजितेन्द्रिय अब्रह्मचारी पुरुष हैं
तए णं ते बंभणा हरिएसबलं पुच्छिंसु, "तुमं
तब उन ब्राह्मणों ने हरिकेशबल को पूछा तू
के असि? केणट्ठेणं इह मागए?"।
कौन है किस अर्थ से यहां आया है
तए णं से हरिएसबले वयासी, "अहं समणे
तब वह हरिकेशबल बोला मैं श्रमण
भिक्खू, भिक्खकाले अन्नस्स अट्ठा इहमागए।
भिक्षु हूं भिक्षा के समय में अन्न के अर्थ से यहां आया हूं
तए णं ते बंभणा वयासी, "अयं भोयणं
तब वह ब्राह्मण बोले यह भोजन
बंभणाणं उवक्खडं अत्थि; अवि एयं
ब्राह्मणों के लिये बना है चाहे यह

RDHA-MĀGADHĪ READER.

१. मियापुत्ते दारए।

तेणं कालेणं तेणं समएणं मियागामे नामं नयरे होत्था
ण्ओ)। तस्स णं मियागामस्स नयरस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे
भाए चंदणपायवे नामं उज्जाणे होत्था (वण्णओ)। तत्थ णं
मस्स जक्खस्स जक्खाययणे होत्था (वण्णओ) ॥१॥

तत्थ णं मियागामे नयरे विजए नामं खत्तिए राया परिव-
सइ। तस्स णं विजयस्स खत्तियस्स मिया नामं देवी होत्था। तस्स
जयस्स खत्तियस्स पुत्ते मियाए देवीए अत्तए मियापुत्ते नामं
होत्था जाइअंधे, जाइमूए, जाइबहिरे, जाइपंगुले हुंडे य वायवे
त्थि णं तस्स दारगस्स हत्था वा पाया वा कण्णा वा अच्छी
सा वा केवलं तेसिं अंगोवंगाणं आगइमित्ते होत्था ॥२॥

तए णं सा मिया देवी तं मियापुत्तं दारगं रहस्सियंसि भूमि-
रहस्सिएणं भत्तपाणेणं पडिजागरमाणी २ विहरइ ॥३॥

तत्थ णं मियागामे नयरे एगे जाइअंधे पुरिसे परिवसइ। से
गेणं सचक्खुएणं पुरिसेणं पुरओ दंडएणं पगड्ढिज्जमाणे २
हडाहडसीसे मच्छियाचडगरेणं अन्निज्जमाणमग्गे मियागामे
गिहे गिहेणं कालुणं वडियाए वित्तिं कप्पेमाणे विहरइ ॥४॥

तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे समोसढे।
सा निग्गया। तए णं से जाइअंधपुरिसे तं महयाजणसद्दं सुणेइ
। तं सचक्खुयं पुरिसं एवं वयासी, "किण्णं देवाणुप्पिया! अज्ज

पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥२॥
पद्मप्रभ को सुपार्श्व को जिन को और चन्द्रप्रभ को (मैं) वन्दता हूं
सुविहिं च पुप्फदंतं, सीयल-सिज्जंस-वासुपुज्जं च।
सुविधिको और पुष्पदन्तको शीतलको, श्रेयांसको वासुपूज्यको और
विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥
विमलको अनन्तको और जिन को धर्म को शान्तिको और वन्दता हूं
कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च।
कुंथुको अर को और मल्लि को वन्दता हूं मुनिसुव्रतको नमिजिनको और
वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥
वन्दता हूं अरिष्टनेमिको पार्श्वको तथा वर्धमानको और
एवं मए अभिसंथुआ, विहुय रय-
इसप्रकार मुझसे स्तुति किये हुए दूर कर दिये हैं कर्म रूपी
मला पहीणजरमरणा।
धूलि की मैल जिनको नष्ट होगया है बुढ़ापा और मरण जिनका
चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥
चौबीस ही जिन वर तीर्थंकर मुझपर प्रसन्न होवें
कित्तिय-वंदिय-महिया, जेए लोगस्स उत्तमा सिद्धा।
स्तुति, वन्दना और पूजा किए गए जिनसे लोक के उत्तम सिद्ध हैं
आरुग्ग-बोहि-लाभं, समाहिवरं मुत्तमं दिंतु ॥६॥
आरोग्य और ज्ञान की प्राप्ति समाधिवर उत्तम देवें
चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा।
चन्द्रों से भी अधिक निर्मल सूर्यों से भी अधिक प्रकाश करने वाले
सागर वर गंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥
समुद्र की तरह बड़े गंभीर सिद्ध सिद्धि मुझे दिखावें (देवें)

ARDHA-MĀGADHĪ READER.

१. मियापुत्ते दारए।

तेणं कालेणं तेणं समएणं मियागामे नामं नयरे होत्था (वण्णओ)। तस्स णं मियागामस्स नयरस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए चंदणपायवे नामं उज्जाणे होत्था (वण्णओ)। तत्थ णं सुहम्मस्स जक्खस्स जक्खाययणे होत्था (वण्णओ) ॥१॥

तत्थ णं मियागामे नयरे विजए नामं खत्तिए राया परिवसइ। तस्स णं विजयस्स खत्तियस्स मिया नामं देवी होत्था। तस्स णं विजयस्स खत्तियस्स पुत्ते मियाए देवीए अत्तए मियापुत्ते नामं दारए होत्था जाइअंधे, जाइमूए, जाइबहिरे, जाइपंगुले हुंडे य वायवे य। नत्थि णं तस्स दारगस्स हत्था वा पाया वा कण्णा वा अच्छी वा नासा वा केवलं तेसिं अंगोवंगाणं आगइमित्ते होत्था ॥२॥

तए णं सा मिया देवी तं मियापुत्तं दारगं रहस्सियंसि भूमिघरंसि रहस्सिएणं भत्तपाणेणं पडिजागरमाणी २ विहरइ ॥३॥

तत्थ णं मियागामे नयरे एगे जाइअंधे पुरिसे परिवसइ। से णं एगेणं सचक्खुएणं पुरिसेणं पुरओ दंडएणं पगड्ढिज्जमाणे २ फुट्टहडाहडसीसे मच्छियाचडगरेणं अन्निज्जमाणमग्गे मियागामे नयरे गिहे गिहेणं कलुणं रडवडियाए वित्तिं कप्पेमाणे विहरइ ॥४॥

तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे समोसढे। परिसा निग्गया। तए णं से जाइअंधपुरिसे तं महयाजणसद्दं सुणेइ २ त्ता तं सच्चक्खुयं पुरिसं एवं वयासी, "किण्णं देवाणुप्पिया! अज्ज

मियागामे नयरे इंदमहे इ वा खंदमहे इ वा जण्णं एवं महया जणसद्दं
सुणेमि ?

"एवं खलु देवाणुप्पिया ! समणे भगवं महावीरे जाव समो-
सढे" ॥५॥

तए णं से जाइअंधपुरिसे सच्चक्खुयं पुरिसं एवं वयासी,
"गच्छामो णं देवाणुप्पिया ! अम्हे वि समणं भगवं महावीरं पज्जु-
वासामो" ॥६॥

तए णं से जाइअंधपुरिसे सचक्खुएणं पुरिसेणं पुरओ
दंडएणं पगड्डिज्जमाणे २ जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवा-
गच्छइ २ त्ता तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ २ त्ता वंद-
नमंसइ जाव पज्जुवासइ ॥७॥

तए णं समणे भगवं महावीरे तीसे महइमहालियाए परिसा-
धम्मं कहेइ, परिसा जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडि-
गया ॥८॥

तए णं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इं-
भूई नामं अणगारे तं जाइअंधपुरिसं पासित्ता समणं भगवं महावी-
एवं वयासी, "अत्थि णं भंते ! केइ पुरिसे जाइअंधे जाइअंधरूवे ?

"हंता अत्थि"

"कहिं णं भंते ! से पुरिसे जाइअंधे जाइअंधरूवे ?"

"एवं खलु गोयमा ! इहेव मियागामे नयरे विजयस्स खत्ति-
यस्स पुत्ते मियाए देवीए अत्तए मियापुत्ते नामं दारए जाइअं-
जाव[1] विहरइ" ॥९॥

---

1. Supply the rest from §§ 2 and 3

तए णं से भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ २ त्ता एवं वयासी, "इच्छामि णं भंते ! अहं तुब्भेहिं अब्भणुगणाए समाणे मियापुत्तं दारयं पासित्तए" ॥

"अहासुहं देवाणुप्पिया !" ॥१०॥

तए णं से भगवं गोयमे जेणेव मियाए देवीए गिहे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता मियादेविं एवं वयासी, "अहं णं देवाणुप्पिए ! तव पुत्तं पासिउं हव्वमागए" ॥११॥

तए णं सा मियादेवी मियापुत्तस्स दारयस्स अणुमग्गजाए चत्तारि पुत्ते सव्वालंकारविभूसिए करेइ २ त्ता भगवओ गोयमस्स पाएसु पाडेइ २ त्ता एवं वयासी, "एए णं भंते ! मम पुत्ते पासह" ॥१२॥

तए णं से भगवं गोयमे मियादेविं एवं वयासी, "नो खलु देवाणुप्पिए ! अहं एए तव पुत्ते पासिउं हव्वमागए। तत्थ णं जे से तव जेट्ठे पुत्ते मियापुत्ते दारए जाइअंधे अंधरूवे, जं णं तुमं रहस्सियंसि भूमिघरंसि रहस्सिएणं भत्तपाणेणं पडिजागरमाणी विहरसि तं अहं पासिउं हव्वमागए" ॥१३॥

तए णं सा मियादेवी भगवं गोयमं एवं वयासी, "से के णं भंते ! तहारूवे णाणी वा तवस्सी वा जेणं एयमट्ठे मम रहस्सकए तुब्भं हव्वमक्खाए ?"

तए णं भगवं गोयमे मियं देविं एवं वयासी, "एवं खलु देवाणुप्पिए ! मम धम्मायरिए समणे भगवं महावीरे सव्वण्णू सव्वदरिसी, तओ णं अहं एयमट्ठं जाणामि" ॥ १४ ॥

जाव च णं मिया देवी भगवया गोयमेणं सद्धिं एयमट्ठं संलवइ ताव च णं मियापुत्तस्स दारयस्स भत्तपाणवेला जाया यावि होत्था ॥ १५ ॥

तए णं सा मियादेवी भगवं गोयमं एवं वयासी, "तुब्भे णं भंते
इह चेव चिट्ठह जा णं अहं तुब्भं मियापुत्तं दारयं उवदंसेमि" त्ति कट्टु ज-
णेव भत्तपाणघरए तेणेव उवागच्छइ २ त्ता वत्थपरियट्टयं करे-
इ २ त्ता कट्ठसगडियं गिण्हइ २ त्ता णं विउलेणं असणेणं पाणेणं
खाइमेणं साइमेणं भरेइ २ त्ता जेणेव भगवं गोयमे तेणेव उवागच्छइ
२ त्ता एवं वयासी, "एह णं तुब्भे भंते ! मम पिट्ठओ समणुगच्छह
जा णं तुब्भं मियापुत्तं दारयं उवदंसेमि" ॥ १८ ॥

तए णं सा मियादेवी जेणेव भूमिघरे तेणेव उवागच्छइ २
त्ता चउप्पुडेणं वत्थेणं मुहं बंधमाणी भगवं गोयमं एवं वयासी,
"तुब्भे वि णं भंते ! मुहपोत्तियाए मुहं बंधह" ॥ तए णं भगवं गोयमे
मियाए देवीए एवं वुत्ते समाणे मुहपोत्तियाए मुहं बंधइ ॥ १९ ॥

तए णं सा मियादेवी परंमुही भूमिघरस्स दुवारं विहाडेइ ।
तओ णं गंधे निग्गच्छइ से जहा नामए अहिमडे इ वा जाव तओ वि अणि-
ट्ठतराए चेव ॥ १८ ॥

तए णं से मियापुत्ते दारए तस्स विउलस्स असणपाणखाइमसाइमस्स
गंधेणं अभिभूए समाणे तंसि असणपाणखाइमसाइमंसि मुच्छिए गढिए ॥ १९ ॥

तए णं तं असणपाणखाइमसाइमं आसाएणं विपरिणामइ २ त्ता खिप्पा-
मेव विद्धंसेइ । तओ पच्छा पूयत्ताए सोणियत्ताए य परिणामेइ । तं पि
य णं पूयं च सोणियं च आहारेइ ॥ २० ॥

तए णं भगवओ गोयमस्स तं मियापुत्तं दारयं पासित्ता
अयमेयारूवे अज्झत्थिए समुप्पज्जित्था, "अहो णं इमे दारए पुरा-
कडाणं असुभाणं कम्माणं पावफलं पच्चणुभवमाणे विहरइ
न मे दिट्ठा नरगा वा नेरइया वा, पच्चक्खं खलु अयं पुरिसे नरय-
पडिरूवियं वेयणं वेएइ" त्ति कट्टु मियं देविं आपुच्छइ २ त्ता मियाए
देवीए गिहाओ निक्खमइ २ त्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव

उवागच्छइ २ त्ता एवं वयासी, "अहं खलु भंते! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाए समाणे जेणेव मियाए देवीए गिहे तेणेव उवागच्छामि जाव[1] आहारेइ। से णं भंते! पुरिसे पुव्वभवे के आसी? किंनामए? किंगोयए? किं समायरित्ता एवं विहरइ?" ॥ २१ ॥

"एवं खलु गोयमा! इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे सयदुवारे नामं नयरे होत्था (वण्णओ) तत्थ णं सयदुवारे नयरे धणवई नामं राया होत्था (वण्णओ) तस्स णं सयदुवारस्स नयरस्स दाहिणपुरत्थिमे दिसीभाए विजयवड्ढमाणे नामं खेडए होत्था। तस्स णं विजयवड्ढमाणस्स खेडस्स पंच गामसयाइं आभोए यावि होत्था ॥ २२ ॥

विजयवड्ढमाणे खेडे एकाई नामं रट्ठकूडे होत्था अहम्मिए जाव दुप्पडियाणंदे। से एकाई रट्ठकूडे विजयवड्ढमाणस्स खेडस्स पंच गामसयाइं बहूहिं करेहिं भरेहिं वुड्ढीहिं उक्कोडियाहिं य उव्वीलेमाणे निद्धणे करेमाणे विहरइ ॥२३॥

तए णं से एकाई रट्ठकूडे विजयवड्ढमाणस्स खेडस्स बहूणं राईसरतलवरसत्थवाहाणं अण्णेसिं च बहूणं गामेल्लगपुरिसाणं बहूसु कज्जेसु य कारणेसु य सुणेमाणे भणइ "न सुणेमि", असुणेमाणे भणइ "सुणेमि" त्ति। एवं पासमाणे भासमाणे गिण्हमाणे जाणमाणे ॥ एवं से एकाई रट्ठकूडे बहुं पावकम्मं बंधमाणे विहरइ ॥२४॥

तए णं तस्स एकाइस्स रट्ठकूडस्स सरीरगंसि अण्णया कयाइ जमगसमगं सोलस रोगायंका पाउब्भूया तं जहा सासे १ कासे २ जरे ३ दाहे ४ कुच्छिसूले ५ भगंदरे ६ अरिसए ७ अजीरए ८

---

1. Supply the rest from §§ 11-20.

दिट्ठिमूले ९ मुद्धमूले १० अकारिए ११ अच्छिवेयणा १२ कण्णवेयणा १३ कंडुए १४ उदरे १५ कोढे १६ ॥२५॥

तए णं से एक्काई रट्ठकूडे सोलसहिं रोगायंकेहिं अभिभूए समाणे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी, "गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! विजयवद्धमाणे खेडे सिंघाडग-तिय-चउक्क-चच्चर-महापहेसु महया २ सद्देणं उग्घोसेमाणा एवं वयह, 'एवं खलु देवाणुप्पिया! एक्काइस्स रट्ठकूडस्स सरीरगंसि सोलस रोगायंका पाउब्भूया, तं जहा सासे जाव कोढे। तं जइ णं इच्छइ विज्जो वा विज्जपुत्ते वा, जाणुए वा जाणुयपुत्ते वा एक्काइस्स रट्ठकूडस्स सोलसण्हं रोगायंकाणं एगमवि रोगायंकं उवसामित्तए, तस्स णं एक्काई रट्ठकूडे विपुलं अत्थसंपयाणं दलयइ। एवं दोच्चं पि तच्चं पि उग्घोसेह" ॥ ते कोडुंबियपुरिसा तहेव करेंति ॥२६॥

तए णं विजयवद्धमाणे खेडे इमं एयारूवं उग्घोसणं सोच्चा निसम्म बहवे विज्जा सत्थकोसहत्थगया सएहिं २ गिहेहिंतो पडिनिक्खमंति २ त्ता जेणेव एक्काई रट्ठकूडे तेणेव उवागच्छंति २ त्ता एक्काइसरीरगं परामुसंति २ त्ता तेसिं रोगाणं निदाणं पुच्छंति २ त्ता एक्काइरट्ठकूडस्स बहूहिं अब्भंगेहिं, उव्वट्टणेहिं, सिणेहपाणेहिं, वमणेहिं, विरेयणेहिं, सिंचणेहिं, अवणहाणेहिं, अणुवासणेहिं, वत्थिकम्मेहिं, निरूहेहिं, सिरावेहेहिं, तच्छणेहिं पच्छणेहिं, छल्लीहिं, मूलेहिं, कंदेहिं, पत्तेहिं, पुप्फेहिं, फलेहिं, बीएहिं, सिलियाहिं गुलियाहिं, ओसहेहिं, भेसज्जेहिं य इच्छंति तेसिं सोलसण्हं रोगायंकाणं एगमवि रोगायंकं उवसामित्तए। नो चेव णं संचाएंति उवसामित्तए ॥ २७ ॥

तए णं ते बहवे विज्जा जाहे नो संचाएंति तेसिं सोलसण्हं रोगायंकाणं एगमवि रोगायंकं उवसामित्तए ताहे संता तंता परितंता जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया ॥ २८ ॥

तए णं से एकाई रट्ठकूडे सोलसहिं रोगायंकेहिं अभिभूए समाणे रज्जे य रट्ठे य मुच्छइ। रज्जं पत्थमाणे अभिलसमाणे अट्ट-दुहट्टवसट्टे अड्ढाइज्जाइं वाससयाइं परमाउं पालइ २ त्ता कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उक्कोसेणं सागरोवम-ट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववण्णे ॥ २९ ॥

से णं तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता इहेव मियग्गामे नयरे मियाए देवीए कुच्छिंसि पुत्तत्ताए उववण्णे। तए णं तीसे मियाए देवीए सरीरे वेयणा पाउब्भूया उज्जला जाव जलंता। जं पभिइं च णं मिया-पुत्ते दारए मियाए देवीए कुच्छिंसि गब्भत्ताए उववण्णे, तं पभिइं च णं मिया देवी विजयस्स खत्तियस्स अणिट्ठा, अकंता अप्पिया जाया यावि होत्था ॥ ३० ॥

तए णं तीसे मियादेवीए अन्नया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकाल-समयंसि कुडुंबजागरियं जागरमाणीए इमे अज्झत्थिए समुप्पण्णे, "एवं खलु अहं विजयस्स खत्तियस्स पुव्विं इट्ठा वीससिया अणुमया आसी। जं पभिइं च णं ममं इमे गब्भे कुच्छिंसि गब्भत्ताए उववण्णे तं पभिइं च णं विजयस्स खत्तियस्स अहं अणिट्ठा अकंता जाया यावि होत्था। न इच्छइ विजए खत्तिए मम नामं च गोयं वा गि-ण्हित्तए किमंग पुण दंसणं वा परिभोगं वा करित्तए। तं सेयं खलु मम एयं गब्भं बहूहिं गब्भसाडणेहिं य पाडणेहिं य गालणेहिं य मारणे-हिं य साडित्तए वा"। एवं संपेहेइ २ त्ता बहूणि खाराणि य कडुयाणि य तिक्खाणि य गब्भसाडणाणि खायमाणी पीयमाणी इच्छइ तं गब्भं साडित्तए। नो चेव णं से गब्भे सडइ वा पडइ वा। तए णं सा मिया देवी जाहे नो संचाएइ तं गब्भं साडित्तए वा पाडित्तए वा ताहे संता तंता अवसवसा तं गब्भं दुहंदुहेणं परिवहइ ॥ ३१ ॥

तए णं सा मिया देवी नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं दारयं पयाया से दारए जाइअंधे जाव आगिइमित्ते । तए णं सा मिया देवी तं दारगं अंधरूवं पासइ २ त्ता भीया अम्मधाइं सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी, "गच्छह णं देवाणुप्पिए! तुमं एयं दारगं एगंते उक्करुडियाए उज्झाहि" ॥ ३२ ॥

तए णं सा अम्मधाई मियाए देवीए 'तह' त्ति एयमट्ठं पडि-सुणेइ २ त्ता जेणेव विजए खत्तिए तेणेव उवागच्छइ २ त्ता एवं वयासी, "एवं खलु सामी! मिया देवी नवण्हं मासाणं जाव आगिइ-मित्ते जाव भीया ममं सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी गच्छह णं जाव उज्झाहि तं संदिसह णं सामी! तं दारगं अहं एगंते उज्झामि उदाहु मा?" ॥३३॥

तए णं से विजए खत्तिए तीसे अम्मधाईए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा तहेव संभंते समाणे जेणेव मियादेवी तेणेव उवागच्छइ २ त्ता मियं देविं एवं वयासी, "एस णं देवाणुप्पिए तुब्भं पढमे गब्भे। तं जइ णं तुमं एयं एगंते उक्करुडियाए उज्झासि तओ णं तुब्भं पया नो थिरा भविस्सइ तेणं तुमं एयं दारयं रहस्सियंसि भूमिघरंसि रहस्सिएणं भत्तपाणेणं पडिजागरमाणी २ विहराहि तेणं तुब्भं पया थिरा भविस्सइ ॥३४॥

तए णं सा मिया देवी विजयस्स खत्तियस्स 'तह' त्ति एय-मट्ठं विणएणं पडिसुणेइ २ त्ता तं दारगं रहस्सियंसि भूमिघरंसि रहस्सि-एणं भत्तपाणेणं पडिजागरमाणी २ विहरइ ॥

एवं खलु गोयमा! मियापुत्ते दारए पुरा पुराणाणं असुभाणं कम्माणं पावफलं पच्चणुभवमाणे विहरइ ॥३५॥

"मियापुत्ते णं भंते! दारए इओ चुए कालमासे कालं किच्चा कहिं गच्छिहिइ? कहिं उववज्जिहिइ?"

"गोयमा! मियापुत्ते दारए बावीसं वासाइं परमाउयं पालइत्ता कालमासे कालं किच्चा इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे वेयड्ढगिरिपाय-

मूले सीहकुलंसि सीहत्ताए उववज्जिहिइ। से णं तत्थ सीहे भविस्सइ अहम्मिए जाव साहसिए बहुपावं समज्जिणाइ। से कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उक्कोसेणं सागरोवमट्ठिइएसु नेरइएसु उववज्जिहिइ। से तओ अणंतरं उवट्टित्ता सिरिसिवेसु उपवज्जिहिइ। तओ अणंतरं से जाइं इमाइं जलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं मच्छकच्छभगाहामगरसुंसुमारादीणं अद्धतेरस जाइकुल-कोडीजोणिपमुहसयसहस्साइं तत्थ एगमेगंसि जोणिविहाणंसि अणेगसयसहस्सखुत्तो भुज्जो २ तत्थेव पच्चायाइस्सइ। से णं तओ अणंतरं उवट्टित्ता एवं चउप्पएसु भुयपरीसप्पेसु खेयरेसु चउरिंदियेसु तेइंदियेसु बेइंदियेसु वणप्फइकडुयरुक्खेसु कडुयदुद्धिएसु वाउतेउआउपुढवीसु अणेगसयसहस्सखुत्तो पच्चायाइस्सइ ॥३६॥

से णं तओ अणंतरं उवट्टित्ता सुपइट्ठपुरे णयरे गोणत्ताए पच्चायाहिइ से णं तत्थ उम्मुक्कबालभावे अन्नया कयाइ पढमपाउसंसि गंगाए महाणईए खलीणमट्टियं खणमाणे तडए पडिए समाणे कालमासे कालं किच्चा तत्थेव सुपइट्ठपुरे नयरे सेट्ठिकुलंसि पुत्तत्ताए पच्चायाइस्सइ से णं तत्थ उम्मुक्कबालभावे जोव्वणगमणुपत्ते तहारूवाणं थेराणं अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वइए सामण्णपरियागं पाउणित्ता आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे देवत्ताए उववज्जिहिइ। से णं तओ अणंतरं चयइ त्ता महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ ॥ ३७॥

एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव सम्पत्तेणं पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्ति बेमि" ॥ ३८ ॥

(विवागसुत्तस्स पढमे सुयक्खंधे पढमं अज्झयणं)

२. "उसभनिव्वाणं"

जे से हेमन्ताणं तच्चे मासे पंचमे पक्खे माहबहुले, तस्स णं माहबहुलस्स तेरसीपक्खेणं दसहिं अणगारसहस्सेहिं संपरिवुडे अट्ठावयसेलसिहरंसि चोद्दसमेणं भत्तेणं अपाणएणं संपलियंकनिसण्णे पुव्वण्हकालसमयंसि अभिइणा नक्खत्तेणं जोगमुवागएणं सुसमदुसमाए एगुणणउइए पक्खेहिं सेसेहिं उसभे अरहा वीइक्कंते जाव सव्वदुक्खपहीणे ॥ १ ॥

जं समयं च णं उसभे अरहा कोसलिए कालगए वीइक्कंते, समुज्जाए य छिण्णजाइ-जरा-मरणबंधणे सिद्धे बुद्धे जाव सव्वदुक्खपहीणे तं समयं च णं सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो आसणे चलिए॥२॥

तए णं से सक्के देविंदे देवराया आसणं चलियं पासइ २ त्ता ओहिं पउंजइ २ त्ता भगवंतं तित्थयरं ओहिणा आभोएइ २ त्ता एवं वयासी, "परिणिव्वुए खलु जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे उसहे अरहा कोसलिए, तं जीयमेयं तीयपच्चुप्पन्नमणागयाणं सक्काणं देविंदाणं देवराईणं तित्थगराणं निव्वाणमहिमं करित्तए। तं गच्छामि णं अहंपि भगवओ तित्थगरस्स परिणिव्वाणमहिमं करेमि" त्ति कट्टु चउरासीईए सामाणियसाहस्सीए तायत्तीसाए तायत्तीसएहिं चउहिं लोगपालेहिं जाव चउहिं चउरासीहिं आयरक्खदेवसाहस्सीहिं अण्णेहिं य बहूहिं सोहम्मकप्पवासीहिं वेमाणिएहिं देवेहिं देवीहिं य सद्धिं संपरिवुडे ताए उक्किट्ठाए देवगईए जाव तिरियमसंखेज्जाणं दीवसमुद्दाणं मज्झं मज्झेणं जेणेव अट्ठावए पव्वए भगवओ तित्थगरस्स सरीरए तेणेव उवागच्छइ २त्ता विमणे निराणंदे अंसुपुण्णणयणे तित्थगरसरीरयं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ २त्ता नच्चासण्णे नाइदूरे सुस्सूसमाणे पज्जुवासइ ॥३॥

तए णं ईसाणे देविंदे देवराया उत्तरड्ढलोगाहिवई अट्ठावीसविमाणसयसहस्साहिवई सूलपाणी वसहवाहणे सुरिंदे अयरंबरवत्थधरे जहा सक्के नियगपरियारेणं सद्धिं संपरिवुडे उवागच्छइ जाव पज्जुवासइ ॥४॥

तए णं सक्के देविंदे देवराया ते बहवे भवणवइ-वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिए देवे एवं वयासी, "खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! नंदणवणाओ सरसाई गोसीसचंदणकट्ठाइं साहरह २त्ता तओ चिगाओ रएह—एगं भगवओ तित्थगरस्स, एगं गणहराणं, एगं अवसेसाणं अणगाराणं । तयाणंतरं भो देवाणुप्पिया ! इहा मिग-उसभ-तुरय-जाव वणलयभत्तिचित्ताओ तओ सिवियाओ विउव्वह" ॥५॥

तए णं सक्के देविंदे देवराया भगवओ तित्थगरस्स विणट्ठ-जरा-मरणस्स सरीरगं सिवियाए आरुहेइ २त्ता चिगाए ठवेइ ॥

तए णं ते बहवे देवा गणहराणं अणगाराणं य सरीरगाइं सिवियाए आरुहेंति २त्ता चिगाए ठवेंति ॥६॥

तए णं से सक्के देविंदे देवराया अग्गिकुमारे देवे सद्दावेइ २त्ता एवं वयासी, "खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! तित्थगरचिगाए गणहर-अणगार-चिगाए य अगणिकायं विउव्वह" ॥

तए णं ते अग्गिकुमारा देवा अगणिकायं विउव्वंति ॥७॥

तए णं वाउकुमारा देवा वाउकायं विउव्वंति, अगणिकायं उज्जालेंति, तित्थगरसरीरगं गणहरसरीरगाइं अणगारसरीरगाइं च झामेंति ॥८॥

तए णं ते देवा सव्वासु चिगासु अगरुतुरुक्कं घयं महुं च साहरंति ॥

तए णं मेहकुमारा देवा ताओ चियगाओ खीरोदएणं निव्वावेंति ॥ ९ ॥

तए णं से सक्के देविंदे देवराया भगवओ तित्थगरस्स उवरिल्लं दाहिणं सकहं गिण्हइ, ईसाणे देविंदे देवराया उवरिल्लं वामं सकहं गिण्हइ, चमरे असुरिंदे असुरराया हेट्ठिल्लं दाहिणं सकहं गिण्हइ, बली वइरोयणिंदे वइरोयणराया हेट्ठिल्लं वामं सकहं गिण्हइ; अवसेसा भवणवइ-जाव वेमाणिया देवा जहारिहं अवसेसाइं अंगमंगाइं केइ जिणभत्तीए, केइ जीयमेयं ति कट्टु, केइ धम्मो त्ति कट्टु गिण्हंति ॥१०॥

तए णं से सक्के देविंदे देवराया ते देवे एवं वयासी, "खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! सव्वरयणामए महइमहालए तओ चेइयथूभे करेह—एगं भगवओ तित्थगरस्स चियगाए, एगं गणहरचियगाए, एगं अवसेसाणं अणगाराणं चियगाए" ॥ ते देवा तहेव करेंति ॥११॥

तए णं ते सव्वे देवा अट्ठाहियं महिमं करेंति २त्ता जेणेव साइं २ विमाणाइं जेणेव साइं २ भवणाइं जेणेव साओ २ सभाओ जेणेव सया २ माणवगचेइयखंभा तेणेव उवागच्छंति २त्ता वइरामएसु गोलवट्टसमुग्गएसु जिणसकहाओ पक्खिवंति २त्ता अग्गेहिं वरेहिं मल्लेहिं य गंधेहिं अच्चेंति ॥१२॥

(जम्बुद्दीवपण्णत्ती)

३. मेहे कुमारे

तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नामं नयरी होत्था (वण्णओ।) ॥ तीसे णं चंपाए नयरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए एत्थ णं पुण्णभद्दे नामं चेइए होत्था (वण्णओ।) ॥ तत्थ णं चंपाए नयरीए कोणिए नामं राया होत्था (वण्णओ) ॥१॥

तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी अज्जसुहम्मे नामं थेरे जाइसंपण्णे बल-रूव-विणय-णाण-दंसण-चरित्त-लाघव-संपण्णे ओयंसी तेयंसी वच्चंसी जसंसी जिय-कोहे जियमाणे जियमाए जियलोहे जिइंदिए जियनिद्दे जियपरीसहे जीवियासा-मरणभय-विप्पमुक्के तवप्पहाणे गुणप्पहाणे एवं करण-चरण-णिग्गह-णिच्छय-अज्जव-मद्दव-लाघव-खंति-गुत्ति-मुत्ति-विज्जा-मंत-बंभचेर-वेय-णय-णियम-सच्च-सोय-णाण-दंसण-चरित्त-प्पहाणे ओराले घोरे घोरव्वए घोरबंभचेरवासी उच्छूढसरीरे संखित्त-विउल-तेयलेसे चउद्दसपुव्वी चउणाणोवगए पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं संप-रिवुडे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे सुहं सुहेणं विहर-माणे जेणेव चंपा नयरी जेणेव पुण्णभद्दे चेइए तेणामेव उवागच्छइ २त्ता अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हइ २त्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥२॥

(तए णं चंपाए नयरीए परिसा निग्गया। कोणिओ निग्गओ। धम्मो कहिओ। परिसा जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया ॥)

तेणं कालेणं तेणं समएणं अज्जसुहम्मस्स अणगारस्स जेट्ठे अंतेवासी अज्जजंबू नामं अणगारे कासवगोत्ते सत्तुस्सेहे अज्जसुह-

समणस्स थेरस्स अदूरसामंते उड्ढंजाणू अहोसिरे झाणकोट्ठोवगए संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥३॥

तए णं से जंबू अणगारे जायसड्ढे जाव संजायसड्ढे ३ उप्पन्नसड्ढे ३ उट्ठेइ २त्ता जेणामेव अज्जसुहम्मे थेरे तेणामेव उवागच्छइ २त्ता अज्जसुहम्मं थेरे तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ २त्ता वंदइ नमंसइ २त्ता अज्जसुहम्मस्स थेरस्स नच्चासन्ने नाइदूरे सुस्सूसमाणे नमंसमाणे अभिमुहे पंजलिउडे विणएणं पज्जुवासमाणे एवं वयासी, "जइ णं भंते समणेणं भगवया महावीरेणं आइगरेणं तित्थगरेणं सयं संबुद्धेणं लोगनाहेणं लोगपईवेणं लोगपज्जोयगरेणं अभयदएणं सरणदएणं चक्खुदएणं मग्गदएणं धम्मदएणं धम्मदेसएणं धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टिणा अप्पडिहय-वर-नाण-दंसणधरेणं जिणेणं जाणएणं बुद्धेणं बोहएणं मुत्तेणं मोयगेणं तिण्णेणं तारएणं सिव-मयल-मरुय-मणंत-मक्खय-मव्वाबाह-मपुणरावत्तयं सासयं ठाणमुवगएणं पंचमस्स अंगस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, छट्ठस्स णं अंगस्स भंते! नायाधम्मकहाणं के अट्ठे पण्णत्ते ?"

"एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं छट्ठस्स अंगस्स दो सुयखंधा पण्णत्ता तं जहा नायाणि य धम्मकहाओ य"॥३॥

"जइ णं भंते! समणेणं भगवया महावीरेणं छट्ठस्स अंगस्स दो सुयखंधा पण्णत्ता पढमस्स णं भंते ! सुयखंधस्स कइ अज्झयणा पण्णत्ता" ?

"एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं नायाणं एगूणवीसं अज्झयणा पण्णत्ता तं जहा उक्खित्तणाए१ संघाडे२ अंडे३ कुम्मे४ य सेलगे५ । तुंबे६ य रोहिणी७ मल्ली८ मायंदी९ चंदमा१०

य ॥१॥ दावद्दवे११ उदगणाए१२ मंडुक्के१३ तेयली१४ वि य । नंदिफले१५ अमरकंका१६ आइण्णे१७ संसुमाई१८ य ॥२॥ अवरे य पुंडरीए१९ णाए एगुणवीसिमे" ॥ २½ ॥ ५॥

"जइ णं भंते! समणेणं भगवया महावीरेणं नायाणं एगुणवीसं अज्झयणा पण्णत्ता पढमस्स णं भंते अज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते" ? एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे दाहिणड्ढभरहे रायगिहे नामं नयरे होत्था (वण्णओ) गुणसिलए चेइए (वण्णओ) ॥ तत्थ णं रायगिहे नयरे सेणिए नामं राया होत्था (वण्णओ) ॥ तस्स णं सेणियस्स रण्णो नंदा नामं देवी होत्था (वण्णओ) ॥ तस्स णं सेणियस्स रण्णो पुत्ते नंदाए देवीए अत्तए अभए नामं कुमारे होत्था अहीण जावसुरूवे। सेणियस्स रण्णो सव्वकज्जेसु लद्धपच्चए, रज्जं च रट्ठं च कोसं च कोट्ठागारं च बलं च वाहणं च पुरं च अंतेउरं च सयमेव समुपेक्खमाणे विहरइ ॥६॥

तए णं तस्स सेणियस्स रण्णो धारिणी नामं देवी होत्था ॥ सा धारिणी देवी अण्णया कयाई पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि सयणिज्जंसि सुत्तजागरा ओहीरमाणी २ एगं महं सत्तुस्सेहं रययकूडसंनिहं नहयलंसि सोमागारं लीलायंतं जंभायंतं गयं मुहमतिगयं पासित्ताणं पडिबुद्धा। हट्ठतुट्ठा समाणी तं सुमिणं उगिण्हइ २ त्ता सयणिज्जाओ उट्ठेइ २ त्ता अतुरियमचवलं रायहंससरिसीए गईए जेणामेव सेणिए राया तेणामेव उवागच्छइ २ त्ता सेणियं रायं इट्ठाहिं कंताहिं पियाहिं गिराहिं पडिबोहेइ २ त्ता सेणिएणं रण्णा अब्भणुण्णाया समाणी नाणामणिरयणचित्तंसि भद्दासणंसि निसीयइ २ त्ता आसत्था वीसत्था मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी, "एवं खलु अहं देवाणुप्पिया ! अज्ज तंसि तारिसगंसि सयणिज्जंसि

सुत्तजागरा नियगवयणमइवयंतं गयं सुमिणे पासित्ता पडिबुद्धा॥ तं एयस्स णं सुमिणस्स देवाणुप्पिया! के फलविसेसे भविस्सइ?"॥७॥

तए णं से सेणिए राया धारिणीए देवीए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे समाणे तं सुमिणं ओगिण्हइ २ त्ता ईहं अणुपविसइ अप्पणो साभाविएणं मइपुव्वएणं बुद्धिविन्नाणेणं तस्स सुमिणस्स अत्थोग्गहं करेइ २ त्ता धारिणिं देविं अणुवूहेमाणे एवं वयासी, 'उराले णं तुमे देवाणुप्पिए! सुमिणे दिट्ठे। कल्लाणे णं तुमे देवाणुप्पिए! सुमिणे दिट्ठे। अत्थलाभो देवाणुप्पिए! पुत्तलाभो देवाणुप्पिए! सुक्खलाभो देवाणुप्पिए! एवं खलु नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अद्धट्ठमाणं राइंदियाणं विइक्कंताणं अम्हं कुलकेउं कुलवडेंसयं दारयं पयाहिसि। से वि य णं दारए उम्मुक्कबालभावे सूरे वीरे राया भविस्सइ। तं आरोग्ग-तुट्ठि-दीहाउ-कल्लाण-कारए णं तुमे देवी! सुमिणे दिट्ठे" त्ति कट्टु भुज्जो २ अणुवूहेइ॥८॥

तए णं सा धारिणी देवी सेणिएणं रण्णा एवं वुत्ता समाणी हट्ठतुट्ठा सयंसि सयणिज्जंसि निसीयइ २ त्ता एवं वयासी "मा मेये उत्तमे पहाणे मंगले सुमिणे अन्नेहिं पावसुमिणेहिं पडिहम्मिहिइ" त्ति कट्टु देवगुरुजणसंबद्धाहिं पसत्थाहिं धम्मियाहिं कहाहिं सुमिणजागरियं पडिजागरमाणी विहरइ॥९॥

तए णं से सेणिए राया पच्चूसकालसमयंसि विहियसत्थकुसले सुमिणपाढए सद्दावेइ २ त्ता धारिणीए देवीए दिट्ठस्स सुमिणस्स फलं पुच्छइ॥१०॥

एवं पुच्छिया समाणा ते सुमिणपाढगा सुमिणसत्थाइं उच्चारेमाणा एवं वयासी, "एवं खलु सामी! अम्हं सुमिणसत्थंसि बायालीसं सुमिणा तीसं महासुमिणा बावत्तरिं सव्वसुमिणा दिट्ठा। तत्थ णं सामी! अरहंतमायरो वा चक्कवट्टिमायरो वा अरहंतंसि वा चक्क-

द्दिसि या गब्भे वक्कममाणंसि एएसिं तीसाए महा सुमिणाणं इमे चउद्दस महासुमिणे पासित्ताणं पडिबुज्झंति तं जहा, गय-वसह-सीह अभिसेयदाम-ससि-दिणयरं झयं कुंभं। पउमसर-सागर-विमाण-भवण-रयणुच्चय सिहिं च॥१॥ तत्थ णं सामी! मंडलियमायरो मंडलियंसि गब्भे वक्कममाणंसि एएसिं चउद्दसण्हं महासुमिणाणं अण्णयरं एगं महा-सुमिणं पासित्ताणं पडिबुज्झंति। से ओराले णं सामी! धारिणीए देवीए सुमिणे दिट्ठे। एवं खलु सामी! नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं धारिणी देवी एगं दारयं पयाहिइ से वि य दारए रज्जवई राया भविस्सइ, अणगारे या भावियप्पा"॥ ११॥

तए णं तीसे धारिणीए देवीए दोसु मासेसु विइक्कंतेसु तइए मासे वट्टमाणे तस्स गब्भस्स दोहलकालसमयंसि अयमेयारूवे अकालमेहेसु दोहले पाउब्भवित्था: "धण्णाओ ताओ अम्मयाओ, पुण्णाओ ताओ अम्मयाओ, जाओ णं मेहेसु अब्भुग्गएसु हत्थि-रयणं दुरूढाओ सव्वओ समंता आहिंडमाणीओ दोहलं विणेंति, तं णं अहमवि मेहेसु अब्भुग्गएसु जाव दोहलं विणेमि"॥ १२॥

तए णं सा धारिणी देवी तंसि दोहलंसि अविणिज्जमाणंसि असंपत्तदोहला असंपुण्णदोहला सुक्का भुक्खा निम्मंसा दुब्बला जाया॥ १३॥

तए ण धारिणीए देवीए अंगपडियारियाओ अब्भिंतरियाओ दासचेडियाओ जेणेव सेणिए राया तेणेव उवागच्छंति २ त्ता एवं वयासी,"एवं खलु सामी! किं पि अज्ज धारिणी देवी सुक्का भुक्खा अट्टज्झाणोवगया झियायइ"॥ १४॥

तए णं से सेणिए राया जेणेव धारिणी देवी तेणेव उवागच्छइ २ त्ता तं एवं वयासी "किण्णं तुमं देवाणुप्पिए! अट्टज्झाणोवगया झियायसि?"

तए णं सा धारिणी देवी एवं वयासी, "एवं खलु सामी! मम अयमेयारूवे अकालमेहेसु दोहले पाउब्भूए"[3] ॥ १५ ॥

तए णं से सेणिए राया तं धारिणिं देविं एवं वयासी "मा णं तुमं देवाणुप्पिए! अट्टज्झाणं झियाहि. अहं णं तहा करिस्सामि जहा णं तव अयमेयारूवस्स अकालदोहलस्स मणोरहसंपत्ती भविस्सइ" ॥१६॥

तए णं से सेणिए राया अभयं नामं कुमारं सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी "एवं खलु पुत्ता! तव चुल्लमाउयाए धारिणीए देवीए अकाल-मेहेसु दोहले पाउब्भूए। तस्स दोहलस्स अहं उवाएहिं उप्पत्तिं अवि-दमाणे ओहयमणसंकप्पे झियामि" ॥ १७ ॥

तए णं से अभए कुमारे सेणियं रायं एवं वयासी, "मा णं तुब्भे ताओ! एवं झियाह। अहं णं तहा करिस्सामि जहा मम चुल्लमाउ-याए धारिणीए देवीए अकालदोहलस्स मणोरहसंपत्ती भवि-स्सइ" ॥ १८ ॥

तए णं तस्स अभयकुमारस्स अयमेयारूवे मणोसंकप्पे समुप्प-ज्जित्था, "णो खलु सक्का माणुस्सएणं उवाएणं मम चुल्लमाउयाए धारि-णीए देवीए अकालदोहलस्स मणोरहसंपत्तिं करित्तए नन्नत्थ दिव्वेणं उवाएणं। अत्थि णं मम सोहम्मकप्पवासी पुव्वसंगइए देवे महड्ढिए य महासुक्खे। तं सेयं खलु मम पोसहसालाए पोसहियस्स बंभया-रिस्स एगस्स अबीयस्स दब्भसंथारोवगयस्स अट्ठमभत्तं पडिगिण्हित्ता पुव्वसंगइयं देवं मणसीकरेमाणस्स विहरित्तए। तए णं पुव्वसंगइए देवे मम चुल्लमाउयाए धारिणीए देवीए अकालमेहेसु दोहलं विणेहिइ"॥

एवं संपेहेइ २ त्ता उच्चारपासवणभूमिं पडिलेहेइ २ त्ता पव्व-

तए णं से पुव्वसंगतिए देवे अभयस्स कुमारस्स अंतिए पाउब्भूए। अभएणं कुमारेणं अब्भट्ठिए समाणे अकालमेहे विउव्वइ ॥२०॥

तए णं सा धारिणी देवी अकालमेहेसु दोहले सम्मं विणेइ २ सा नवण्हं मासाणं पडिपुण्णाणं मेहं नाम दारयं पयाया।

तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स अम्मापियरो अणुपुव्वेणं नामकरणं च पज्जेमणं च पचंकमणं च चोलोवणयं च महया २ इड्ढीए करिंसु ॥ २१ ॥

तए णं तं मेहं कुमारं तस्स अम्मापियरो गब्भट्ठमे वासे सोहणंसि तिहि-करण-मुहुत्तंसि कलायरियस्स उवणेंति । तए णं से कलायरिए मेहं कुमारं लेहाइयाओ गणियप्पहाणाओ बावत्तरिं कलाओ सुत्तओ अत्थओ करणाओ य सिक्खावेइ, तं जहा. लेहं १ गणियं २ रूवं ३ नट्टं ४ गीयं ५ वाइयं ६ सरगयं ७ पोक्खरगयं ८ समतालं ९ जूयं १० जणवायं ११ पासयं १२ अट्ठावयं १३ पोरेकव्वं १४ दगमट्टियं १५ अण्णविहिं १६ पाणविहिं १७ वत्थविहिं १८ विलेवणविहिं १९ सयणविहिं २० अज्जं २१ पहेलियं २२ मागहियं २३ इत्थियलक्खणं २४ गाहं २५ गीइयं २६ सिलोयं २७ हिरण्णजुत्तिं २८ सुवण्णजुत्तिं २९ चुण्णजुत्तिं ३० आभरणविहिं ३१ तरुणीपडिकम्मं ३१ पुरिसलक्खणं ३३ हयलक्खणं ३४ गयलक्खणं ३५ गोणलक्खणं ३६ कुक्कुडलक्खणं ३७ छत्तलक्खणं ३८ दंडलक्खणं ३९ असिलक्खणं ४० मणिलक्खणं ४१ कागणिलक्खणं ४२ वत्थुविज्जं ४३ खंधारमाणं ४४ नगरमाणं ४५ वूहं ४६ पडिवूहं ४७ चारं ४८ पडिचारं ४९ चक्कवूहं ५० गरुलवूहं ५१ सगडवूहं ५२ जुद्धं ५३ निजुद्धं ५४ जुद्धाइजुद्धं ५५ अट्ठिजुद्धं ५६ मुट्ठिजुद्धं ५७ बाहुजुद्धं ५८ लयाजुद्धं ५९ ईसत्थं ६० छरुप्पवायं ६१ धणुव्वेयं ६२ हिरण्ण-

पागं ६३ सुवण्णपागं ६४ सुत्तखेडं ६५ वट्टखेडं ६६ णालियाखेडं ६७ पत्तच्छेज्जं ६८ कडगच्छेज्जं ६९ सज्जीवं ७० निज्जीवं ७१ सउणरुयं ७२॥

तए णं से कलायरिए मेहं कुमारं एयाओ कलाओ सिक्खावित्ता अम्मापिऊणं उवणेइ ॥ २२ ॥

तए णं तस्स मेहस्स अम्मापियरो तं कलायरियं महुरेहिं वयणेहिं विपुलेणं वत्थगन्धमल्लालंकारेणं सक्कारेंति २ त्ता विउलं जीवियारिहं पीइदाणं दलयंति २ त्ता पडिविसज्जेंति ॥

तए णं से मेहे कुमारे बावत्तरिकलापंडिए णवंगसुत्तपडिबोहिए अट्ठारसविहिप्पगारदेसीभासाविसारए जाए ॥ २३ ॥

तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स अम्मापियरो सोहणंसि तिहि-करण-मुहुत्तंसि मेहं कुमारं सरिसेहिंतो रायकुलेहिंतो आणिल्लियाहिं अट्ठहिं रायवरकन्नाहिं सद्धिं पाणिं गिण्हावेंसु ॥ २४ ॥

तए णं से मेहे कुमारे उप्पिंपासायवरगए फुट्टमाणेहिं मुइंगमत्थएहिं वरतरुणीसंपउत्तेहिं बत्तीसइबद्धएहिं नाडएहिं उवगिज्जमाणे २ उवलालिज्जमाणे २ विउले कामभोए पच्चणुभवमाणे विहरइ ॥२५॥

तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे सुहं सुहेणं विहरमाणे जेणामेव रायगिहे नयरे गुणसिलए चेइए तेणामेव उवागच्छइ जाव विहरइ ॥२६॥

तए णं से मेहे कुमारे कंचुइज्जपुरिसस्स अंतिए समणस्स भगवओ महावीरस्स आगमणपवित्तिं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे कंचुइपुरिसं सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी, "खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेह" ॥ २७ ॥

तए णं से मेहे कुमारे चाउघंटं आसरहं दुरूढे समाणे जेणामेव समणे भगवं महावीरे तेणामेव उवागच्छइ जाव विणएणं पज्जुवासइ ॥ तए णं समणे भगवं महावीरे मेहस्स कुमारस्स तीसे य महइमहालियाए परिसाए विचित्तं धम्ममाइक्खइ ॥ २८ ॥

तए णं से मेहे कुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठे जेणामेव अम्मापियरो तेणामेव उवागच्छइ २ २ । अम्मापिऊणं पायवडणं करेइ २ त्ता एवं वयासी, "एवं खलु अम्मयाओ ! मए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मे निसंते से वि य णं धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुए । तं इच्छामि णं अम्मयाओ ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए मुंडे भवित्ताणं आगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए" ॥ २९ ॥

तए णं सा धारिणी देवी तमणिट्ठं अकंतं अप्पियं फरुसं गिरं सोच्चा तप्पमाणी संजमाणी विलवमाणी मेहं कुमारं एवं वयासी "तुमं सि जाया ! अम्हं एगे पुत्ते इट्ठे कंते पिए ॥ नो खलु जाया ! अम्हे इच्छामो खणमवि विप्पओगं सहित्तए । भुंजाहि ताव जाया ! माणुस्सए भोगे जाव वयं जीवामो । तओ पच्छा अम्हेहिं कालगएहिं परिणयवए निरवयक्खे पव्वइस्ससि" ॥ ३० ॥

तए णं से मेहे कुमारे अम्मापिऊहिं एवं वुत्ते समाणे एवं वयासी, "तहेव णं तं अम्मो ! जहेव णं तुब्भे ममं वयह । एवं खलु अम्मयाओ ! माणुस्सए भवे अधुवे अणियए असासए वसणसय-उवद्दवाभिभूए विज्जुलयाचंचले अणिच्चे जलबिंदुलेसचवले कुसग्गजलबिंदुसन्निभे संझब्भरागसरिसे सुविणादंसणोवमे पच्छा पुरं च अवस्सं विप्पजहणिज्जे । से के णं जाणइ अम्मयाओ ! के पुव्विं गमणाए के पच्छा गमणाए तं इच्छामि णं जाव पव्वइत्तए" ॥ ३१ ॥

तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स अम्मापियरो जाहे णो संचाएंति मेहं कुमारं बहूहिं विसयाणुलोमाहिं आघवणाहि य पण्णवणाहि य आघवित्तए वा पण्णवित्तए वा ताहे विसयपडिकूलाहिं संजमभउव्वेगकारियाहिं य पण्णवणाहिं पण्णवेमाणा एवं वयासी, "एस णं जाया! णिग्गंथे पावयणे सच्चे, अणुत्तरे, केवलिए, पडिपुण्णे, संसुद्धे, सल्लगत्तणे, सिद्धिमग्गे, मुत्तिमग्गे, सव्वदुक्खप्पहीणमग्गे, अहीव एगन्तदिट्ठिए, खुरो इव एगन्तधाराए, लोहमया इव जवा चावेयव्वा, वालुयाकवले इव णिस्साए, गंगा इव पडिसोयगमणाए, महासमुद्दो इव भुयाहिं दुत्तरे, असिधारा व संचरियव्वं। णो खलु कप्पइ जाया! समणाणं णिग्गंथाणं आहाकम्मिए वा उद्देसिए वा, कीयगडे वा, ठविए वा, रइए वा दुब्भिक्खभत्ते वा, वद्दलियाभत्ते, वा कंतारभत्ते वा, गिलाणभत्ते वा, मूलभोयणे वा, कंदभोयणे वा, फलभोयणे वा, बीयभोयणे वा, हरियभोयणे वा भोत्तए वा पायए वा॥ तुमं च णं जाया! सुहसमुचिए णो चेव णं दुहसमुचिए णालं सीयं णालं उण्हं णालं खुहं णालं पिवासं णालं वाइय-पित्तिय-संभिय-सन्निवाइय-विविहे रोगायंके उच्चावए गामकंटके बावीसं परीसहोवसग्गे उदिण्णे सम्मं अहियासित्तए॥ तं भुंजाहि ताव जाया! जाव[1] पव्वइस्ससि॥ ३२॥

तए णं से मेहे कुमारे अम्मापिऊहिं एवं वुत्ते समाणे अम्मापियरो एवं वयासी "तहेव णं तं अम्मयाओ! जं णं तुब्भे ममं वयह॥ एवं खलु णिग्गंथे पावयणे कीवाणं कायराणं कापुरिसाणं इहलोगपडिबद्धाणं परलोगनिप्पिवासाणं दुरणुचरे पाययजणस्स। णो चेव णं धीरस्स एत्थ किं चि दुक्करं करणयाए॥ तं इच्छामि जाव पव्वइत्तए॥ ३३॥

तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स अम्मापियरो तं एवं वयासी "इच्छामो ताव जाया! एगदिवसमवि ते रायसिरिं पासित्तए"॥

---

1. Supply the rest from § 30.

तए णं से मेहे कुमारे तुसिणीए संचिट्ठइ ॥ ३४ ॥

तए णं से सेणिए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २त्ता एवं वयासी, "खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! मेहस्स कुमारस्स महत्थं महारिहं महग्घं विउलं रायाभिसेयं उवट्ठवेह" ॥ तए णं ते कोडुंबियपुरिसा तहेव उवट्ठवेंति ॥ ३५ ॥

तए णं से सेणिए राया बहूहिं गणणायगेहिं दंडणायगेहिं संपरिवुडे मेहं कुमारं अट्ठसयाणं सोवण्णियाणं कलसाणं जलेहिं रायाभिसेएणं अभिसिंचमाणे एवं वयासी "जय २ णंदा! जय २ भद्दा! भद्दं ते; अजियं जिणाहि, जियं पालयाहि, जियमज्झे वसाहि" त्ति कट्टु जयसद्दं पउंजइ ॥

तए णं से मेहे राया जाए ॥ ३६ ॥

तए णं तस्स मेहस्स रण्णो अम्मापियरो एवं वयासी "भण जाया! किं ते दलयामो किं ते पयच्छामो?"

तए णं से मेहे राया अम्मापियरो एवं वयासी "इच्छामि णं अम्मयाओ! कुत्तियावणाओ रयहरणं पडिग्गहं च आणियं कासवयं च सद्दावियए" ॥ ३७ ॥

तए णं से सेणिए राया कोडुंबियपुरिसा सद्दावेइ २त्ता एवं वयासी "गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! सिरिघराओ तिण्णि सयसहस्साइं गहाय दोहिं सयसहस्सेहिं कुत्तियावणाओ रयहरणं पडिग्गहं च उवणेह, एगेणं सयसहस्सेणं कासवयं सद्दावेह" ॥

तए णं ते कोडुंबियपुरिसा तहेव करेंति ॥ ३८ ॥

तए णं से कासवे सेणियं रायं करयलमंजलिं कट्टु एवं वयासी, "संदिसह णं देवाणुप्पिया! जं मए करणिज्जं" ॥

तए णं से सेणिए राया कासवयं एवं वयासी, "गच्छाहि णं तुमं देवाणुप्पिया! सुरभिणा गंधोदएणं निक्के हत्थपाए पक्खालेहि। सेयाए चउप्फलाए पोत्तीए मुहं बंधित्ता मेहकुमारस्स चउरंगुलवज्जे निक्खमणपाउग्गे केसे कप्पाहि" ॥

तए णं से कासवे तहेव केसे कप्पइ ॥ ३९ ॥

तए णं मेहकुमारस्स माया महरिहेणं हंसलक्खणेणं पडसाडएणं अग्गकेसे पडिच्छइ २त्ता सुरभिणा गंधोदएणं पक्खालेइ २त्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं चच्चाओ दलयइ २त्ता सेयाए पोत्तीए बंधइ २त्ता रयणसमुग्गयंसि पक्खिवइ ॥ वारिधारा-छिन्नमुत्तावलिप्पगासाइं अंसूइं विणिम्मुयमाणी २ रोयमाणी २ कंदमाणी २ एवं वयासी, "एस णं अम्हं मेहकुमारस्स अब्भुदएसु य उस्सवेसु य अपच्छिमे दरिसणे भविस्सइ" त्ति कट्टु उस्सीसामूले ठवेइ ॥ ४० ॥

तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स अम्मापियरो उत्तरावक्कमणं सीहासणं रयावेंति, मेहं कुमारं दोच्चं पि तच्चं पि सेयापीयएहिं कलसेहिं ण्हावेंति २त्ता पम्हलसुकुमालाए गंधकासाइयाए गायाइं लूहेंति २त्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं गायाइं अणुलिंपंति २त्ता नासा-नीसास-वाय-वोज्झं हंसलक्खणपडसाडगं नियंसेंति हारं पिणद्धेंति अद्धहारं पिणद्धेंति एवं एगावलिं मुत्तावलिं कणगावलिं रयणावलिं जाव दिव्वं सुमणदामं पिणद्धेंति ॥४१॥

तए णं मेहं कुमारं गंठिम-वेढिम-पूरिम-संघाइमेणं चउव्विहेणं मल्लेणं कप्परुक्खगं पिव अलंकियसरीरं करेंति ॥ ४२ ॥

तए णं से सेणिए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २त्ता एवं वयासी "खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! अणेगखंभसयसंनिविट्ठं पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं उवट्ठवेह ॥

तए णं ते कोडुंबियपुरिसा सीयं उवट्ठवेंति ॥४३॥

तए णं मेहे कुमारे सीयं दुरूहइ २ त्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे निसीयइ ॥४४॥

तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स माया ण्हाया कयबलिकम्मा अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरा सीयं दुरूहइ २त्ता मेहस्स कुमारस्स दाहिणपासे सीहासणंसि निसीयइ ॥४५॥

तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स पिया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २त्ता एवं वयासी, "खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! सरिसाणं सरित्तयाणं सरिव्वयाणं कोडुंबियवरतरुणाणं सहस्सं सद्दावेह" ॥

तए णं ते कोडुंबियवरतरुणा सद्दाविया समाणा सेणियं रायं एवं वयासी, "संदिसह णं देवाणुप्पिया ! जयणं अम्हेहिं करणिज्जं" ॥

तए णं से सेणिए राया ते कोडुंबियवरतरुणे एवं वयासी, "गच्छह णं देवाणुप्पिया ! मेहस्स कुमारस्स पुरिससहस्सवाहणिं सीयं परिवहह" ॥ ते तहेव परिवहंति ॥४६॥

तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स सीयं दुरूढस्स समाणस्स इमे अट्ठट्ठमंगलया तप्पढमयाए पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया, तं जहा, सोत्थिय-सिरिवच्छ-णंदावत्त-वद्धमाणग-भद्दासण-कलस-मच्छ-दप्पणा ॥

तए णं बहवे अत्थत्थिया ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं गिराहिं अणवरयं अभिथुणंता एवं वयासी "जय २ नंदा, जय २ भद्दा" ॥४७॥

तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स अम्मापियरो मेहं कुमारं पुरओ कट्टु जेणामेव समणे भगवं महावीरे तेणामेव उवगच्छंति २ त्ता तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेंति वंदंति नमंसंति २त्ता एवं वयासी, "एस णं देवा[illegible] अम्ह एगे पुत्ते इट्ठे कंते पिए ॥ से जहा-

नामए उप्पले इ वा पउमे इ वा कुमुदे इ वा पंके जाए जलेसु संवुड्ढए नो वलिप्पइ पंकरएणं, एवामेव मेहे कुमारे कामेसु जाए भोगेसु संव-ड्ढिए नो वलिप्पइ भोगरएणं। एस णं देवाणुप्पिया! संसार-भउ-व्विग्गे, भीए जम्मजरामरणाणं, इच्छइ देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए। तं अम्हे देवाणुप्पियाणं सिस्सभिक्खं दलयामो, पडिच्छंतु णं देवाणुप्पिया सिस्सभिक्खं" ॥४८॥

तए णं समणे भगवं महावीरे मेहकुमारस्स अम्मापिऊहिं एवं वुत्ते समाणे एयमट्ठं सम्मं पडिसुणेइ ॥४९॥

तए णं से मेहे कुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ उत्तरपुरत्थिमं दिसिभागं अवक्कमेइ २ त्ता सयमेव आभरणमल्लालंकारं मुयइ ॥५०॥

तए णं मेहकुमारस्स माया हंसलक्खणेणं पडसाडएणं आभरणमल्लालंकारं पडिच्छइ २ त्ता अंसूणि विणिम्मुयमाणी रोयमाणी एवं वयासी, "जइयव्वं जाया! घडियव्वं जाया! अस्सिं च णं अट्ठे णो पमाएयव्वं। अम्हं पि एवमेव मग्गे भवउ", त्ति कट्टु मेहकुमारस्स अम्मापियरो समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति २ त्ता जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया ॥५१॥

तए णं से मेहे कुमारे पंचमुट्ठियं लोयं करेइ २ त्ता जेणामेव समणे भगवं महावीरे तेणामेव उवागच्छइ २ त्ता एवं वयासी, "आ-लित्ते णं भंते! लोए जराए मरणेण य॥ से जहा नामए केइ गाहा-वई आगारंसि झियायमाणंसि जे तत्थ भंडे अप्पभारे मोल्लगुरुए तं गहाय आयाए एगंतं अवक्कमइ, 'एस मे नित्थारिए समाणे पच्छा पुरा य लोए हियाए सुहाए भविस्सइ'। एवामेव मम वि एगे आयार-भंडे इट्ठे कंते पिए। एस मे नित्थारिए समाणे संसारवोच्छेयकरे भविस्सइ तं इच्छामि णं देवाणुप्पिएहिं सयमेव पव्वाविउं, सयमेव

सिक्खाविउं, सयमेव आयार-गोयर-विणय-वेणइय-चरण-करण-जायामायाउत्तियं धम्मं माइक्खिउं" ॥५२॥

तए णं समणे भगवं महावीरे मेहं कुमारं सयमेव पव्वावेइ, सयमेव जाव धम्ममाइक्खइ, "एवं देवाणुप्पिया! गंतव्वं, एवं चिट्ठियव्वं, एवं निसीयव्वं, तुयट्टियव्वं, भुंजियव्वं, भासियव्वं" ॥५३॥

जं दिवसं च णं मेहे कुमारे आगाराओ अणगारियं पव्वइए तस्स णं दिवसस्स पुव्वावरण्हकालसमयंसि समणाणं निग्गंथाणं अहाराइणियाए सेज्जासंथारएसु विभज्जमाणेसु मेहस्स कुमारस्स दारमूले सेज्जासंथारए जाए ॥५४॥

तए णं समणा निग्गंथा पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि वायणाए य पुच्छणाए य उच्चारस्स य पासवणस्स य अइगच्छमाणा य निग्गच्छमाणा य अप्पेगइया मेहं कुमारं हत्थेसुं संघट्टंति एवं पाएसुं सीसे णं पोट्टे णं कायंसि। एवं महालियं च णं रयणिं मेहे कुमारे णो संचाएइ खणमवि अच्छिं निमीलित्तए ॥५५॥

तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए समुप्पज्जित्था, "एवं खलु अहं सेणियस्स रण्णो पुत्ते, धारिणीए देवीए अत्तए, मेहे कुमारे। तं जया णं अहं आगारमज्झे वसामि तया णं ममं समणा निग्गंथा आढायंति सक्कारेंति। जं पभिइं च णं अहं अणगारियं पव्वइए तं पभिइं च ममं समणा निग्गंथा णो आढायंति णो सक्कारेंति अदुत्तरं च णं समणा निग्गंथा पुव्वरत्तावरत्त[1] जाव ममं संघट्टंति णो संचाएमि खणमवि अच्छिं निमीलित्तए तं सेयं खलु मम कल्लं पाउप्पभाए रयणीए समणं भगवं महावीरं आपुच्छित्ता पुणरवि आगारमज्झे वसित्तए," त्ति कट्टु एवं संपेहेइ २ त्ता अट्ट-दुहट्ट-वसट्ट-माणसगए णिरयपडिरूवियं च णं रयणिं खवेइ २ त्ता

1. Supply the rest from the preceeding section.

कल्लं पाउप्पभाए रयणीए जेणामेव समणे भगवं महावीरे तेणामेव उवागच्छइ जाव पज्जुवासइ ॥५६॥

तए णं 'मेहा' इ समणे भगवं महावीरे मेहं कुमारं एवं वयासी "से णूणं तुमं पुव्वावरत्तकालसमयंसि समणेहिं निग्गंथेहिं वायणाए य पुच्छणाए जाव [1] आगारमज्झे वसित्तए ॥ णूणं एसट्ठे समट्ठे ?"

"हंता ! अट्ठे समट्ठे"

"एवं खलु मेहा ! तुमं इओ तच्चे भवे वेयड्ढगिरिपायमूले हत्थिराया होत्था ।

तत्थ णं तुमं अन्नया कयाइं गिम्हकालसमयंसि जेट्ठामूलमासे वणदवजालापलित्तेसु वणंतेसु धूमाउलासु दिसासु मंडलवाए व्व परिब्भमंते तत्थे संजायभए बहूहिं हत्थीहिं संपरिवुडे दिसं दिसिं विप्पलाइत्था ॥५७॥

तए णं तव मेहा ! तं वणदवं पासित्ता अयमेयारूवे अज्झत्थिए समुप्पज्जित्था, "कहिं णं मन्ने मए अयमेयारूवे अग्गिसंभवे अणुभूयपुव्वे"। तए णं तव मेहा ! लेसाहिं विसुज्झमाणीहिं सुभेणं परिणामेणं तयावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं जाईसरणे समुप्पज्जित्था । तए णं तुमं मेहा ! एयमट्ठं सम्मं अभिसमेसि "एवं खलु मए अतीए भवे अयमेयारूवे अग्गिसंभवे समणुभूए" ॥५८॥

तए णं तुमं मेहा ! अयमेयारूवे अज्झत्थिए समुप्पज्जित्था, तं सेयं खलु मम इयाणिं गंगाए महानईए दाहिणिल्लंकूलंसि विंझगिरिपायमूले दवग्गिसंताणकारणट्ठा सएणं जूहेणं महइमहालयं मंडलं घाइत्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेसि २ त्ता एगं महं मंडलं घाएसि जत्थ णं तणं वा पत्तं वा कट्ठं वा कंटए वा लया वा खाणुं वा रुक्खं वा, तं सव्वं तिक्खुत्तो आहुणिय २ पाएणं उद्धरेसि, हत्थेणं गिण्हइ २ त्ता एगंते एडेसि ।

---

1 Supply the rest from §§ 55 and 56.

तए णं तुमे मेहा ! तस्सेव मंडलस्स अदूरसामंते हत्थीणं आहेवच्चं भुंजमाणे विहरसि ॥५९॥

तए णं अण्णया कयाइं गिम्हाकालसमयंसि जेट्ठामूले मासंसि पायव-संघंस-समुट्ठिएणं सुक्क-तण-पत्त-मारुयसंजोगदीविएणं वणदव-जालासंपलित्तेसु वणंतेसु अगणी बहवे सीहा य वग्घा य दीवा य रिच्छा य चित्तया य सियाला य ससया य जेणेव से मंडले तेणेव उवागच्छंति २ त्ता अग्गिभयाभिभिदुया एगओ बिलधम्मेणं चिट्ठंति तुमं पि मेहा ! तंसि चेव मंडले तेहिं बहूहिं सीहेहिं जाव ससएहि सद्धिं एगओ बिलधम्मेणं चिट्ठसि ॥६०॥

तए णं तुमे मेहा ! पाएणं गत्तं कंडुइस्सामि त्ति कट्टु पाए उक्खित्ते। तंसि च णं अन्तरे अण्णेहिं य बलवन्तेहिं सत्तेहिं पणोलिज्जमाणे २ एगे ससए अणुपविट्ठे। तए णं तुमं मेहा ! गायं कंडुइत्ता पुणरवि पायं निक्खिविस्सामि त्ति कट्टु तं ससयं च अणुपविट्ठं पाससि २ त्ता पाणाणुकंपाए भूयाणुकंपाए से पाए अंतरा चेव संधारिए णो चेव णं निक्खित्ते ॥

तए णं तुमे मेहा ! ताए पाणाणुकंपाए मणुस्साउए बद्धे ॥

तए णं से वणदवे अड्ढाइज्जाइं राइंदियाइं तं वणं झामेइ ॥

तए णं से वणदवे णिट्ठिए उवरए समाणे उवसंते विज्जाए यावि होत्था ॥६१॥

तए णं ते बहवे सीहा जाव ससया तं वणदवं उवसंतं विज्झायं पासंति २ त्ता अग्गिभयविप्पमुक्का छुहाए पिवासाए परिभूया समाणा ताओ मंडलाओ पडिनिक्खमंति २ त्ता दिसोदिसं विप्पसरित्था ॥६२॥

तए णं तुमं मेहा ! जुण्णे जरा-जज्जरिय-देहे तंसि चेव मंडलंसि धिज्जुदर धरणितलंसि संणिवडिए। तए णं मेहा ! तव सरीरगंसि उज्जला वेयणा पाउब्भूया। तए णं तुमं मेहा ! तं उज्जलं वेयणं तिण्णि राइंदियाइं वेयमाणे एगं वाससयं परमाउयं पाल-

इत्ता इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे रायगिहे नयरे सेणियस्स रण्णो धारिणीए देवीए कुच्छिंसि कुमारत्ताए पच्चाया ॥ ६३ ॥

तए णं तुमं मेहा ! आणुपुव्वेणं गब्भवासाओ निक्खंते समाणे उम्मुक्कबालभावे जोव्वणगं अणुपत्ते मम अंतिए मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वइए ॥६४॥

तं जइ णं तुमे मेहा ! तिरिक्खजोणियभावगएणं अप्पडिलद्ध-सम्मत्त-रयणेणं से पाए पाणाणुकंपाए अंतरा चेव संधारिए णो चेव णं णिक्खित्ते किमंग पुण तुमं मेहा ! इयाणिं विउलकुलसमुब्भवे लद्धपंचिंदिए एवं उट्ठाण-बल-वीरिय-पुरिसक्कार-परक्कम-संजुत्ते मम अंतिए पव्वइए समणाणं निग्गंथाणं राओ वायणाए य पुच्छणाए जाव निगच्छमाणाणं पायसंघट्टणाणि णो सम्मं सहेसि तितिक्खसि अहियासेसि ?" ॥६५॥

तए णं तस्स मेहस्स अणगारस्स समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म सुभेहिं परिणामेहिं पसत्थेहिं अज्झवसाणेहिं जाइसरणे समुप्पण्णे । तए णं से मेहे अणगारे एयमट्ठं सम्मं अभिसमेइ ॥

तए णं समणे भगवं महावीरे अन्नया कयाइं बहिया जणवय-विहारं विहरइ ॥

तए णं से मेहे अणगारे विविहेणं तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

तए णं से मेहे अणगारे तेणं उरालेणं विपुलेणं तवोकम्मेणं सुक्के भुक्खे लुक्खे निम्मंसे निस्सोणिए किसे धमणिसंतए जाए यावि होत्था ॥ जीवं जीवेणं गच्छइ जीवं जीवेणं चिट्ठइ । भासं भासित्ता गिलाइ भासं भासमाणे गिलाइ भासं भासिस्सामि त्ति गिलाइ ॥ से जहा नामए इंगालसगडिया इवा कट्ठसगडिया इवा पत्तसगडिया इवा ससद्दं गच्छइ ससद्दं चिट्ठइ एवामेव मेहे कुमारे ससद्दं गच्छइ ससद्दं चिट्ठइ ॥६६॥

तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे रायगिहे नयरे समोसढे ॥

तए णं तस्स मेहस्स अणगारस्स राओ पुव्वरत्तावरत्त-कालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए समुप्पज्जित्था "एवं खलु अहं इमेणं उरालेणं तवोकम्मेणं जाव[1] ससद्दं चिट्ठामि॥ तं अत्थि जाव मे उट्ठाणकम्मे बले वीरिए सद्धा-धिइ-संवेगे जाव य मे धम्मायरिए धम्मोवएसए समणे भगवं महावीरे विहरइ ताव मे सेयं कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुण्णायस्स सयमेव पंच महव्वयाइं आरोहित्ता गोयमाइए समणे निग्गंथे निग्गंथीओ य खामित्ता तहारूवेहिं थेरेहिं सद्धिं विउलपव्वयं सणियं २ दुरूहित्ता सयमेव मेहघणसन्निगासं पुढविसिलापट्टयं पडिलेहित्ता संलेहणाझूसणा-झूसियस्स भत्तपाणपडियाइक्खियस्स कालं अणवकंखमाणस्स विहरित्तए" एवं संपेहेइ २ त्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ जाव पज्जुवासइ ॥८७॥

तए णं समणे भगवं महावीरे मेहं अणगारं एवं वयासी "से णूणं तव मेहा! राओ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि जाव[2] कालं अणवकंखमाणस्स विहरित्तए? से णूणं मेहा! अट्ठे समट्ठे?" ॥

"हंता! अत्थि" ॥८८॥

तए णं से मेहे अणगारे समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुण्णाए समाणे सयमेव पंच महव्वयाइं आरोहेइ जाव कालं अणवकंखमाणे विहरइ ॥८९॥

तए णं ते थेरा भगवंतो मेहस्स अणगारस्स अगिलाए वेयावडियं करेंति। तए णं से मेहे अणगारे दुवालस वासाइं

1. Supply the rest from § 66.
2. Supply the rest from the preceeding section.

सामण्णपरियागं पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अप्पाणं झूसित्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेइत्ता आलोइयपडिक्कंते उद्धियसल्ले समाहिपत्ते आणुपुव्वीए कालगए ॥७०॥

तए णं ते थेरा भगवंतो मेहं अणगारं कालगयं पासेंति २त्ता परिनिव्वाणवत्तियं काउस्सग्गं करेंति । मेहस्स आयारभंडं गिण्हंति २त्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छंति २ एवं वयासी "एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी मेहे नामं अणगारे पगइभद्दए विणीए से णं देवाणुप्पिएहिं अब्भणुण्णाए समाणे जाव आणुपुव्वीए कालगए ॥ एस णं देवाणुप्पिया ! मेहस्स अणगारस्स आयारभंडए" ॥७१॥

तए णं भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं एवं वयासी, "मेहे णं भंते ! मेहे अणगारे कालमासे कालं किच्चा कहिं गए कहिं उववण्णे ?" ॥

"एवं खलु गोयमा ! मम अंतेवासी मेहे नामं अणगारे विजए महाविमाणे देवत्ताए उववण्णे" ॥

"एस णं भंते ! मेहे देवे ताओ देवलोगाओ कहिं गच्छिहिइ कहिं उववज्जिहिइ ?"

गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ, बुज्झिहिइ परिनिव्वाहिइ सव्वदुक्खाणं अंतं काहिइ" ॥७२॥

एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं अप्पोपालंभनिमित्तं पढमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्ति बेमि ॥ पढमं अज्झयणं सम्मत्तं ॥

महुरेहिं निउणेहिं वयणेहिं चोययंति आयरिया ।
सीसे कहिंचि खलिए जह मेहमुणिं महावीरो ॥१॥ ॥७३॥

(नायाधम्मकहासुत्तस्स पढमे सुयखंधे पढमं अज्झयणं)

७ बालक मृगापुत्र[1]

१. उस काल उस समय में मृगग्राम नामा नगर था। (वर्णन)*। उस मृगग्राम नगर के बाहिर पूर्वोत्तर दिशा अर्थात् ईशान कोण में चन्दनपादप नाम उद्यान था॥ (वर्णन)*। वहां सुधर्म यक्ष का यक्षमन्दिर था (वर्णन)*॥

२. उस मृगग्राम नगर में विजय नामा क्षत्रिय राजा रहता था। उस विजय क्षत्रिय की मृगा नामा राणी थी। उस विजय क्षत्रिय का पुत्र मृगा राणी का आत्मज[2] मृगापुत्र नामा बालक था जो जन्म से ही अन्धा, जन्म से ही गूंगा, जन्म से ही बहिरा, जन्म से ही लँगड़ा, कुब्ज और वातुल था। न तो उस बालक के हाथ थे, न पैर, न कान, न आँख, न नाक; केवल उन अङ्ग उपाङ्गों की आकृति (चिह्न) मात्र थे॥

३. व वह मृगा राणी उस मृगापुत्र बालक को गुप्त भोरे[3] में गुप्त अन्न पानी से रक्षा करती हुई रहने लगी[4]

४. उस मृगग्राम नगर में जन्म से अन्धा एक पुरुष रहता था। एक सचक्षु[5] पुरुष से लकड़ी द्वारा आगे ले जाया हुआ वह (अन्धा) जिस के सिर के बाल बिखरे हुए थे और जिस के मार्ग में पीछे

---

(१) मृगापुत्र, मृगालोढा या मृगालोढिया के नाम से भी प्रसिद्ध है क्यों कि उस के शरीर का आकार मांस के गोल पिण्ड जैसा था॥

* देखो नोट (११) नगर आदिक का वर्णन जैसा औपपातिक सूत्र में है वैसा ही यहां दोहराना चाहिये।

(२) आत्मज ॥अपनी आत्मा अथवा शरीर से उत्पन्न हुआ पुत्र। राजाओं के अनेक राणियां होने के कारण जिस राणी के पुत्र पुत्री का वर्णन हो, उस राणी का नाम भी लिख देते हैं।

(३) सं० भूमिगृहक—प्रा० भूमिघरअ—भुइँहरअ, भुहरा, भोहरा, भोरा।

(४) पाठ में प्राय वर्तमान काल की क्रिया होती है परन्तु हिन्दी में उस का अनुवाद भूत काल से किया जाता है।

(५) सं० सचक्षु—प्रा० सचक्खु—पं० सुजाखा।

मक्खियां, चटकर६ उड़े आते थे, मृगग्राम नगर में घर घर करुणा भरे रोने से अपनी वृत्ति बनाता हुआ रहता था७ ॥

५. उस काल उस समय श्रमण भगवान् महावीर पधारे। परिषत् निकली (अर्थात् लोग उपदेश सुनने गए)। तब वह जन्म से अन्धा पुरुष लोगों के उस बड़े शब्द को सुन कर सचक्षु पुरुष से यूं बोला कि "हे देवताओं के प्यारे८! क्या आज मृगग्राम नगर में इन्द्र का महोत्सव है या स्कन्द का महोत्सव है, जो लोगों का शोर सुनता हूं?"

"हे देवताओं के प्यारे! श्रमण भगवान् महावीर इस जगह पधारे हैं।"

६. तब वह जन्म से अन्धा पुरुष सचक्षु पुरुष से यूं बोला, "हे देवताओं के प्यारे! चलो हम भी श्रमण भगवान् महावीर के दर्शन करें" ॥

७. तब सचक्षु पुरुष से लकड़ी के द्वारा आगे ले जाया हुआ वह अन्धा पुरुष जिधर श्रमण भगवान् महावीर थे उधर आया, और तीन बार आदक्षिण प्रदक्षिण९ करके वन्दना नमस्कार किया और ... (चरणों में) बैठ गया ॥

८. तब श्रमण भगवान् महावीर ने उस बड़ी सभा को धर्म का उपदेश दिया। सभा जिस ओर से आई थी उसी ओर चली गई१० ॥

---

(६) चटकर एक प्रकार की मक्खी होती है।

(७) आज कल भी इस प्रकार के अन्धे भिखारी बड़े २ नगरों में देखे जाते हैं।

(८) देवाणुप्पिय = (पाली) देवानंपिय = सं० देवानां प्रियः कोमल निमन्त्रण में प्रयुक्त होता था पर पीछे से इस का अर्थ उलटा होगया और जाल्म अर्थ में प्रयुक्त होने लगा ॥

(९) आदक्षिणं प्रदक्षिणं = भगवान् के दक्षिण ओर से प्रारम्भ कर के इस प्रकार उन के गिर्द घूमना कि अपना दक्षिण हाथ सदा भगवान् की ओर रहे।

(१०) उपदेश का विस्तृत वर्णन औपपातिक सूत्र में है।

९. तब श्रमण भगवान् महावीर के सब से बड़े शिष्य इन्द्रभूति (गौतम) नामा साधु उस जन्म से अन्धे पुरुष को देख कर श्रमण भगवान् महावीर से यूँ बोले, "हे भगवन्! क्या कोई ऐसा मनुष्य है जो जन्म से अन्धा और अन्धरूप हो?"

"हां है।"

"कहां है हे भगवन्! वह जन्म से अन्धा अन्धरूप पुरुष!"

"हे गौतम! इसी मृगग्राम नगर में विजय क्षत्रिय का पुत्र मृगा राणी का आत्मज मृगापुत्र नाम बालक जन्म से अन्धा इत्यादि[११]

१० तब भगवान् गौतम श्रमण भगवान् महावीर से यूँ बोले "हे भगवन्! आप से आज्ञा पा कर मैं मृगापुत्र बालक को देखना चाहता हूं।"

"हे देवताओं के प्यारे! जैसे तुम्हारी इच्छा।"

११ तब वे भगवान् गौतम जिधर मृगा राणी का घर था उधर आए और मृगा राणी से यूँ बोले "हे देवताओं की प्यारी! मैं तेरा पुत्र देखने को यहां[१२] आया हूं।"

१२ तब उस मृगा राणी ने चारों पुत्रों को जो मृगापुत्र बालक के छोटे भाई थे सब अलङ्कारों से विभूषित किया और भगवान् गौतम के चरणों में डाल दिया और ऐसे कहा, "यह लो भगवन्! मेरे चारों पुत्रों को देख लें।"

१३ तब भगवान् गौतम मृगा राणी से यूँ बोले, "हे देवतों की प्यारी! मैं तेरे इन पुत्रों को देखने यहां नहीं आया। वह जो तेरा सब से बड़ा पुत्र मृगापुत्र बालक है जो जन्म से अन्धा अन्धरूप है

(११) जैन सूत्रों में वर्णन शैली नियत प्रकार की है। नगर, चैत्य, राजा आदिक का जो वर्णन औपपातिक सूत्र में है अक्षर अक्षर वही वर्णन दूसरी जगह जब जरूरत हो रख दिया जाता है। परन्तु लिखने के कष्ट से बचने के लिये उस वर्णन का केवल आदि और अन्तिम शब्द लिख कर बाकी वर्णन के स्थान में जाव = जहां तक लिख देते हैं।

(१२) हव्व शब्द का अर्थ टीकाकार "शीघ्र" करते हैं परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि इस का अर्थ स्थान वाची "यहां" है।

और जिस को तू गुप्त भोरे में गुप्त अन्न पानी से पालती है तिस को देखने में यहां आया हूं।

१४ तब वह मृगा राणी भगवान् गौतम से यूं बोली "हे भगवन्! ऐसा कौन ज्ञानी या तपस्वी है जिस ने अच्छी तरह गुप्त रक्खी हुई यह बात आप को झट कह दी ?" तब भगवान् गौतम मृगा राणी से यूं बोले "हे देवतों की प्यारी! मेरे धर्माचार्य और धर्मोपदेशक श्रमण भगवान् महावीर सर्वज्ञ सर्वदर्शी हैं। उन से मैं ने इस बात को जाना है॥

१५ जितने में मृगा राणी भगवान् गौतम के साथ यह वार्तालाप करती रही उतने में मृगापुत्र बालक के अन्न पानी का समय भी हो गया॥

१६ तब वह मृगा राणी भगवान् गौतम से यूं बोली, "हे भगवन्! आप यहां ही ठहरें जब तक कि मैं आप को मृगापुत्र बालक दिखलाती हूं।" यह कह कर जिधर रसोई (अन्न पानी का घर) थी उधर आई, कपड़े बदले, और एक लकड़ी की गाड़ी लेकर उसे खूब अन्न,[१३] पान,[१३] खादिम[१३] और स्वादिम[१३] वस्तुओं से भरा, भरकर जिधर भगवान् गौतम थे आई और यूं बोली, "आइये भगवन्! आप मेरे पीछे चलिये, ताकि मैं आप को मृगापुत्र बालक दिखाऊं"॥

१७ तब वह मृगा राणी जिधर भोरा था उधर आई और चौहरे कपड़े से मुंह बांधती हुई भगवान् गौतम से बोली "आप भी भगवन्! मुखवस्त्रिका[१४] से मुंह बांध लें॥ तब मृगा राणी के यूं कहने पर भगवान् गौतम ने मुखवस्त्रिका से मुंह बांध लिया॥

१८ तब उस मृगाराणी ने मुंह (परली तरफ) मोड़ कर भोरे का दर-

---

(१३) अन्न=भोजन, रोटी; पान=दूध, शर्बत, चाय, लस्सी आदि; खादिम=मिठाई, मेवा, स्वादिम=लौंग, सुपारी, पान, तम्बाकू॥

(१४) मुंह के आगे रखने का या बांधने का कपड़ा, रुमाल॥ यह वह पाठ है जिसे पुजेरे (देहरा वासी) मुंह पर पट्टी न बांधने की सिद्धि में ढूंढियों (स्थानक वासियों) को दिखाते हैं॥

वाज़ा खोला; उस में से ऐसी गन्ध निकली जैसी किसी मरे हुए सांप की हो बल्कि उस से भी बुरी।

२० तब मृगापुत्र बालक उस बहुत अन्न पानी की गन्ध से अभिभूत हुआ हुआ उस अन्न पान में मूर्छित और गृधित होगया॥

२१ तब उस अन्न पान का स्वाद बदल गया और शीघ्र ही विध्वंस हो गया। उस के पीछे वह पूत (राध) और रुधिर में बदल गया। वह (मृगापुत्र) उस पूत और रुधिर को भी खा गया।

२१ तब मृगापुत्र बालक को देख कर भगवान् गौतम को इस प्रकार का विचार उत्पन्न हुआ, 'अहो! यह बालक पूर्वजन्म में किये हुए बुरे कर्मों के पापरूपी फल को भोग रहा है, यद्यपि मैं ने नरक या नारकी नहीं देखे परं प्रत्यक्ष यह मनुष्य नरक के समान दुःख भोग रहा है"। यह कह कर मृगा रानी से विदा हो कर, मृगा रानी के घर से निकल जिस तरफ़ भगवान् महावीर थे उस तरफ आए और यूं बोले, "हे भगवन्! आप से आज्ञा प्राप्त करके मैं जिधर मृगा रानी का घर था उधर आया यावत् (मृगापुत्र रुधिर राध) खागया[१५]। हे भगवन्! वह मनुष्य पूर्व भव में कौन था? किस नाम वाला था? किस गोत्र वाला था? उस ने क्या किया था जो उसका यह हाल है?"

२२ हे गौतम! इसी जंबुद्वीप के भारतवर्ष में शतद्वार नामा एक नगर था (वर्णन)। उस शतद्वार नगर में धनपति नाम राजा था (वर्णन)। उस शतद्वार नगर के पूर्व दक्षिण की दिशा के हिस्से में विजयवर्धमान नामा एक खेड़ा था। उस विजयवर्धमान खेड़े का आभोग पांच सौ ग्रामों का था।

२३ विजयवर्धमान खेड़े में एकाई नाम राष्ट्रकूट[१६] था जो अधर्मी और खोटे कामों में आनन्द मानता था। वह एकाई राष्ट्रकूट विजयवर्धमान खेड़े के पांच सौ ग्रामों को बहुत से करों द्वारा, भरों[१७]

---

(१५) बाकी पाठ सूत्र ११—२० तक में से पढ़ो।

(१६) राष्ट्र = राज्य, कूट = चोटी = राज्य की चोटी = अफसर, हाकिम।

(१७) महसूल।

द्वारा, वृत्तियों[१८] द्वारा और उत्कोटियों[१८] द्वारा लांच करता हुआ, निर्धन करता हुआ विहरता था ॥

२४ तब वह एकाई राष्ट्रकूट विजयवर्धमान खेड़े के बहुत से सरदार, सेठ और सार्थवाहों और और बहुत से मान्य पुरुषों के कार्यों में और कामों में सुनता हुआ कहता था "मैं नहीं सुनता" और न सुनता हुआ कहता था "मैं सुनता हूं"। इसी प्रकार देखता हुआ, बोलता हुआ लेता हुआ, जानता हुआ, उलटा ही कहता था। इस तरह उस एकाई राष्ट्रकूट ने बहुत से पाप कर्म का बन्ध किया ॥

२५ तब एक दफा उस एकाई राष्ट्रकूट के शरीर में एक साथ ही सोलह रोग व्याधियां प्रकट हुई जैसे—श्वास रोग, खांसी, ज्वर, दाह, पेट का दर्द, भगन्दर, बवासीर, बदहजमी, दृष्टिशूल, मस्तक शूल, अरुचि,[१९] आंख का दर्द, कान का दर्द, खुजली, जलोदर और कोढ़।

२६ तब वह एकाई राष्ट्रकूट सोलह रोग व्याधियों से अभिभूत हुआ कुटुम्ब के आदमियों[२०] को बुला कर ऐसे कहता भया, "हे देवताओं के प्यारो! तुम जाओ, विजयवर्धमान खेड़े में जो शृंगाटक[२१] चौक आदि हैं वहां बड़े ऊंचे शब्द से उद्घोषण करते हुए कहो कि हे देवताओं के प्यारे! एकाई राष्ट्रकूट के शरीर में सोलह रोग आतङ्क पैदा हो गये हैं यथा — श्वास यावत् कोढ़। इस लिये यदि कोई वैद्य या वैद्य पुत्र[२२], ज्ञानक[२३] या ज्ञानकपुत्र एकाई राष्ट्रकूट के इन सोलह रोग आतङ्कों में से एक रोग आतङ्क को भी अच्छा करना चाहता है तो एकाई राष्ट्रकूट उस को बहुत सा धन माल देगा। इसी प्रकार दूसरी

(१८) चोरी, रिशवत।

(१९) भोजन में अरुचि ॥

(२०) नौकर चाकर ॥

(२१) शृंगाटक = मुहल्ला, त्रिक = जहां तीन रस्ते मिलते हैं; चतुष्क, चत्वर = चौक, चुराहा, महापथ = बड़ी सड़क ॥

(२२) वैद्य ॥ (२३) जानकार, सियाना ॥

बार भी तीसरी बार भी उद्घोषण करो"। उन कुटुम्ब के आदमियों ने वैसे ही किया ॥

२७ तब विजय वर्धमान खेड़े में इस प्रकार की उद्घोषणा को सुन कर के बहुत से वैद्य शस्त्रकोश[२४] हाथों में ले कर अपने २ घर से निकले, जिधर एकाई राष्ट्रकूट था उधर आए, आकर एकाई के शरीर की परीक्षा की, फिर उन रोगों के कारण पूछे और एकाई राष्ट्रकूट के उन सोलह रोग आतङ्कों में से एक को भी बहुत सी मालिशों से, तेलों के पिलाने से, वमन कराने वाली औषधियों से, जुलाबों से, सींचने से[२५], अपस्नानों से[२६], अनुपानों से[२७], वस्ति कर्म से[२८], निरूह से[२९], नस काटने से, तच्छने से, पच्छने से, छिलके जड़ें कन्दमूल पत्ते फूल बीज खिलाने से, शिलिका[३०] गुडिका[३१] औषध भेषज वगैरह से दूर करना चाहते थे। परन्तु दूर न कर सके ॥

२८ तब वह सारे वैद्य जब उन सोलह रोग आतङ्कों में से एक को भी दूर न कर सके, थके हारे, जिधर से आए थे उधर ही चले गये ॥

२९ तब वह एकाई राष्ट्रकूट उन सोलह रोग आतङ्कों से पीड़ित राज्य में राष्ट्र में मूर्च्छित हो गया। राज्य की प्रार्थना अभिलाषा करता हुआ दुःख से आर्त्त ध्यान के वश हुआ हुआ अढाई सौ (२५०) वर्ष की पूर्ण आयु भोग कर कालमास[३२] में काल कर के इसी रत्न प्रभा पृथ्वी के उत्कृष्ट एक सागरोपम स्थिति वाले नारकियों में नारकी पने पैदा हुआ ॥

३० वह इस के पश्चात् वहां से वापिस आकर यहीं मृग ग्राम नगर

---

(२४) Surgical box, औजारों तथा दवाइयों का डब्बा ॥

(२५) छींटे देने से ।   (२६) भाप आदि में स्नान कराना ।

(२७) कमजोरी दूर करने वाली दवा Tonic

(२८) पानी चढ़ा कर अन्तड़ियां साफ करना ॥

(२९) गुदा में तेल चढ़ा कर शौच कराना Enema.

(३०) सिलाइयां ॥   (३१) गोलियां ॥

(३२) मृत्यु का समय ॥

में मृगा रानी की कुक्षि में पुत्र पने उत्पन्न हुआ। तब उस मृगा रानी के शरीर में बड़ी सख्त यावत् तेज़ वेदना प्रकट हुई। जब से मृगापुत्र बालक मृगा रानी की कुक्षि में गर्भपने आया तब से लेकर मृगा रानी विजय क्षत्रिय को अनिष्ट, अकान्त, अप्रिय[33] लगने लगी।

३१ तब उस मृगा रानी को रात के पहिले भाग में किसी समय कुटुम्ब जागरण[34] करती हुई को यह ध्यान आया, "मैं पहिले विजय क्षत्रिय की प्यारी, विश्वास्य और अनुमत थी। जब से लेकर यह गर्भ मेरी कुक्षि में गर्भपने आया है तब से लेकर मैं विजय क्षत्रिय को अनिष्ट और अकान्त हो गई हूं। नहीं चाहता है विजय क्षत्रिय मेरा नाम या गोत्रनाम[35] लेना भी फिर दर्शन या परिभोग करने का तो कहना ही क्या है॥ इस लिये यह मेरे लिये अच्छा होगा कि मैं इस गर्भ को अनेक गर्भसाड़नों से, गर्भ पातनों से, गर्भगालनों से और गर्भमारणों से नाश करदूं। यह निश्चय कर के बहुत से खारे, कड़वे, तीक्ष्ण गर्भसाड़नों को खाती हुई पीती हुई उस गर्भ को साड़ना चाहती है। लेकिन यह गर्भ न ही सड़ता है न ही गिरता है॥ तो वह मृगा रानी जब उस गर्भ को साड़ने या गिराने को समर्थ न हुई, थकी हारी बेबस उस गर्भ को बड़े दुःख के साथ परिवहन करने लगी॥

३२ तब नौ महीनों के पूरा होने पर मृगा रानी के एक बालक पैदा हुआ जो कि जन्मही से अन्धा यावत् आकृति मात्र था। तब वह मृगा रानी उस अन्धरूप बालक को देख कर डर गई और अपनी अम्बधात्री[36] को बुला कर कहने लगी कि हे देवताओं

---

(३३) जैन सूत्रों में एक ही अर्थ वाले बहुत से शब्द इकट्ठे आ जाते हैं॥

(३४) कुटुम्ब सम्बन्धि ख्यालों में जागती हुई॥

(३५) पहिले हिन्दोस्तान में भी गोत्र नाम प्रधान हुआ करता था। जैसे गौतम, पतञ्जलि वगैरह। यह नाम उस कुल में पैदा हुई सब व्यक्तियों का समान नाम हुआ करता था, विशेष नाम भिन्न २ होते थे जैसे आज कल विलायत में है।

(३६) जिस ने मृगा रानी को पाला था॥

की प्यारी ! इस बालक को एकान्त में किसी रूड़ी (कूड़े के ढेर) पर फेंक आओ।"

३३ तब उस धाय माता ने "अच्छा" कह कर मृगा रानी के वचन को स्वीकार किया और जिधर विजय क्षत्रिय था उधर आई और बोली, 'हे स्वामिन् ! मृगा देवी के नौ महीने पूरे होने पर यावत् आकृति मात्र था यावत् डर गई है[१७]। मुझे बुला कर कहा जाओ, इसको फेंक आओ। इस वास्ते हे स्वामिन् ! आप आज्ञा दें कि इसको एकान्त में रूड़ी पर फेंक आऊं या न ॥

३४ तब वह विजय क्षत्रिय धाय माता के पास से इस बात को सुन कर उसी प्रकार डरा हुआ मृगा रानी की ओर आकर बोला, "हे देवताओं की प्यारी ! यह तुम्हारा पहिला गर्भ है ॥ अगर तुम इसको एकान्त में रूडी पर फेंक दोगी तो तुम्हारी सन्तान स्थिर न होगी। इसलिये तुम इस बालक को गुप्त भोंरे में गुप्त अन्न पानी से पालो इस तरह तुम्हारी सन्तान स्थिर रहेगी" ॥

३५ तब मृगा रानी ने "अच्छा" कह कर विजय क्षत्रिय के उस वचन को स्वीकार किया और उस बालक को गुप्त भोंरे में गुप्त अन्न पानी से पालने लगी ॥

इस प्रकार हे गौतम ! मृगापुत्र बालक अपने पुराने अशुभ कर्मों के पाप फल को भोग रहा है ॥

३६ "हे भगवन् ! मृगापुत्र बालक कालमास में काल करके कहां जाएगा ? कहां पैदा होगा ?"

"हे गौतम ! मृगापुत्र बालक बाईस सालकी पूर्ण आयु भोग कर काल मास में काल करके इसी जम्बुद्वीप के भारतवर्ष में वैताढ्यगिरि पर्वत के मूल में सिंह कुल में सिंहपने उत्पन्न होगा। वह वहां पर सिंह होगा, अधर्मी यावत् साहसिक, बहुत पाप कमावेगा। तब काल मास में काल करके इसी रत्नप्रभा पृथ्वी में

(१७) देखो पिछला सूत्र।

एक सागरोपम३८ स्थिति वाले नारकियों में पैदा होगा। इसके पश्चात् वहां से वापिस आकर वह जो जलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनियों के मच्छ, कच्छप, ग्रह, मकर मार आदि की साढ़े बारह लाख जाति कुल, कोटि योनि प्रमुख हैं उन में से एक एक योनि में अनेक लाख बार फिर फिर जन्म लेगा। फिर वहां से वापिस आकर इसी तरह चौपायों में, भुजङ्गों (सर्पादि) में, खेचरों (पक्षी आदि) में, चतुरिन्द्रियों में, त्रि-इन्द्रियों में द्वि-इन्द्रियों में वनस्पति के कड़वे वृक्षों में, कड़वे दूध वाले वृक्षों में वायु, तेजस अप, पृथ्वी काय के जीवों में अनेक लाख बार पैदा होगा॥

३७ वहां से वापिस आकर सुप्रतिष्ठपुर में बैल बने उत्पन्न होगा। व वहां बाल्यावस्था को उलङ्घ कर एक दफा वर्षा ऋतु के प्रारम्भ गङ्गा महा नदी के किनारे की मिट्टी को खोदता हुआ किनारे गिर जाने पर काल मास में काल करके उसी सुप्रतिष्ठपुर नगर में श्रेष्ठि कुल में पुत्र बने उत्पन्न होगा। वहां पर वह बाल्यावस्था को उलङ्घ कर यौवन अवस्था को प्राप्त हो कर तथारूप स्थविर के पास धर्म सुन कर मुण्डित हो कर गृहस्थी३९ से साधु बन कर श्रमण पर्याय (साधुपन) को पाल कर, आलोचना और प्रतिक्रमण करके, समाधियुक्त, काल मास में काल करके सौ धर्म कल्प में देवता बने उत्पन्न होगा। वहां से च्यवन४० करके मह विदेह क्षेत्र में सिद्ध होगा॥

३८ इस प्रकार हे जम्बू! श्रमण भगवान् महावीर यावत् समाप्त प्रथम अध्ययन का यह अर्थ कहा है। यह मैं कहता हूं॥

(विपाक सूत्र के प्रथम श्रुतस्कन्ध का प्रथम अध्ययन)

---

(३८) अर्थात् समुद्र की उपमा वाला काल का परिमाण। १००००००००००००० पल्योपम। एक योजन लम्बा चौड़ा गहिरा कूआं बारीक बाल के टुकड़ों दबा कर भरा जाए, फिर एक टुकड़ा सौ बरस पीछे निकाला जाए। जितनी देर में वह कूआं खाली हो, उतना ही काल एक पल्योपम होता है।

(३९) अगार=घर, आगार=घर सम्बन्धि, गृहस्थी; अनगार= जिसका घर न हो, साधु।

(४०) देवताओं के मरने को च्यवन (चूना) कहते हैं।

२. ऋषभ भगवान का निर्वाण

१. यह जो हेमन्त[1] ऋतु का तीसरा मास, पांचवां पक्ष माघ वदि है उस माघवदि की तेरहवीं तिथि को दस हजार साधुओं से परिवृत अष्टापद पर्वत के शिखर पर निर्जल चौदहवें उपवास के साथ,पर्यङ्क आसनमें बैठे हुए दिन के पूर्व भाग में अभिजित् नक्षत्र का योग आने पर, सुषम-दुषम आरे के नवासी (८६) पक्षों के शेष रहते हुए अर्हन् भगवान् ऋषभ देव ने काल किया यावत् सर्व दुःखों से रहित हो गए ॥

२. जिस समय कोसल निवासी अरहन्त ऋषभ भगवान ने काल किया, और जन्म जरा मरण रूपी बन्धनों से छूट गए तथा सिद्ध, बुद्ध और सब दुःखों से रहित हुए उस समय देवेन्द्र देवराज शक्र का आसन हिला ॥

३. तब देवेन्द्र देवराज शक्र ने अपने आसन को हिला देख अवधि ज्ञान का प्रयोग किया और तीर्थंकर भगवन्त तक अवधि ज्ञान पहुंचा कर[2] कहा "ओ हो! जम्बुद्वीप के भारत वर्ष में कोसल निवासी अरहन्त ऋषभ भगवान् का निर्वाण हुआ है। चूंकि अतीत, वर्तमान और अनागत देवेन्द्र देवराज शक्रों का यह परम्परा धर्म है कि तीर्थंकरों की निर्वाण महिमा करें, इस वास्ते मैं भी जाऊं और भगवान तीर्थंकर की निर्वाण महिमा करूं; यह कह कर चौरासी हजार सामानिक देवताओं से, तेतीस त्रायस्त्रिंशक[3] देवताओं से, चार लोक पालों से यावत् चारों ओर के चौरासी हजार आत्मरक्षक देवताओं से, और बहुत से सौधर्म कल्प वासी, वैमानिक देवता देवियों से घिरा हुआ उस उत्कृष्ट देव गति से यावत् असंख्य द्वीप समुद्रों के बीचों बीच जिधर अष्टापद पर्वत

(१) जैन शास्त्र में एक बरस की तीन मौसिमें भी कही हैं जैसे बरसात (सावन, भादों, असौज, कातक) हेमन्त (सरदी) और ग्रीष्म (गरमी)।

(२) अर्थात् अवधि ज्ञान से भगवान् को देखा।

(३) यह देवता पूर्व जन्म में ३३ श्रावक थे जो एक जैसी धर्म क्रिया करके देवता बने इन का वर्णन भगवती सूत्र में है।

पर भगवान् तीर्थंकर का शरीर था उधर आया और उदास, निरानन्द और अश्रुपूर्ण नेत्रों वाला तीर्थंकर के शरीर को तीन बार आदक्षिण प्रदक्षिणा करके न बहुत निकट न बहुत दूर, सेवा करता हुआ बैठ गया॥

४ तब ईशान नामा देवेन्द्र देवराज उत्तरार्ध लोक का स्वामी अट्ठाईस लाख विमानों का मालिक, हाथ में शूल धारण किये बैल पर चढ़ा हुआ सुरेन्द्र, साफ सुथरे वस्त्र पहिरे हुए शक्र की तरह अपने परिवार के साथ आया यावत् बैठ गया॥

५ तब शक्र नामा देवेन्द्र देवराज उन बहुत से भवनपति, व्यन्तर, ज्योतिषी, वैमानिक देवों को इस प्रकार बोला, "हे देवताओं के प्यारो! शीघ्र ही नन्दन वन से सरस गोसीस[४] और चन्दन की लकड़ी ले आओ और तीन चिताएं बनाओ—एक भगवान तीर्थंकर के लिये, एक गणधरों के लिये, और एक बाकी साधुओं के लिये। उसके पश्चात् हे देवताओं के प्यारो! मृग, बैल, घोड़े यावत् जंगली बेलों पत्तों से चित्रित तीन पालकियां बनाओ॥

६ तब शक्र नामा देवेन्द्र देवराज ने जरा मरण से रहित हुए तीर्थंकर भगवान् के शरीर को पालकी में डाल कर चिता पर रख दिया॥

तब उन बहुत से देवताओं ने गणधर और साधुओं के शरीर को पालकी में डाल कर चिता पर रख दिया॥

७ तब उस शक्र नामा देवेन्द्र देवराज ने अग्नि कुमार देवताओं को बुला कर कहा "हे देवताओं के प्यारो! शीघ्र ही तीर्थंकर की चिता में और गणधर और साधुओं की चिता में अग्निकाय विकुर्वो[५] (उत्पन्न करो)। तब उन अग्नि कुमार देवताओं ने अग्नि काय विकुर्वी॥

८ तब वायु कुमार देवताओं ने वायु विकुर्वी, अग्निकाय को उद्दीपन किया, तीर्थंकर के शरीर को, गणधर और साधुओं के शरीरों को जला दिया॥

(४) एक प्रकार की चन्दन की लकड़ी।

(५) देव शक्ति (जादू) से वस्तु बनाने को 'विकुर्वना' कहते हैं।

९ तब उन देवताओं ने सब चिताओं में अगर, तुरुक, घी और शहद डाला॥

तब मेघ कुमार देवों ने उन चिताओं को क्षीर समुद्र के पानी से बुझा दिया॥

१० तब उस शक्र नामा देवेन्द्र देवराज ने तीर्थंकर भगवान् की ऊपर की दाहिनी डाढा ले ली। ईशान नामा देवेन्द्र देवराज ने ऊपर की बामी डाढा ली। चमर नामा असुरेन्द्र असुरराजा ने नीचे की दाहिनी डाढा ली। बली नामा वैरोचनेन्द्र वैरोचन राजा ने नीचे की बामी डाढा ली। बाकी के भवन पति यावत् वैमानिक देवताओं ने यथा योग्य बाकी के शरीर के अङ्ग लिये, किसी ने जिन भगवान् की भक्ति करके, किसी ने परम्परा का आचार समझ कर और किसी ने धर्म समझ कर॥

११ तब उस शक्र नामा देवेन्द्र देवराज ने उन देवों को कहा "शीघ्र ही हे देवताओं के प्यारो! सर्व रत्न मय चैत्य स्तूप[६] बनाओ— एक तीर्थंकर भगवान् की चिता पर, एक गणधरों की चिता पर और एक बाकी साधुओं की चिता पर। उन देवों ने वैसे ही किया।

१२ तब उन सब देवों ने आठ दिन का महोत्सव करके जिधर अपने विमान, भवन, सभा और मानवक चैत्यस्तम्भ थे उधर आकर वज्रमयी गोल डब्बों में जिन भगवान् की डाढाओं को डाल दिया और बढ़िया सुन्दर माला और धूप से उन की पूजा की॥

(जम्बुद्वीप प्रज्ञप्ति)

---

(६) स्तूप एक प्रकार की मढ़ी होती थी जो बौद्धों और जैनियों में बहुत पूजे जाते थे। जैन स्तूप मथुरा में मिला है, बौद्ध स्तूप तो हिन्दोस्तान भर में मिलते हैं।

३ मेघकुमार

१ उस काल उस समय में चंपा नामा नगरी थी। (वर्णन)। उस चंपा नगरी के बाहिर पूर्वोत्तर दिशि अर्थात् ईशान कोण में पूर्णभद्र या पुण्यभद्र, नामा चैत्य था (वर्णन)। वहां चंपा नगरी में कोनिक[१] नामा राजा था (वर्णन)।

२ उस काल उस समय में श्रमण भगवान् महावीर के शिष्य आर्य सुधर्मा नाम स्थविर जाति से संपन्न, बल, रूप, विनय, ज्ञान, दर्शन, चारित्र तथा लाघव से संपन्न, ओजस्वी, तेजस्वी, वर्चस्वी, यशस्वी, क्रोध को जीते हुए, मान को जीते हुए, माया को जीते हुए, लोभ को जीते हुए, इन्द्रियों को जीते हुए, निद्रा को जीते हुए, परीषहों को जीते हुए, जीने की आशा और मरने के भय से रहित, तप में प्रधान, गुण में प्रधान इसी प्रकार करण, चरण, निग्रह, निश्चय, आर्जव, मार्दव, लाघव, क्षमा, गुप्ति, मुक्ति, विद्या, मन्त्र, ब्रह्मचर्य, वेद, नय, नियम, सत्य, शौच, ज्ञान, दर्शन तथा चारित्र में प्रधान, उदार, घोर, घोरव्रती, घोर ब्रह्मचर्य वासी, शरीर में निर्मोही, सारी तेजु लेश्या[२] को शरीर में संकोचे हुए, चौदह पूर्व धारी, चार ज्ञान के धरता, पांच सौ साधुओं से परिवृत, आगे ही आगे चलते हुए, ग्राम से ग्राम को जाते हुए सुख पूर्वक विहार करते हुए जिधर चंपा नगरी थी, जिधर पूर्णभद्र चैत्य था, उधर आए। आकर यथायोग्य स्थान प्राप्त करके संयम और तप से आत्मा को पवित्र करते हुए रहने लगे।

३ (तब चंपा नगरी से परिषदा निकली। कोनिक निकला। धर्म कहा गया। परिषदा जिस दिशा से आई थी, उसी दिशा को चली गई।)

---

(१) कोनिक या कूनिक जिसका दूसरा नाम अजातशत्रु था, जैन, बौद्ध साहित्य में बहुत प्रसिद्ध है। पुराणों में भी इस का नाम आता है।

(२) एक प्रकार की अग्नि जिसे शरीर से निकाल कर उसके साथ दूसरे को भस्म कर सकते हैं। यह तपस्या करने से प्राप्त होती है।

उस काल उस समय में आर्य सुधर्मा नाम साधु के बड़े शिष्य आर्य जम्बू नाम साधु काश्यप गोत्रीय, सात हाथ ऊंचे, आर्य सुधर्मा स्थविर के न ही दूर न ही निकट, जानू ऊंचे और सिर नीचे किये हुए, ध्यान रूपी कोठे में गए हुए संयम और तप से आत्मा को शुद्ध कर रहे थे।

४ तब वह जम्बू साधु श्रद्धा वाले, संशय वाले, कुतूहल वाले उठे जिधर आर्य सुधर्मा स्थविर थे उधर आए और आर्य सुधर्मा स्थविर को तीन बार आदक्षिण प्रदक्षिणा कर के, वन्दना नमस्कार कर के, आर्य सुधर्मा स्थविर के न बहुत निकट और न बहुत दूर सेवा करते हुए, नमस्कार करते हुए, सन्मुख हो कर, हाथ जोड़ कर, विनय के साथ सेवा करते हुए बोले कि 'हे महाराज ! यदि श्रमण भगवान् महावीर ने जो कि आदि के करने वाले हैं, तीर्थ के करने वाले हैं, स्वयं संबुद्ध हैं, त्रिलोकी के नाथ हैं, त्रिलोकी के प्रदीप हैं, त्रिलोकी के उद्योत करने वाले हैं, अभय दान देने वाले हैं, शरण देने वाले हैं, चक्षु देने वाले हैं, मार्ग देने वाले हैं, धर्म देने वाले हैं, धर्म के उपदेशक हैं, उत्तम धर्म रूपी पृथ्वी के चक्रवर्ती हैं, उत्तम, अप्रतिहत ज्ञान दर्शन के धारी हैं, (कर्म रूपी वैरियों को) जीतने वाले हैं, (दूसरों को) जिताने वाले हैं, (आप) बुद्ध हैं, (औरों को) बोध कराने वाले हैं, (आप) मुक्त हैं, (औरों को) मुक्त कराने वाले हैं, (स्वयं) तरे हुए हैं, (औरों को) तारने वाले हैं, जिन्हों ने सुखदाई, अचल, दुःखरहित, अनन्त, अक्षय, बाधा पीड़ा रहित, अपुनरावर्तक, शाश्वत स्थान को प्राप्त किया है, अगर उन्हों ने पांचवे अङ्ग (भगवती) का यह अर्थ निरूपण किया है तो महाराज ! छठे अङ्ग ज्ञाताधर्मकथा का क्या अर्थ कहा है ?'

हे जम्बू ! श्रमण भगवान् महावीर ने छठे अङ्ग के दो श्रुतस्कन्ध कहे हैं, ज्ञात[३] और धर्मकथा।

---

(३) ज्ञात = दृष्टान्त, किसी धर्म सम्बन्धि गुण या अवगुण को स्पष्ट रूप से वर्णन करने के लिये दृष्टान्त, कथा या उपमा।

५ महाराज ! अगर श्रमण भगवान् महावीर ने छट्ठे अङ्ग के दो श्रुत स्कन्ध कहे हैं, तो महाराज ! पहिले श्रुतस्कन्ध के कितने अध्ययन कहे हैं ?

हे जम्बू ! श्रमण भगवान् महावीर ने ज्ञातों के उन्नीस अध्ययन कहे हैं जैसे १ उत्क्षिप्त[४] ज्ञात, २ संघाड़ा, ३ अण्ड, ४ कूर्म, ५ शैलक, ६ तुम्बा ७ रोहिणी, ८ मल्ली, ९ माकन्दी, १० चन्द्रमा, ११ दाव द्रव (वृक्ष), १२ उदक (पानी) ज्ञात, १३ मेंढक, १४ तेतली, १५ नन्दि फल, १६ अमर कंका, १७ आकीर्ण जाति का घोड़ा, १८ सुसमा दारिका और १९ पुण्डरीक ज्ञात यह उन्नीस ज्ञात हैं।

६ हे महाराज ! अगर श्रमण भगवान् महावीर ने ज्ञातों के उन्नीस अध्ययन कहे हैं, तो महाराज ! पहिले अध्ययन का क्या अर्थ कहा है ?

हे जम्बू ! उस काल उस समय में इसी जम्बुद्वीप के भारत वर्ष के दक्षिणार्ध भारत में राजगृह नाम नगर था (वर्णन)। गुण शिलक नाम चैत्य था (वर्णन)। वहां राजगृह नगर में श्रेणिक नामा राजा था (वर्णन)। उस श्रेणिक राजा की नन्दा नाम रानी थी (वर्णन)। उस श्रेणिक राजा का पुत्र नन्दा रानी का आत्मज अभय नाम कुमार था (सब गुणों में पूर्ण यावत् रूप-वान्। श्रेणिक राजा को सब कार्यों में उस पर विश्वास था। वह उसके राज्य की, राष्ट्र की, कोश की, महल की, सेना की, वाहनों की, नगर की, अन्तःपुर की स्वयमेव खबरदारी करता हुआ रहता था।

७ अथ उस श्रेणिक राजा की धारिणी नामा रानी थी। एक बार रात्रि के पहिले भाग में धारिणी रानी जब कि वह अपनी सेज पर कुछ सोई कुछ जागती हुई ऊंघ रही थी एक बड़े सात हाथ ऊंचे, चांदी के पर्वत की भांति श्वेत, आकाश में सुन्दरता के साथ रोलते हुए दौड़ते हुए हाथी को अपने मुंह में आते हुए

(४) उठाया हुआ। मेघ कुमार ने हाथी के भव में पैर उठाए रक्खा था इस से इस ज्ञात (दृष्टान्त) का नाम उत्क्षिप्त हुआ. देखो सूत्र ६१ ॥

को देखकर जाग पड़ी५। हृष्ट तुष्ट होकर उस स्वप्न को दिल में धारण करके अपनी सेज पर से उठी और राजहंस जैसी धीर और शान्त गति के साथ जिधर श्रेणिक राजा था उधर आई आकर श्रेणिक राजा को इष्ट, कान्त और प्रिय वचनों से जगाया। श्रेणिक राजा से आज्ञा प्राप्त करके नाना मणि रत्नों से चित्रित भद्रासन पर बैठ गई और आश्वस्त विश्वस्त होकर मस्तक पर अञ्जलि करके इस प्रकार बोली, "हे देवताओं के प्यारे! आज उस ऐसी सेज पर कुछ सोती कुछ जागती हुई स्वप्न में अपने मुंह में हाथी को आते हुए देख कर मैं जाग पड़ी। अब हे देवताओं के प्यारे! इस स्वप्न का क्या विशेष फल होगा?

८ तब वह श्रेणिक राजा उस धारिणी रानी के पास से यह बात सुन कर हृष्ट तुष्ट हुआ उस स्वप्न को दिल में धारण करके उस पर विचार में मग्न हुआ और अपने स्वाभाविकमति पूर्वक विज्ञान से उस स्वप्न के अर्थ का निश्चय किया और धारिणी रानी को बधाई देता हुआ इस प्रकार बोला, "हे देवताओं की प्यारी! तुमने बड़ा उदार स्वप्न देखा है, बड़ा मङ्गलकारी स्वप्न देखा है। हे देवताओं की प्यारी! तुम्हें धन का लाभ होगा, तुम्हें पुत्र का लाभ होगा, सुख का लाभ होगा। नौ महीनों के पूरे होने पर साढ़े सात दिन रात बीतने पर हमारे कुल के झण्डे रूप, हमारे कुल के भूषण रूप बालक को जनेगी और वह बालक बाल्यावस्था को उल्लङ्घ कर शूर वीर राजा होगा। इस लिये आरोग्य, तुष्टि, दीर्घायु कल्याणकारक तुम ने हे देवी! स्वप्न देखा है। इस तरह बार २ उस को बधाई देता रहा।

९ तब वह धारिणी रानी श्रेणिक राजा से इस प्रकार उत्तर दी हुई हृष्ट तुष्ट अपनी सेज पर बैठ गई और यूं बोली कि; "मत यह मेरा उत्तम, प्रधान और मंगलीक स्वप्न दूसरे खोटे स्वप्नों से काटा जाए," यह विचार कर के देव गुरु सम्बन्धी शुभ और धार्मिक कथाओं से स्वप्नजागरण जागती रही॥

---

५ गर्भवती स्त्री को स्वप्न आना और दोहद (इच्छा विशेष) का होना इसकी प्रथा बहुत पुरानी है॥

१० तब उस श्रेणिक राजा ने विविध शास्त्रों में कुशल ऐसे स्वप्न के फल बतलाने वालों को बुलाया और धारिणी रानी के देखे हुए स्वप्न का फल पूछा।

११ इस प्रकार पूछने पर वह स्वप्न पाठक स्वप्न शास्त्रों का उच्चारण करते हुए बोले, "हे स्वामिन्! हमारे स्वप्नशास्त्र में बयालीस स्वप्न और तीस महास्वप्न कुल बहत्तर स्वप्न कहे हैं। तब हे स्वामिन्! अरहन्तों की माताएं, चक्रवर्तियों की माताएं अरहन्त के या चक्रवर्ती के गर्भ में आने पर इन तीस महास्वप्नों में से यह चौदह महास्वप्न देख कर जाग पड़ती हैं जैसे:—हाथी, बैल, सिंह, अभिषेक, माला, चन्द्र, सूर्य, ध्वजा, कुम्भ, कमलों का तालाब, सागर, विमान, भवन, रत्नों का ढेर और (अग्नि की) ज्वाला। फिर हे स्वामिन्! माण्डलिकों[१] की माताएं माण्डलिक के गर्भ में आने पर इन चौदह महास्वप्नों में से किसी एक महास्वप्न को देख कर जाग पड़ती हैं। इस लिये हे स्वामिन्! धारिणी रानी ने बड़ा उदार स्वप्न देखा है। अब निश्चय से हे स्वामिन्! नौ महीनों के पूरे होने पर धारिणी रानी के एक बालक पैदा होगा और वह बालक भी या तो राज्य का पति राजा होगा या पवित्र आत्मा वाला साधु।"

१२ तब उस धारिणी रानी को दो महीनों के गुजर चुकने पर और तीसरा महीना लगने पर उस गर्भ के दोहले के समय में इस प्रकार का अकाल मेघों में दोहला उत्पन्न हुआ, 'धन्य हैं वह माताएं, पवित्र हैं वह माताएं जो मेघों के उदय होने पर हस्ति रत्न पर चढ़ी हुई सब तरफ घूमती हुई अपने दोहले को पूर्ण करती हैं। इसलिये मैं भी मेघों के उदय होने पर यावत् दोहले को पूर्ण करूं।

१३ तब वह धारिणी रानी उस दोहले के अपूर्ण रहने पर असंप्राप्त दोहला असंपूर्ण दोहला सूखी हुई, भूखी हुई, पतली दुबली हो गई।

१४ तब उस धारिणी रानी के अङ्ग परिचारक और आभ्यन्तरिक सदा-सेवक जिधर श्रेणिक राजा था उधर आए, आ कर बोले, "हे स्वामिन्! आज धारिणी रानी सूखी भूखी आर्तध्यान में बैठी हुई कुछ सोच रही है।"

---

१ एक प्रकार का बड़ा राजा।

१५ तब वह श्रेणिक राजा जिधर धारिणी थी उधर आया, और उस से पूछा,' हे देवताओं की प्यारी ! आर्तध्यान में बैठी हुई तुम क्या सोच रही हो ?"

तब वह धारिणी रानी बोली, "हे स्वामिन् ! मुझ को इस प्रकार का अकाल मेघों में दोहला उत्पन्न हुआ है।"

१६ तब वह श्रेणिक राजा धारिणी रानी को बोला, "हे देवताओं की प्यारी ! तुम आर्तध्यान मत ध्याओ, मैं ऐसा यत्न करूंगा जिससे कि तुम्हारे इस अकाल दोहले की मनोरथ संपत्ति हो जावेगी।

१७ तब उस श्रेणिक राजा ने अभय नाम कुमार को बुला कर कहा, "हे पुत्र ! तेरी सौतेली माता धारिणी रानी को अकाल मेघों के विषय दोहला उत्पन्न हुआ है। उपायों द्वारा उस दोहले की पूर्ति को न देखता हुआ टूटे हुए मन के संकल्प वाला मैं इस फिकर में हूं।"

१८ तब वह अभयकुमार श्रेणिक राजा को ऐसे बोला कि "हे पिता जी ! आप यह फिकर मत करें। मैं ऐसा यत्न करूंगा जिससे कि मेरी सौतेली माता धारिणी रानी के अकाल मेघों में दोहले की मनोरथ संपत्ति हो जावे।"

१९ तब उस अभय कुमार के मन में इस प्रकार का संकल्प उठा, "निश्चय है कि मेरी सौतेली माता धारिणी रानी के अकाल मेघों के दोहले की मनोरथ संपत्ति दिव्य उपाय के बिना मानुषिक उपाय से नहीं हो सकी। मेरा पूर्वजन्म का मित्र सौम्य कल्पवासी देवता बड़ी ऋद्धि संपत्ति वाला है। इसलिये मुझे मुनासिब है कि पोषध-शाला में पोषध लेकर ब्रह्मचर्य धारण करके अकेला, बिना किसी दूसरे साथी के, दर्भ के संथारे पर बैठा हुआ, अष्टम भक्त का व्रत ग्रहण करके, पूर्व जन्म के मित्र देवता को मन में याद करता हुआ बैठा रहूं, तब वह पूर्व जन्म का मित्र देवता मेरी सौतेली माता धारिणी देवी के अकाल मेघों में दोहले को पूर्ण करेगा॥"

इस प्रकार विचार करके पोषधशाला में झाड़ दिया, पाखाने पेशाब की जगह अर्थात् टट्टी को साफ़ किया, दर्भ के संथारे पर बैठे,

अष्टम भक्त का पूरा से, पूर्व जन्म के मित्र देवता को मन में याद करता हुआ रहने लगा॥

२० तब वह पूर्व जन्म का मित्र देवता अभयकुमार के पास प्रकट हुआ और उसने अभयकुमार की प्रार्थना पर अकाल मेघों की विकुर्वा।

२१ तब उस धारिणी रानी ने अकाल मेघों में अपने दोहले को सम्यक् प्रकार पूर्ण किया और नौ महीने पूरे होने पर उसके मेघ नामा बालक पैदा हुआ॥

तब उस मेघ कुमार के माता पिता ने क्रम पूर्वक नाम करण पैङ्क-मण०, पयचंकमण८ और मुण्डन संस्कार बड़ी ऋद्धि के साथ किये।

२२ तब मेघकुमार के माता पिता उसको गर्भ से आठवें साल में शुभ तिथि करण मुहूर्त में कला आचार्य के पास लेगए। तब उस कला-आचार्य ने मेघकुमार को लेखादि, गणित९ प्रधान जिन में ऐसी बहत्तर कलाएं सूत्र सहित, अर्थ सहित तथा क्रिया सहित सिखलाईं जैसे १ लिखना, २ गणित, ३ रूप, ४ नृत्य, ५ गीत, ६ बाजन्तर, ७ स्वरगान, ८ ढोलक, ९ छैने (समताल), १० जूआ, ११ पवाने, १२ सार पासा, १३ अष्टापद (चौपड़), १४ नगर बनाना, १५ पानी मिट्टी मिलाना, १६ अन्न विधि, १७ पान विधि, १८ वस्त्र विधि, १९ विलेपन विधि, २० शयन विधि, २१ आर्या छन्द बनाना, २२ प्रहेलिका, २३ मागधी रचना, २४ स्त्री लक्षण, २५ गाथा रचना, २६ गीति रचना, २७ श्लोक रचना, २८ हिरण्य जड़ना, २९ सुवर्ण जड़ना, ३० चूनियां जड़ना, ३१ आभरण विधि, ३२ तरुणी प्रतिकर्म अर्थात् युवतियों की वेष रचना, ३३ पुरुष लक्षण, ३४ घोड़े के लक्षण, ३५ हस्ति लक्षण, ३६ गाय के लक्षण, ३७ कुक्कुट लक्षण, ३८ छत्र लक्षण, ३९ दण्ड लक्षण, ४० तलवार के लक्षण, ४१ मणियों के लक्षण, ४२ कौड़ियों के लक्षण, ४३ वास्तु विद्या (घर बनाना),

७ बालक को अन्न खिलाना।

८ बालक को अङ्गुलि पकड़ कर चलाना।

९ रूप के तीन अर्थ टीका कारों ने किये हैं १ मांग भरना २ चित्र बनाना ३ रुपये पैसे को परखना।

४४ सेना के डेरों का माप, ४५ नगर का माप, ४६ व्यूह रचना, ४७ प्रति व्यूह रचना, ४८ चार रचना, ४९ प्रतिचार रचना, ५० चक्र व्यूह रचना, ५१ गरुड व्यूह रचना, ५२ शकट व्यूह रचना, ५३ युद्ध, ५४ नियुद्ध, ५५ युद्धायुद्धी, ५६ हड्डियों[१०] का युद्ध, ५७ मुष्टि युद्ध, ५८ भुजा का युद्ध, ५९ लता का युद्ध, ६० बाण चलाना, ६१ तलवार चलाना, ६२ धनुर्वेद, ६३ हिरण्य पाक, ६४ सुवर्ण पाक, ६५ धागों का खेल, ६६ वट्टों का खेल, ६७ नालिका का खेल, ६८ पत्तों पर चित्र खोदना ६९ कड़ों पर चित्र खोदना, ७० सजीव[११], ७१ निर्जीव[१२], ७२ शकुन विचार (पक्षियों का स्वर) ॥[१३]

तब वह कलाआचार्य मेघ कुमार को कलाएं सिखा कर माता पिता के पास लाया।

२३ तब मेघ कुमार के माता पिता ने उस कला आचार्य का मधुर वचनों से और बहुत से सुगन्धित माल्यालंकारों से सत्कार किया और बहुत सा जीविका के अनुसार प्रीति दान देकर विसर्जन किया।

तब वह मेघकुमार बहत्तर कला में पण्डित होगया; सोए हुए उस के नौ[१४] अङ्ग जाग पड़े और वह अठारह प्रकार की देशी भाषाओं में विशारद (चतुर) हो गया।

२४ तब उस मेघकुमार के माता पिता ने शुभ तिथि करण मुहूर्त में मेघकुमार का अपने जैसे राज कुलों में से लाई हुई आठ राज कन्याओं के साथ विवाह कर दिया।

२५ तब (एक दिन) वह मेघकुमार उत्तम प्रासाद के ऊपर बैठा हुआ, बजते हुए मृदङ्गों के साथ, तथा उत्तम युवतियों द्वारा

---

१० कुहनी या मुक्के मार के लड़ना।

११ मरे हुए को जीवित करना।

१२ जीते हुए को मुरदा सा बनाना।

१३ इन ७२ कलाओं की विस्तार से व्याख्या कहीं नहीं मिलती।

१४ दो आंखें, दो कान, दो नासिका, जिह्वा त्वचा और मन॥ (टीका)

संयुक्त बत्तीस प्रकार के नाटकों के साथ बहलाया जाता हुआ अनेक काम भोगों को अनुभव कर रहा था।

२६ उस काल उस समय में श्रमण भगवान् महावीर आगे ही आगे चलते हुए, ग्राम ग्राम फिरते हुए, सुख पूर्वक विहार करते हुए जिधर राजगृह नगर में गुणशिलक चैत्य था उधर आए।

२७ तब उस मेघकुमार ने कंचुकी के पास से श्रमण भगवान् महावीर के आने का हाल सुनकर हृष्ट तुष्ट हो कर घर के नौकरों को बुला कर कहा, "शीघ्र ही हे देवताओं के प्यारो! चार घंटियों वाला घोड़ों का रथ जोड़ कर यहां लाओ।

२८ तब वह मेघकुमार चार घंटियों वाले घोड़ों के रथ पर चढ़ा हुआ जिधर श्रमण भगवान् महावीर थे उधर आया यावत् विनय के साथ बैठ गया। तब श्रमण भगवान् महावीर ने मेघकुमार को और उस बड़ी परिषदा को विचित्र धर्म का उपदेश किया।

२९ तब मेघकुमार श्रमण भगवान् महावीर के पास से धर्म सुन कर हृष्ट तुष्ट हुआ और माता पिता की ओर आया, आकर माता पिता को पालागन किया और बोला, "हे माता पिता जी! मैंने श्रमण भगवान् महावीर के पास से धर्म सुना है और वह धर्म इष्ट और रुचिकर है। इस लिये हे माता पिता जी! आप से आज्ञा पाकर श्रमण भगवान् महावीर के पास मुण्डित होकर गृहस्थी से साधु बनना चाहता हूं।"

३० तब वह धारिणी रानी उस अनिष्ट अकान्त और अप्रिय वचन को सुन कर शाप करती हुई, सोच करती हुई और रोती हुई यूं बोली, "हे पुत्र! तू हमारा एक ही लड़का है जो इष्ट, कान्त और प्रिय है। हे पुत्र! हम तेरा वियोग एक क्षण मात्र भी नहीं सह सकें! इसलिये हे पुत्र! जब तक हम जीते हैं मानुष भोगों को भोगो। इस के पश्चात् जब हम काल कर जायें तब पक्की उमर में निरपेक्ष दीक्षा ले लेना।"

३१ तब वह मेघकुमार माता पिता के यह वचन सुन कर बोला, "हे माता पिता जी! जो कुछ आप मुझे कहते हैं सो ठीक है। परन्तु हे माता पिता जी! यह मानुष भव अध्रुव है, अनियत है,

अनित्य है, सैकड़ों व्यसन और उपद्रवों से अभिभूत, बिजली की तरह चंचल, अनित्य है, जलबिन्दु की तरह लोल और चपल है, कुशा के अग्र भाग में लगे हुए बिन्दु के समान (सद्यः पाति) है, सन्ध्या के मेघों की लाली की तरह (विनश्वर) है, स्वप्न की तरह (मिथ्या) है, पीछे या पहिले अवश्य ही छोड़ना पड़ेगा। हे माता पिता जी ! कौन जानता है कि किस ने पहिले जाना है, किस ने पीछे जाना है, इस लिये मैं यावत् दीक्षा लेना चाहता हूं।"

तब जब उस मेघकुमार के माता पिता विषयानुकूल अनेक समझौतियों और उपदेशों द्वारा मेघकुमार को समझा न सके तब वह विषयों के प्रतिकूल और संयम में भय और उद्वेग कराने वाले उपदेशों के द्वारा इस प्रकार बोले, "हे पुत्र ! यह जो निर्ग्रन्थों का प्रवचन है सो सच्चा है, अनुत्तर है, केवली प्रणीत है, परिपूर्ण है, शुद्ध है, (शंका रूपी) शल्यों को काटने वाला है, सिद्धि का मार्ग है, मुक्ति का मार्ग है, सब दुःखों से रहित यह मार्ग है, सर्प की न्याईं एकान्त दृष्टि वाला है, उस्तरे की न्याईं एक धार वाला है, लोहे के दाने चबाने की न्याईं (कठिन) है, रेत के ग्रास की न्याईं नीरस है, गङ्गा नदी के प्रवाह के प्रतिकूल जाने की तरह मुश्किल है, महा समुद्र की तरह भुजाओं करके दुस्तर है, तलवार की धार के ऊपर चलने की तरह है। हे पुत्र ! श्रमण निर्ग्रन्थों को आधाकर्मी आहार, उद्देशिक आहार, (साधु के निमित्त) खरीदा हुआ या बनाया हुआ, (दूर) रक्खा हुआ, सजाया हुआ, दुर्भिक्ष[१५] का आहार, बद्दलिय[१६] आहार, कान्तार[१७] आहार, बीमार साधु का भोजन, मूल, कन्द, फल, बीज या हरी का भोजन खाना पीना नहीं कल्पता। तू तो हे पुत्र ! सुखों में पला है दुःखों से बिलकुल अनभिज्ञ है। तू सरदी को, गरमी को, भूक को, प्यास को, वात पित्त तथा संनिपात के अनेक प्रकार

१५ दुर्भिक्ष पड़ने पर जो भूखों को अन्न बांटा जाता है॥

१६ बरखा न होती तो लोग अन्न दान करते हैं ताकि बरखा हो जाए, ऐसा अन्न॥

१७ जंगल या अटवि में जाते हुए पथिक जो अन्न अपने साथ ले जाते हैं॥

के रोग आतंकों को, छोटे बड़े इन्द्रियों के दुःखों को, आए हुए बाईस उपसर्ग और परीषहों को अच्छी तरह सहन करने के समर्थ नहीं है। इसलिये हे पुत्र ! तब तक भोगो यावत् दीक्षा ले लेना।

३३ तब वह मेघकुमार मात पिता के ऐसा कहने पर बोला, "हे माता पिता जी ! जो कुछ आप मुझे कहते हैं, ठीक है। वेशक क्लीव, कातर, कापुरुष, इस लोक में प्रतिबद्ध और परलोक से विमुख ऐसे प्राकृत जन के लिये निर्ग्रन्थों का धर्म पालना बहुत कठिन है परन्तु धीर पुरुष को इसे पालना कुछ कठिन नहीं। इस लिये मैं चाहता हूं यावत् दीक्षा ले लूं।

३४ तब मेघकुमार के माता पिता उसे यूं बोले "हे पुत्र ! हम तेरी एक दिन की भी राज्यश्री देखना चाहते हैं (अर्थात् तू राजा बन जा, चाहे एक ही दिन राज करना)।"

तब मेघकुमार चुप हो गया।

३५ तब उस श्रेणिक राजा ने घर के नौकरों को बुला कर यूं कहा, "हे देवताओं के प्यारो ! मेघकुमार का बहुत धन दौलत के साथ खूब राज्याभिषेक करो।"

तब उन घर के नौकरों ने वैसे ही किया।

३६ तब वह श्रेणिक राजा बहुत से गणनायक तथा दण्डनायकों से घिरा हुआ मेघकुमार को एक सौ आठ सुवर्णमयी घड़ों के जल से राज्याभिषेक के तौर पर नहलाता हुआ बोला, "हे नंद ! तुम्हारी जय हो। हे भद्र ! तुम्हारी जय हो। तुम्हारा कल्याण हो। न जीते हुए (देश) को जीतो। जीते हुए (देश) को पालो। जीते हुए (देश) के बीच में रहो" उस ने इस प्रकार जय शब्द का प्रयोग किया।

तब वह मेघ (कुमार) राजा हो गया।

३७ तब उस मेघराजा के माता पिता बोले, "कहो बेटा ! क्या तुम्हें देवें ?"

तब वह मेघ राजा माता पिता से ऐसे बोला "हे ..."

जी ! मैं कुत्रिकापण[१८] की दुकान से रजोहरण और उपकरणों[१९] को मंगवाना तथा नाई को बुलवाना चाहता हूं।"

३८ तब उस श्रेणिक राजा ने नौकरों को बुला कर कहा "हे देवताओं के प्यारो! तुम जाओ, खजाने में से तीन लाख (रुपये या मुहरें) ले कर दो लाख से कुत्रिक की दुकान से रजोहरण और उपकरण ले आओ, और एक लाख से नाई को बुला लाओ॥

तब उन नौकरों ने वैसा ही किया॥

३९ तब उस नाई ने श्रेणिक राजा को हाथ जोड़ कर कहा, "हे स्वामिन्! आज्ञा करिये, मुझे क्या करना है।"

तब उस श्रेणिक राजा ने नाई को कहा, "हे देवताओं के प्यारे! जाओ, तुम सुगन्धित पानी से अपने हाथ पाओं धोओ। सफ़ेद चौहरे कपड़े से मुंह को बांध कर मेघकुमार के चार अङ्गुल छोड़ कर निष्क्रमण[२०] के लिये केशों को काटो॥"

तब उस नाई ने उसी प्रकार केशों को काटा॥

४० तब मेघकुमार की माता ने कीमती हंसचित्रित कपड़े के टुकड़े में अगले केशों को लिया, सुगन्धित पानी से धोया, सरस गोशीर्ष चन्दन के छींटे दिये—देकर सफेद कपड़े में बांधा और रत्नमय डब्बे में डाल दिया। पानी की धारा अथवा टूटी हुई मोतियों की माला के प्रकाश वाले आंसुओं को बहाती हुई, रोती हुई, बिलकती हुई यूं बोली "मेघकुमार का जलसों में तेहवारों में हमें यह अन्तिम[२१] दर्शन होगा" यह कह कर (बालों को) सिरहाने के नीचे रख लिया॥

४१ तब मेघकुमार के माता पिता ने उत्तर को ढलवां एक सिंहासन बनवाया, मेघकुमार को दो तीन बार सफेद और पीले घड़ों से नहलाया, उस के अङ्गों को बुरदार कोमल सुगन्धित रंगदार तौलिये से पोंछा, सरस गोशीर्ष चन्दन के साथ अङ्गों पर लेप

---

१८ देवताओं की ऐसी दुकान जिस में तीन लोक की चीजें मिल सकती हैं॥

१९ पात्र, वस्त्र आदि। २० संसार से निकलना॥

२१ अपश्चिम = न अन्तिम। शुभ अवसर होने से पश्चिम 'आखिरी' के लिये अपश्चिम 'न आखिरी' कहा है॥

किया और नाक की सांस की हवा से उड़ जाने वाला हंसचित्रित कपड़ा उसे पहनाया, हार, अर्धहार, इसी प्रकार एकलड़ी मोतियों की माला, सुनहरी माला, रत्नों की माला, यावत् दिव्य फूलों की माला उसे पहनाई।

४२ तब मेघकुमार को ग्रन्थिम२२, वेष्टिम२२, पूरिम२२ और सांघातिक२२ इन चार प्रकार के फूलों के भूषणों से कल्पवृक्ष की तरह अलंकृत शरीर वाला कर दिया।

४३ तब उस श्रेणिक राजा ने घर के नौकरों को बुला कर कहा, "हे देवताओं के प्यारो! सैकड़ों खम्भों वाली और हज़ार आदमियों करके उठाए जाने के योग्य ऐसी शिबिका अर्थात् पालकी लाओ।

तब वह घर के नौकर पालकी ले आये।

४४ तब वह मेघकुमार पालकी में चढ़ कर उत्तम सिंहासन के ऊपर पूर्व की ओर मुंह करके बैठ गया।

४५ तब उस मेघकुमार की माता स्नान करके, बलिकर्म करके, थोड़े और बहुत मोल वाले भूषणों से अपने शरीर को अलंकृत करके पालकी में चढ़ी और मेघकुमार के दाहें तरफ सिंहासन पर बैठ गई।

४६ तब मेघकुमार के पिता ने घर के नौकरों को बुला कर कहा, "हे देवताओं के प्यारो! एक जैसे, समान रूप और समान वय वाले ऐसे घर के नौकरों में से एक हज़ार उत्तम युवकों को बुला लाओ।"

तब वह बुलाए हुए उत्तम युवक श्रेणिक राजा को कहने लगे, "हे स्वामिन्! हमें आज्ञा दीजिए कि हमें क्या करना है।"

तब वह श्रेणिक राजा उन उत्तम युवकों को बोला कि, "हे देवताओं के प्यारो! मेघकुमार की हज़ार आदमियों करके उठाने योग्य पालकी को उठाओ।" उन्हों ने वैसे ही उठा ली।

४७ तब मेघकुमार के पालकी में चढ़ जाने पर यह आठ मंगलक सब से पहिले उस के आगे चले जैसे स्वस्तिक२३, श्रीवत्स२४, नन्दावर्त२४, वर्द्धमानक२४, भद्रासन, कलश, मत्स्य और दर्पण।

२२ फूलों के भूषण बनाने के प्रकार विशेष॥

२३ साथिया, सातिया॥ २४ साथिये की भांति के आकार विशेष॥

तब बहुत से धन के अर्थी (फ़क़ीर, भिखारी) इष्ट और कान्त मीठे वचनों से लगातार उसकी स्तुति करते हुए यूं बोले, "हे नन्द ! आप की जय हो। हे भद्र ! आप की जय हो।"

४८ तब मेघ कुमार के माता पिता मेघ कुमार को आगे करके जिधर श्रमण भगवान् महावीर थे उधर आए, तीन बार आदक्षिण प्रदक्षिणा की और वन्दना नमस्कार करके बोले, "हे देवताओं के प्यारे ! यह हमारा एक ही पुत्र इष्ट, कान्त, और प्रिय है। जैसे उत्पल या पद्म या कमल कीचड़ में उत्पन्न होता है और जल में वृद्धि पाता है लेकिन कीचड़ की रज से नहीं लिपड़ता इसी प्रकार मेघकुमार कामों[२५] में उत्पन्न हुआ, भोगों में पला तौ भी भोगों की मैल से नहीं लिपड़ा। हे देवताओं के प्यारे ! यह संसार के भय से उद्विग्न, जन्म, जरा और मरण से डरा हुआ, आप के पास मुण्डित होकर गृहस्थी से साधु बनना चाहता है। इस लिये हम आप को शिष्य की भिक्षा देते हैं। आप शिष्य-भिक्षा को स्वीकार करें।"

४६ तब श्रमण भगवान् महावीर ने मेघकुमार के माता पिता के ऐसा कहने पर उन की प्रार्थना को अच्छी तरह स्वीकार किया।

५० तब वह मेघकुमार श्रमण भगवान् महावीर के पास से पूर्वोत्तर दिशि में गया और स्वयं ही आभरण अलंकारों को उतारा।

५१ तब मेघकुमार की माता ने हंस चिन्हित कपड़े के टुकड़े में आभरण अलंकारों को लिया और आंसू गिराती हुई और रोती हुई यूं बोली, "हे पुत्र ! तुमने यत्न करना। तुम ने कोशिश करनी। इस विषय में प्रमाद नहीं करना। हमारा भी यही रास्ता होवे," यह कह कर मेघ कुमार के माता पिता ने श्रमण भगवान् महावीर को वन्दना नमस्कार किया और फिर जिस तरफ से आए थे उसी तरफ चले गए।

५२ तब मेघकुमार पंच मुष्टि[२६] लोच करके श्रमण भगवान् महावीर की ओर आकर बोला, "हे महाराज ! यह संसार जरा और मरण से लिप्त है। जैसे कोई गृहपति घर में आग लगने पर

---

२५ इन्द्रियों के विषय॥ २६ बालों को पांच मुट्ठियों में उखाड़ डाला॥

जो वस्तु थोड़े भार वाली और बहुत मोल वाली होती उसे लेकर अपनी जान के साथ एक तरफ चला जाता है कि यह वस्तु निकाली हुई आगे पीछे इस लोक में हितकर और सुख कर होगी; इसी प्रकार मुझे भी चारित्र रूपी वस्तु इष्ट कान्त और प्रिय है, यह बचाया हुआ संसार का नाश करने वाला होगा। इस लिए मैं चाहता हूं कि मुझे आप ही स्वयं दीक्षा दें, स्वय शिक्षा दें, स्वयं आचार, गोचरी, विनय, चरण, करण, यात्रा, मात्रा की वृत्ति रूप धर्म का उपदेश करें।"

तब श्रमण भगवान् महावीर ने मेघकुमार को स्वयमेव दीक्षा दी यावत् स्वयमेव धर्म का यूं उपदेश दिया, "हे देवताओं के प्यारे! इस प्रकार चलना चाहिये, इस प्रकार ठैरना चाहिये, इस प्रकार बैठना चाहिये, लेटना चाहिये, खाना चाहिये, बोलना चाहिये।"

जिस दिन मेघकुमार गृहस्थी से साधु बना, उस दिन पिछले प्रहर के पूर्व भाग में श्रमण निर्ग्रन्थों के यथायोग्य शय्या संस्तारक बांटने पर मेघकुमार का द्वार के मूल में (अर्थात् देहली के पास) शय्या संस्तारक हुआ।

तब श्रमण निर्ग्रन्थ रात्रि के पहिले प्रहर के पिछले भाग में वाचने के लिये या पूछने के लिये या पाखाना पेशाब के लिये आते जाते हुए कोई मेघकुमार के हाथों से टकराता था इसी प्रकार पैरों से, सिर से, पेट से, शरीर से। इस तरह उस सारी रात भर मेघकुमार एक क्षण भर भी आंखें बन्द न कर सका (अर्थात् सो न सका)।

तब मेघकुमार को इस प्रकार का ख्याल आया, मैं श्रेणिक राजा का पुत्र, धारिणी रानी का आत्मज, मेघकुमार हूं। जब मैं घर में रहता था तब मुझ को श्रमण निर्ग्रन्थ आदर सत्कार देते थे। लेकिन जब से मैं साधु बना हूं तब से लेकर श्रमण निर्ग्रन्थ न मुझे आदर देते हैं न सत्कार करते हैं बल्कि श्रमण निर्ग्रन्थ रात्रि के पहिले प्रहर के पिछले भाग में यावत् मुझ से टकराते रहे, और मैं क्षण भर भी आंखें बन्द न कर सका। इस

लिये मुझे मुनासिब है कि कल रात्रि के (बीतने पर) प्रभात हो जाने पर श्रमण भगवान् महावीर की आज्ञा लेकर फिर घर में रहूं।" यह निश्चय करके आर्त ध्यान के वश दुखी मन वाले उस ने नरक जैसी उस रात को बिताया और अगले दिन रात के (बीतने पर) प्रभात होने पर जिधर श्रमण भगवान् महावीर थे उधर आया यावत् बैठ गया।

५७ तब श्रमण भगवान् महावीर मेघकुमार को "हे मेघ!" ऐसा कह कर बोले, "निश्चय करके तू रात्रि के पहिले पहर के पिछले भाग में श्रमण निर्ग्रन्थों द्वारा वाचना के लिये या पूछने के लिये यावत् घर में रहूं२० । क्या यह बात ठीक है?"

"हे भगवन्! यह बात ठीक है।"

"हे मेघ! इस से पहिले तीसरे जन्म में तू वैताढ्य-पर्वत के पाद मूल में हाथियों का राजा था। वहां पर एक दफा गरमी की मौसिम के समय जेठ२८ के महीने में दावानल२९ की ज्वालाओं से जंगलों के ज्वलित होने पर तथा दिशाओं के धूमाकुल होने पर वावरोले की तरह घूमता हुआ, डरा हुआ और भयभीत तू बहुत से हाथियों से घिरा हुआ एक दिशा से दूसरी दिशा में दौड़ता फिरता था।

५८ तब उस दावानल को देखकर हे मेघ! तुझे यह ख्याल आया "मैं समझता हूं कि मैंने इस प्रकार की अग्नि का उत्पाद कहीं न कहीं पहिले देखा हुआ है।" तब हे मेघ! लेश्या के शुद्ध होने से, परिणाम शुभ होने से, तथा उस (जातिस्मरण) के आवरणीय कर्मों के क्षयोपशम होने से तुझे जातिस्मरण ज्ञान पैदा होगया। तब हे मेघ! तूने इस बात को अच्छी तरह समझा "सचमुच मैंने पिछले जन्म में इस प्रकार की अग्नि का उपद्रव देखा है।"

५९ तब हे मेघ! तुझे यह ख्याल आया, "इसलिये मुनासिब है कि

---

२७ देखो पिछला सूत्र।

२८ अर्थात् जिस मास की पूर्णिमा का चांद ज्येष्ठा या मूला नक्षत्र में रहता है।

२९ जंगल की आग जो बांसों वगैरह की रगड़ से स्वयं प्रगट हो जाती है।

अब मैं गंगा महानदी के दक्षिण तीर पर विन्ध्य पर्वत के पाद-मूल में दावानल से बचने के लिये अपने यूथ[30] के साथ एक बड़ा घेरा[31] डाल लूं।" यह निश्चय करके तूने एक बड़ा घेरा डाला। जहां जहां तृण, पत्र, काष्ठ, कण्टक बेलें, ठुण्ठ या वृक्ष थे यह सब तूने तीन बार हिला कर पाओं के साथ उखाड़ डाले और सूंड़ के साथ पकड़ कर एक तरफ फेंक दिये।

तब तू हे मेघ! उसी मण्डल (घेरे) के निकट हाथियों का राज्य भोगता हुआ रहने लगा।

६० तब एक दफ़ा गरमी की मौसिम के समय जेठ के महीने में वृक्षों के संघर्ष से उठी हुई, सूखे तृण, पत्ते और हवा के संयोग से दीप्त हुई दावानल की ज्वालाओं से जंगलों के भर आने पर बहुत से दूसरे सिंह, व्याघ्र (शेर), रीछ, चीते, गीदड़ और शशक, जिधर वह तेरा मण्डल था उधर आए और अग्नि के भय से डरे हुए एक बिल वासियों[32] के धर्म से रहने लगे। तू भी हे मेघ! उसी मण्डल में उन बहुत से सिंह यावत् शशकों के साथ एक ही बिल वासियों के धर्म से रहने लगा।

६१ तब तूने हे मेघ! इस ख्याल से कि पैर से अपने शरीर को खुज-लाऊं एक पैर उठाया। उस अन्तर[33] (जगह, स्थान) में दूसरे बलवान् जन्तुओं से भींचा हुआ एक शशक आगया।

तब हे मेघ! शरीर का खुजला कर फिर जब तू पैर नीचे रखने को था तो तूने उस (अन्तरे में) आए हुए शशक को देखा और प्राणियों की अनुकंपा से, जीवों की अनुकंपा से तूने वह पैर आकाश में ही उठाए रक्खा, (पृथ्वी पर) नहीं टिकाया।

तब हे मेघ! उस प्राणों की अनुकंपा से तूने मनुष्य आयु का बन्ध किया।

---

३० समूह।

३१ वृक्षों को काट कर साफ की हुई जगह ताकि उसमें आग न आए। जहां इन्धन न होगा, वहां आग नहीं लगेगी।

३२ अर्थात् प्रेम पूर्वक।

[३३] पैर के उठाने से खाली की हुई जगह।

तब वह दावानल अढ़ाई रात दिन तक उस वन को जलाता रहा।

तब अन्त को वह दावानल बुझ[३४] गया।

६२ तब वह सारे सिंह यावत् शशक उस दावानल को बुझा देख अग्नि के भय से रहित, और भूक प्यास से सताए हुए उस मण्डल से निकल कर सब दिशाओं में भाग गए।

६३ तब तू हे मेघ! जीर्ण हुआ हुआ और बुढ़ापे से जर्जरित शरीर वाला उसी मण्डल में बिजली गिरने से मर कर भूमि तल पर गिर पड़ा। तब हे मेघ! तेरे शरीर में बड़ी सख्त वेदना प्रकट हुई। तब हे मेघ! तू उस सख्त वेदना को तीन दिन रात भोगता हुआ एक सौ बरस की पूर्ण आयु पाल कर इसी जंबुद्वीप भरत क्षेत्र के राजगृह नगर में श्रेणिक राजा की धारिणी रानी की कुख में कुमार पने उत्पन्न हुआ।

६४ तब तू हे मेघ! क्रम से गर्भवास (कूख) से निकल कर, बाल्यावस्था को उल्लंघ कर, यौवन को प्राप्त कर मेरे पास मुण्डित हो गृहस्थ से साधु बना।

६५ तब यदि हे मेघ! तिर्यंच योनि में गए हुए और सम्यक्त्व रूपी रत्न को न प्राप्त किये हुए तू ने प्राणियों की अनुकंपा से वह (अपना) पैर आकाश में ही उठाए रक्खा, और (पृथ्वी पर) नहीं टिकाया तो क्यों फिर अब हे मेघ! बड़े कुल में उत्पन्न हो कर, पंचेन्द्रिय पना प्राप्त कर एवं शक्ति, बल, वीर्य, पुरुषकार, पराक्रम से संयुक्त हो कर और मेरे पास दीक्षा लेकर रात को वाचना के लिये या पूछने के लिये जाते (आते) श्रमण निर्ग्रन्थों के पैरों के संघट्टों को सम्यक् प्रकार नहीं सहता ?"

६६ तब श्रमण भगवान् महावीर के पास से यह बात सुन कर परिणामों के शुभ होने से और अध्यवसायों के प्रशस्त होने से मेघकुमार को जाति स्मरण ज्ञान पैदा हो गया। तब उस मेघकुमार ने इस बात को अच्छी तरह समझा।

---

३४ चारों शब्दों का अर्थ "बुझ गया" ऐसा है।

तब एक समय श्रमण भगवान् महावीर ने बाहिर जनपद में विहार किया अर्थात् ग्रामों में विचरने लगे।

तब वह मेघ अनगार अनेक प्रकार की तपश्चर्याओं से अपनी आत्मा को शुद्ध करने लगा।

तब वह मेघ अनगार बड़ी भारी तपश्चर्या से सूखा, भूखा, रूखा, निर्मांस, लहू रहित, कृश, नाड़ियों का जाल सा ही हो गया। जीव बल से चलता है, जीव बल से ठैरता है। भाषा बोल कर थक जाता है। भाषा बोलता हुआ थक जाता है। भाषा बोलूंगा इस ख्याल मात्र से थक जाता है। जैसे कोयलों[३५] की भरी हुई गाड़ी, अथवा काठ से भरी हुई गाड़ी अथवा (सूखे) पत्तों से भरी हुई गाड़ी शब्द करती हुई चलती है शब्द करती हुई ठैरती है इसी प्रकार मेघकुमार भी शब्द करता हुआ चलता है, शब्द करता हुआ ठैरता है[३६]।

उस काल उस समय में श्रमण भगवान् महावीर राजगृह नगर में समोसरे (अर्थात् पधारे)।

तब उस मेघकुमार को रात के पहिले प्रहर के पिछले भाग में धर्म जागरण जागते हुए यह ख्याल आया. "इस प्रकार मैं इस बड़ी तपश्चर्या से यावत् शब्द करता हुआ ठैरता हूं। इसलिये जब तक मुझ में शक्ति, बल, वीर्य, श्रद्धा, धृति, संवेग है और जब तक मेरे धर्माचार्य धर्मोपदेशक श्रमण भगवान् महावीर विचरते हैं तब तक मुझे मुनासिब है कि कलही रात के (बीतने पर) प्रभात हो जाने पर श्रमण भगवान महावीर से आज्ञा पाकर स्वयं ही पांच महाव्रत धारण कर के, गौतम आदि श्रमण निर्ग्रन्थों को क्षमा कर, तथारूप स्थविरों के साथ विपुल पर्वत पर धीरे २ चढ़ कर स्वयं ही बादलों के समूह जैसे (काली) मिट्टी पत्थर के चबूतरे को साफ करके, संलेखना झूसना से शुद्ध होकर, खाना पीना छोड़ कर, मृत्यु की आकांक्षा न करता हुआ विचरूं," ऐसा ठान कर अगले दिन प्रभात होने पर श्रमण भग-

३५ बुझे हुए अङ्गार॥
३६ शरीर की निर्बलता का कैसा अच्छा फोटो खेंचा है॥

वान् महावीर की ओर आकर तीन बार आदक्षिण प्रदक्षिणा करके यावत् बैठ गया।

६८ तब श्रमण भगवान् महावीर मेघकुमार को यूं बोले, "सच मुच हे मेघ! तुझे रात्रि के पहिले पहर के पिछले भाग यावत् काल की आकांक्षा न करता हुआ विचरूं[३७]। क्या मेघ! यह बात ठीक है?"

"हां महाराज! ठीक है।"

६९ तब वह मेघ अनगार श्रमण भगवान् महावीर से आज्ञा पा कर स्वयंमेव पांच महाव्रतों को धारण करके यावत् मृत्यु की आकांक्षा न करता हुआ विचरने लगा।

७० तब वह स्थविर भगवन्त मेघ अनगार की गिलानी रहित सेवा करने लगे। तब वह मेघ अनगार बारह बरस श्रमणों का चारित्र पाल कर, मासिकसंलेखना से आत्मा को शुद्ध करके साठ भोजन वेलाओं को अनशन[३८] से बिता कर, आलोचना प्रति क्रमण करके, (मिथ्यात्व रूपी) शल्य निकाल कर, समाधि को प्राप्त हो, क्रम से काल कर गया।

७१ तब उन स्थविर भगवन्तों ने मेघकुमार को मरा हुआ देख कर मृत्यु सम्बन्धि कायोत्सर्ग किया। उस के उपकरण लेकर श्रमण भगवान् महावीर की ओर आकर यूं बोले, "आप का शिष्य मेघ नामा अनगार जो प्रकृति से भद्र और विनीत था वह आप से आज्ञा पाकर यावत् क्रम से काल कर गया। हे देवताओं के प्यारे! यह मेघ अनगार के उपकरण हैं।'

तब भगवान् गौतम श्रमण भगवान् महावीर को यूं बोले, "हे महाराज! यह मेघ अनगार काल मास में काल करके कहां गया, कहां पैदा हुआ?"

"हे गौतम! मेरा शिष्य मेघ नामा अनगार विजय महाविमान में देवता पने उत्पन्न हुआ है।"

---

३७ देखो पिछला सूत्र।
३८ न खाना, भूके रहना।

"महाराज ! यह मेघ देवतापने से देवलोक में से कहाँ जायगा ? कहाँ उत्पन्न होगा ?"

"हे गौतम ! महा विदेह क्षेत्र में सिद्ध होगा, बुद्ध होगा, निर्वाण प्राप्त करेगा, सब दुःखों का अन्त करेगा।"

७२ इस प्रकार हे जम्बू ! श्रमण भगवान् महावीर ने समझाते हुए, आत्मा को उपालम्भ देने के लिये इस पहिले ज्ञाता अध्ययन का यह अर्थ कहा है। मैं यह कहता हूं।

॥ प्रथम अध्ययन समाप्त ॥

किसी विषय में स्खलित होने पर शिष्यों को आचार्य मीठे और चतुर वचनों से इसी प्रकार धीरज देते हैं जैसे महावीर ने मेघ मुनि को दी ॥

॥ इति श्री ज्ञाताधर्मकथासूत्र के पहिले श्रुतस्कन्ध का पहिला अध्ययन ॥

